वर्ष-26 वैशाख-ज्येष्ठ जून 2021 अंक-6 प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई नं.0048570/29/30/1982

पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन. नं. एम.डी. 08/2021-2023

मूल्य 10/-रुपये

मासिक प्रकाशन

# आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

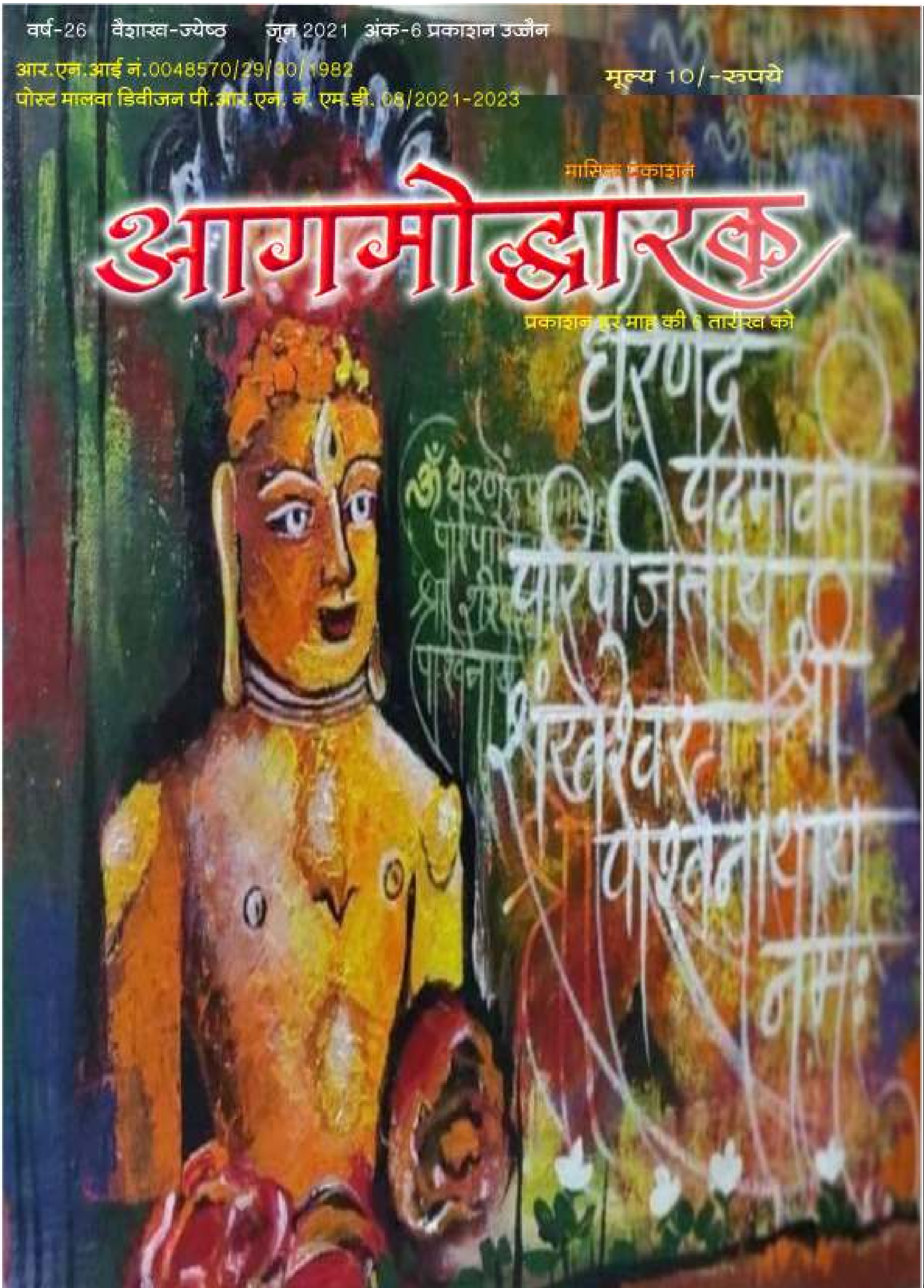

# आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

**श्री अभ्युदय फाउण्डेशन**

**उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक**



**प्रधान सम्पादक**

**डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन**

**सम्पादकीय कार्यालय**

**डॉ.सुभाष जैन**

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

**इन्दौर कार्यालय**

**प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"**

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

***मोबा. नं.-98260-10089***


**सदस्यता**

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

**लोभ से क्रोधः- आदमी के मन के भीतर जब किसी दुन्यवी वस्तु को पाने का लोभ होता है, तब उस लोभ में बाधक व्यक्तियों के प्रति उसके दिल में क्रोध की आग पैदा हुए बिना नहीं रहती है अर्थात् कई बार लोभ के कारण भी क्रोध पैदा होता है।**

**दिव्य आर्शीवाददाता**

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

**मार्गदर्शक एवं प्रेरक**

प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

**श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन**

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

**शाश्वत संदेश**

**तवणारायजुत्तेणं भित्तूणं कम्मकंचुयं।**
**मुणी विगयसंगामो, भवाओ परिमुच्चए॥**

तप रुपी बाण से सन्नद्ध मुनि उससे कर्म रुपी कवच को भेद कर भव रुपी संग्राम का-अन्त कर जन्म-मरण से मुक्त हो जाता है। **- उत्तरा. सूत्र, 9.22**

**पाथेय**

*हे दिव्य शक्ति, परम प्रकाश दाता, हमारी प्रार्थना सुन, हमसे दूर मत हो। सही ढंग से संघर्ष करने में हमारी सहायता करो। युद्ध के लिये हमें मजबूत बना हमें विजय प्राप्ति की क्षमता प्रदान कर हे मेरे मधुर स्वामी, आप जिनकी मैं पूजा करता हूं किन्तु जानने में अक्षम हूं, आप जिसे अपनी अयोग्यता के बावजूद मैं पाना चाहता हूं। और अनुनय विनय करता हुं इस चिन्ताग्रस्त पृथ्वी के नाम पर, इन संघर्ष शील कार्यकर्ताओं के नाम पर पीड़ित मानवता एवं प्रयत्नशील प्रकृति के नाम पर कि हे मधुर स्वामी, हे अद्भूत अज्ञेय, वरदानों के परम दाता, तुम जो अंधकार में से प्रकाश की धाराएं बहा देते हो और हमें दुर्बलताओं से निकालकर सबलता प्रदान करते हो, हमारे प्रयास को सहारा दो, हमारा पथ प्रदर्शन करो, हमें हमारी विजय यात्रा पर ले जाओ।*

**शुल्क सोपान**

| | |
|---|---|
| स्तम्भ | 11,511/- रुपये |
| आजीवन | 1000/- रुपये |
| पांच वर्षीय सदस्य | 301/- रुपये |
| एक वर्षीय सदस्य | 80/- रुपये |
| एक प्रति | 10/- रुपये |

***नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।***


वर्ष-26 वैशाख-ज्येष्ठ जून 2021 अंक-6

# विषय सूची


| | |
|---|---|
| 1- शाश्वत संदेश, पाथेय | 3 |
| 2- विषय सूची | 4 |
| 3- हौंसलों से लड़े जिन्दगी की जंग-(सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन | 5 |
| 4- आठ कर्मों की क्षयकारक मूर्तिपूजा- शांतिलाल सगरावत, अनमोल जिंदगी | 6 |
| 5- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्री अरुणविजयजी म.सा. | 7-8 |
| 6- मैं सोमदत्त-पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म. | 9-11 |
| 7- काल्डड्रिंक पीने से मृत्यु भी हो सकती है ?- सुरेश पिंगले | 12 |
| 8- शासन प्रभाविका ढंकगिरी तीर्थोद्धारिका साध्वीरत्ना प.पू.श्री चारुव्रताश्रीजी म.सा. का जीवन-परिचय, स्वयं से मिलने की कला-मौन | 13-14 |
| 9- स्वाध्याय साधुओं का भोजन है, आहार है- कहे कलापूर्ण सूरी से, अध्यात्म दुर्लभ है.... | 15-17 |
| 10-साधारण कर्म भी बन जाता है-योग | 18 |
| 11-महाराजा सवाई जयसिंह एवं उनकी प्रस्तर-वेधशालाएं-ठा.श्री प्रहलादसिंहजी | 19-21 |
| 12-भव रोगों की औषध है भावना | 22-24 |
| 13-अन्तर्जगत् की यात्रा-गणेशमुनि ''शास्त्री'' | 25-26 |
| 14-गौ माता पर मंडराता संकट...! - मेनका गांधी, एक लौटा पानी | 27-28 |
| 15-महाविदेह क्षेत्र और बीस विहरमान तीर्थंकर | 29-30 |
| 16-आगमोद्धारक भविष्य फल-जून-2021- अनु दीपक जैन | 31 |
| 17-वर्गपहेली- 313 - जयंतीलाल जैन | 32 |
| 18-ज्ञान गंगोत्री- 313 - आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. | 33 |
| 19-शासन-समाचार | 34-41 |
| 20-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है, कर्मों का फल | 42 |

संपादकीय

# हौंसलों से लड़े जिन्दगी की जंग

**वर्तमानकाल** जिदंगी के लिये इतना चुनौतिपूर्ण होगा यह किसी ने नहीं जाना था। विगत एक वर्ष से अधिक के कालखण्ड ने जिन्दगी जीने के मायने ही बदलकर रख दिये है। क्या दौर आया है कि तीर्थाटन, देवदर्शन, वंदन महोत्सव पर्व, त्यौहार सब ही दूर से हो गये है, कोरोना का महाकाल सब कुछ निगल गया बचा ही क्या है ? लाखों लोग कलकलवित हो गये है, अकाल की भेंट चढ़ गये है जिनकी कल्पना नहीं थी वे भी इस संसार से कूच कर गये। इस विपरितकाल ने हम सब को यह अहसास करा दिया है कि धन, दौलत, नाते रिश्ते, जान-पहचान, इंसानियत स्वार्थ के आगे और काल के सामने हम बहुत ही बौने है इनकी कोई वेल्यु नहीं है ? क्या वास्तव में ऐसा है ? मैं नहीं समझता हूं कि ऐसा है। जीवन के जो शाश्वत मूल्य वह झूठे नहीं हो सकते है।

हाँ ! यह जरुर है कि इस कोरोनाकाल में मानव जीवन बहुत ही कठिन दौर से गुजर रहा है। जिस पर बीती वही जानता है, ऐसा भी नहीं हमारे आसपास घटित दुःखदायी घटनाओं ने सबको बहुत प्रभावित किया है। लोगों के साथ जो नहीं होना था वह बीता है, असुरी शक्तियों के दुःप्रभाव से लोगों में हताशा, निराशा और नकारात्मक सोच आई है पर जिन्दगी रुकी नहीं है। अपने कई निकटवर्तीय लोगों के बिछड़ने का अपार दुःख झेलना पड़ा है, हमारे कई गुरु भगवंत, साधु-साध्वी का जीवन भी संकट में पड़ गया, कई का कालधर्म हुआ और कई इस महामारी की चपेट में आ गये। बड़ा ही विकट समय है। इस महासंकट के समय में ऐसे कई लोगों के काले चेहरे भी सामने आये है जिन्होंने अपने निज हित स्वार्थ के लिये, धन सम्पत्ति के लिये मानव की जिंदगी से खिलवाड़ किया है, अस्पतालों का भी राक्षसी चेहरा सामने आया है, दवाई, आक्सीजन, देखभाल और लापरवाही के कारण अनेक लोगों का अपनी जिन्दगी गंवाना पड़ी है। मानव मतलबी स्वार्थी तो है पर इस संकट के समय में उसकी असली औकात भी देखाने में आ गई है। राक्षसी प्रवृत्तियोंवाले चेहरे कई रुप में देखाने में आये है पर मानवता की मिसाल बननेवाले, इंसानियत को हौंसले देनेवाले की संख्या इन लोगों से अधिक है, अपनी जिन्दगी को खतरे में डालकर अन्यों के लिये जीवन दांव पर लगानेवालों ने इंसानियत का उज्ञवल चेहरा भी दिखलाया है। यह बड़ा ही संकटपूर्ण समय है इसमें कोई शक नहीं, हौंसला रखते हुए काल को घोंसले में रहकर ही व्यतीत करें यह समय भी नहीं रहेगा हम जानते है कि असुरी शक्तियां कितना ही उत्पात मचा ले, कितने ही तांडव कर ले वे जीत नहीं सकती है उन्हें मानव के हौंसले के आगे नतमस्तक होना ही पड़ेगा इसलिये जीवन से हार नहीं मानना है जीवन में संघर्ष करनेवालों की हमेशा जीत होती है। जीवन में लाख अंधेरे हो लेकिन रोशनी की आस रखनेवालों के जीवन में सुबह का सूरज निश्चित उदय होता है। जिन्दगी को घोर संकट के समय में भी हिम्मत से ही जीया जाता है। हारना कायरता की निशानी है,जीवटता जिंदगी की कहानी है। विपरित परिस्थिति में भी सहनशीलता जीवन जीने की निशानी है। मैं समझता हूं कि- यह कोरोना का काल भी एक नया संदेश देने के लिये हमारे बीच आया है। परिवार के साथ रहकर अपनों की निकटता का अहसाय कीजिये। अपनों के साथ रहकर प्रेम करुणा को विस्तार दीजिये। परिवार जीवन का आधार है साथ में रहने से सब शिकवे शिकायत दूर हो जायेंगे और मानसिक शांति का अनुभव होगा। आप आम जीवन में कुछ भी हो व्यापारी, अधिकारी, डॉक्टर, इंजीनियर जो भी हो पर परिवार के साथ रहने से आप इस सच्चाई से अवगत हो जायेंगे कि दुनिया से परिवार से बढ़कर कुछ भी नहीं है। परमात्मा श्री प्रभुवीर के जीओ और जीने दो के सिद्धांत की वास्तविकता से आप भलीभांति परिचित हो जायेंगे।

इस संकटकाल में जैन धर्म से सिखने जैसा बहुत कुछ है, शासन और सरकार अगर जैन सिद्धांतों के आधार पर प्रबंधन करती तो यह महामारी इतनी विकट नहीं होती। कोरोना के प्रथम दौर से सबक लेकर योजना बनाती तो स्थिति को अच्छी तरह से संभाला जा सकता था, याद करें दानवीर जगडूशाह जैन रत्न को जब उन्हें ज्ञात हुआ था कि- आनेवाले साल में तीन वर्ष का भंयकर दुष्काल आनेवाला है लोगों को खाना पीना नहीं मिलेगा और दुष्काल से हजारों लाखों लोग का जीवन संकट में पड़ जायेगा। सेठ जगडूशाह पर देवगुरु की कृपा थी उन्होंने आनेवाले संकट की भयानकता अनुभव उन्होंने पहले ही कर लिया उस काल में उन्होंने अपने जनपद में ही नहीं बल्कि संपूर्ण देश के बड़े-बड़े नगर गांव, कस्बों में अनाज भंडारण की योजना बनाकर संपूर्ण देश में विशाल भंडारगृह बनाये, उन्हें अनाज से भर दिया। दुःश्काल आने के एक वर्ष पहले ही उन्होंने आनेवाले संकट को पहचान कर जबर्जस्ती प्रबंधन कर दिया। उन्होंने इतना माकुल व्यवस्था की थी कि तीन साल के दुःकाल में भी लोगों को सुकाल का अनुभव हुआ। भण्डारण लेकर वितरण तक कार्य सुचारु रुप से कर जगडूशाह ने कमाल कर दिया और किसी को भी मरने नहीं दिया, यही कारण है कि आज भी हम जगडूशाह का पुण्य स्मरण करते है। यह संकट भी नहीं रहेगा परमात्मा प्रभुवीर के करुणा प्रेम के संदेश को स्मरण करते हुए नियमित 15-20 मिनिट ध्यान लगाये, मन को शांत बनाये, अच्छी पुस्तकें पढ़े, अच्छे चरित्र ग्रंथ पढ़े, देखिये जीवन कितना शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। स्वयं के चरित्र को श्री महावीर के सूत्रों से सजा लो तो इस महामारी के प्रभावों से जिन्दगी विचलित नहीं होगी। जगत के स्वामी के शरणागत बन एक घंटा रोज प्रभु का विभिन्न तरीकों से स्मरण कर अपने मन को मजबूत बनाये और इस काल के प्रभाव से अपने को दूर रखें। यही अभ्यथर्ना !

**✻ डॉ. सुभाष जैन**

# आठ कर्मो की क्षयकारक मूर्तिपूजा

* शांतिलाल सगरावत, मंदसौर

**मूर्तिपूजा** और चरित्रपालन एक ही फल के साधक है। प्रभुवंदन, मूर्तिपूजा और चरित्रपालन मोक्ष प्राप्ति का फलदायक है। तीर्थकरों की मूर्तियों की पूजा का फल राजप्रश्नी सूत्र पृष्ठ 128 पर **''हियाए, सुहाए, खमाए, निस्सेसाए अणुगमिताए''** ये मूल पाठ है याने हितकारी, सुखकारी, क्षमाकारी, निस्तारकारी और अनुगामिक होता है।

मूर्ति पूजा चरित्र धर्म का आयतन है। मूर्ति पूजा करने को, मंदिर प्रवेश करते ही ग्रह संबंधी हिंसा के आरंभ घटकर परिणामों में दया रुप प्रवर्तन कर ईर्यापथ सोंधकर चलना होता है। पूजा करते सभी अहिंसा धर्म का प्रवर्तन होकर आरम्भ-विषय-कषाय का त्याग करने की चारित्रिक महिमा प्राप्त होती है। मूर्ति पूजा से आठ कर्मो का क्षय होता है।

पाषाण की मूर्ति में प्रभु गुण आरोपण कर एकाग्रचित्त होकर उपासना और प्रार्थना की जाती है। ''णमोत्थुणं'' का उच्चारण कर परमात्मा के गुणों का बखाण किया जाता है। प्रतिष्ठापूर्वक प्रतिष्ठित मूर्ति आध्यात्मिक चेतनायुक्त होती है उसमें शुद्ध सनातन, सर्वज्ञ ईश्वर परमात्मा तीर्थकर की पूजा उपासना होती है। साक्षात मंदिर मूर्ति चिरस्थायी है। भक्तिभाव पूर्वक भगवान की शांत मुद्रा वाली मूर्ति की पूजा-अर्चना आत्मकल्याणकारी होती है।

जिनप्रतिमा को खास सूत्रों में ''जिन सारखी'' कहा है जीवाभिगम सूत्र में ''ध्रुवदाउण जिनवराणं'' अर्थात् धूप दिया जिनराज को लिखा है। समवसरण में तीर्थकरों को तीन दिशाओं में विराजित करते है और चतुर्विध संघ उनको जिनवर सदृश्य मानकर पूजते है, वंदन करते हैं और भक्ति करते हैं।

सिद्धों की मूर्ति होने से सिद्धों के सारे अतिशय इनमें विद्यमान होते है। वीतराग की वीतरागिता के कारण उनमें राग-द्वेष या प्रतिबंध या प्रतिश्वेध का अंश मात्र भी नहीं होता। वे समभावी होते है। न विरोध, न सोहार्द्र। आत्मा का विकास होने से मूर्तियाँ सूत्र वंदनीय और पूजनीय होती है।

मूर्ति पूजा तप, संयम युक्त होने से कर्मो का क्षय करनेवाली होती है।

1- चैत्यवंदनादि से भगवान की गुण-स्तुति करने से ज्ञानावरणीय कर्मो का क्षय होता है।

2- भगवान के दर्शन करने से दर्शनावरणीय कर्मो का क्षय होता है।

3- प्राण, भूत, जीव, सत्व की करुणा से असाता वेदनीय कर्म क्षय होते हैं।

4- अरिहंतों और सिद्धों के गुणों का स्मरण कर उनका बखान करने से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति और मोहनीय कर्म क्षय होते हैं।

5-प्रभु पूजा से शुभाध्यवसाय होने से उसी भव में मोक्ष मिलता है।

6- मूर्ति पूजा से अरिहंत नाम स्मरण से अशुभ नाम कर्म का नाश होता है। नीच कर्म गोत्र क्षय होते हैं।

7- मूर्ति पूजा से शक्ति का सदुपयोग और द्रव्यादि अर्पण करने से अंतराय कर्म दूर होते हैं। आठ कर्मो की निर्जरा होती है।

# अनमोल जिंदगी

चाहे जितने भी बंगले बनाओ.... लेकिन आपको तो एक ही कमरे में रहना है। चाहे जितने भी कपड़े-वस्त्र इकट्ठे करो। आपको तो एक जोड़ी ही पननना है। चाहे कितना भी धान्य इकट्ठा करो आपको तो मुट्ठी अनाज ही खाना है। चाहे कितनी भी सामग्री हो लेकिन आपको काम में आनेवाली कितनी ?

जरा शांति से बैठकर इन सभी बातों पर विचार करो। आप निरर्थक जंजाल के पीछे कितने दौड़ रहे हैं ? आज तक आपने इतनी सभी प्रवृत्ति की, उनमें से आपको हित को बढ़ानेवाली प्रवृत्ति कितनी ? इसका कभी निरीक्षण किया ?

व्यर्थ प्रवृत्तिओं के पीछे अनमोल जिंदगी क्यों उड़ा दी जाय ?

यह जिंदगी ऐसी प्रवृत्तिओं के लिये नहीं, इससे भी विशेष उत्कर्ष के लिए मिली है.... वह कभी तो याद करो !

परम आनंद/परम विकास के शिखर पर यह मानव जिंदगी ही पहुंचाती है।

जहां से हम परम शिखर पर पहुंच सकते हैं....

जहां से हम प्रकाश की सृष्टि पर पहुंच सकते हैं....

जहां हम से अमृत तत्व को पाकर अमर बन सकते हैं....

ऐसी अमूल्य जिंदगी को पाकर भी हम अंधकार में भटकते रहेंगे ?

खाड्डे में गिरते रहेंगे ? डबरे के कीड़े बनेंगे ?

विराट बन सकते हैं....

# पाप की सजा भारी...! *प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

**गतांक से आगे...!**

**अनेक जन्मों में समान प्रवृत्तियांः-**

आत्मा ने इस संसार में अनन्त जन्म किए हैं। अनन्त जन्म-मरण के इस संसार में जब भी जो भी प्रवृत्तियां की है वे सब एक सरीखी समान है। उदाहरणार्थ-आहार, निद्रा, भय, मैथुनसेवन, विषय वासना की कामक्रीड़ा, हंसना, रोना, खाना-पीना, अच्छे बूरे के प्रति राग द्वेष, क्लेश-कषाय, हर्ष शोक, भोग-उपभोग आदि की सैकड़ें प्रवृत्तियां प्रत्येक जीव ने अपनी अनन्त जन्म परंपरा में की है। आज कोई भी जीव एक भी नई प्रवृत्ति नहीं कर रहा है। अनेक जन्मों के कर्मजन्य संस्कार जीव पर पड़े हुए हैं। उन्हीं के आधीन-पराधीन होकर जीव प्रवृत्ति कर रहा है। गत जन्म के संस्कारवश आज इस जन्म में और इस जन्म के संस्कार वश पुनः अगले जन्म में जीव प्रवृत्ति करेगा। कर्मजन्य प्रवृत्ति का यह चक्र जन्म-जन्मांतरों में चलता हुआ अनन्त जन्म तक चलता रहता है। प्रबल पुरुषार्थ करके यदि जीव प्रवृत्ति में परिवर्तन करे तो कर सकता है और यदि न करें तो जो कर्मवश चलती है वे चलती ही रहेगी। मनुष्य-पशु-पक्षी आदि सभी में चलती रहेगी। अतः सोचिए कि आज जीव नया क्या कर रहा है। जैसे माता-पिता की तरफ से आनुवंशिक रुप में संस्कार मिलते हैं वैसे ही पूर्वजन्म के संस्कार भी जन्मान्तरीय अनुवंशिकता के रुप में मिलते है। अब जीव को यह समझ कर प्रबल पुरुषार्थ करना चाहिये। यह दृढ़ संकल्प करके कर्मजन्य प्रवृत्ति करनी चाहिये। आत्मगुणजन्य या आत्मगुणानुरुप प्रवृत्ति करने से ही जीव कर्म जन्य प्रवृत्ति के चक्र से छूट सकेगा। फिर कर्मबंध ही नहीं होगा। अतः कर्मरहित अवस्था जीव प्राप्त कर सकेगा।

**प्रवृत्ति में सहायक-तीन करणः-**

अकेली आत्मा संसार में कुछ भी नहीं कर सकती। अतः आत्मा को संसार में रहने के लिये शरीर चाहिये। कायिक प्रवृत्ति जीव शरीर से करता है। वाग् व्यवहार के लिये वचन योग चाहिये। उसी तरह विचार करने के लिए मन द्रव्य चाहिये। मन-वचन और काया ये तीन ही प्रमुख साधन आत्मा को संसार में मिले है। सर्व प्रवृत्ति में ये तीनों प्रबल कारण है। अतः ये तीनों करणरुप कह लाते हैं। मन-वचन-काया ये तीनों न तो खराब है और न ही अच्छे है। ये तो जड़ है। पुद्गल रुप है। पुद्गल में अच्छा क्या और बुरा क्या ? कोई भेद नहीं है। इनका उपयोग आत्मा कैसा करती है उसके ऊपर आधार है। तलवार, पिस्तोल अच्छी है कि खराब है ? यह तो उसके उपयोग पर आधारित है। रक्षा के लिए भी उपयोग में आती है, और स्वहत्या के लिये भी उपयोग में आती है। दोनों ही कार्य है परन्तु दोनों ही कार्य में ये निर्दोष है। दोष रहित है। क्योंकि जड़का आधार तो चेतन पर रहता है। चेतन आत्मा यदि जड़ का सही उपयोग करती है तो ठीक, कि वे अच्छे हैं और चेतन-आत्मा ने ही यदि उनका दुरुपयोग किया तो वे खराब ठहरे।

इसी तरह मन-वचन-काया का उपयोग भी जीव कैसा करता है इसके ऊपर आधार है ये तीनों कर्मबंधाने में भी कारण है और ये ही तीनों कर्म क्षय कराने में भी कारण है। कारण होने से करण कहा गया है। इन तीनों करणों का अपना कार्य है। मन से सोचना, विचारना। वचन से बोलना, वाग्-व्यवहार करना और काया-शरीर से सर्व प्रवृत्ति करना।

**मनोयोग की पाप प्रवृत्तिः-**

शास्त्रकारों ने मन को अच्छा भी कहा है और बुरा भी कहा है। यद्यपि मन न तो अच्छा है और न ही बुरा है। लेकिन प्रवृत्ति अच्छी खराब हो तो मन भी अच्छा खराब दोनों नामों से पहचाना जाता है। ज्ञानी भगवंतों ने फरमाया है कि-**मनः एव मनुष्याणां कारणं बंध-मोक्षयोः**। मन ही मनुष्य को कर्म का बंध कराने का भी कारण है और यही मन कर्म का क्षय कराने में भी कारण है। यही मन मोक्ष में ले जाने में भी कारण है और यही मन संसार भव-परंपरा बढ़ाने में भी कारण है। अब क्या करना ? कर्म का क्षय करना की बंध करना ? यह तो जीव के ऊपर आधार है। जीव जो चाहे वह कर सकता है। अतः न तो मन खराब है और न ही मन अच्छा है। वह जड़ पौद्गलिक है। आत्मा के अध्यवसाय पर आधारित है। जीव स्वयं ही विचार करने योग्य मन पर्याप्ति नाम कर्म के कारण मनोवर्गणा के पुद्गल परमाणुओं को खिंचकर मन बनाता है और विचारार्थ उसका उपयोग करता है।

**शुभ-अशुभ ध्यान की धाराः-**

अब जीव मन के माध्यम से जो भी विचार करता है क्या सभी अच्छे ही विचार करता है ? नहीं ? अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के विचार करता है। बार-बार आते हुए विचारों का केन्द्रीकरण करना और जिस विषय के विचार आते हैं उसमें मन को एकाग्र करना ही ध्यान कहलाता है। अतः हेमचन्द्राचार्य महाराज ने योग शास्त्र में ध्यान के लिए ''विचय'' शब्द का प्रयोग भी किया है। विचय यह विचार का ही पर्यायवाची नाम

है। अतः विचय ध्यान अर्थ में प्रयुक्त है। मन के अच्छे-खराब विचारों के आधार पर ध्यान के भी मुख्य दो विभाग अच्छे-खराब किये गये है। अच्छे विचारों का ध्यान शुभ और खराब विचारों का ध्यान अशुभ होता है।

**ध्यानः-**

**शुभ ध्यान-**धर्म ध्यान 4, शुक्ल ध्यान 4।

**अशुभ ध्यान-** आर्तध्यान 4, रौद्रध्रयान 4।

शुभ ध्यान और अशुभ ध्यान ये ध्यान के मुख्य दो विभाग हुए। शुभ ध्यान में धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान है। जिनेश्वर प्रभु की आज्ञा का विचार करना, तथा संस्थान संबंधी विचार करना यह धर्मध्यान है। इससे आगे बढ़कर शुक्ल ध्यान में जाते है तो विषय और भी छोटा-छोटा होता जाता है और शुक्ल ध्यान तो इतनी ऊंची श्रेष्ठ कक्षा का है कि उसके चार प्रकारों में दूसरे प्रकार से आगे बढ़ने पर केवल ज्ञान प्रगट हो जाता है। भगवान श्रीमहावीर प्रभु और जिनको-जिनको केवल ज्ञान प्राप्त हुआ है उन सबको शुक्ल ध्यान में ही हुआ है। आज तो शुक्लध्यान नाम शेष रह गया है।

आजकल धर्मध्यान का प्रमाण भी हद से ऊपर घट गया है और अशुभ ध्यान का प्रमाण काफी बढ़ गया है। जो आत्मा के लिये उपयोगी नहीं है, कर्मबंधकारक है वह अशुभ ध्यान है। जबकि शुभध्यान कर्म क्षय कारक, निर्जरा सहायक है। अतः वह शुभ है। अशुभ ध्यान की प्रवृत्ति आज काफी ज्यादा बढ़गई है और जैसा मनुष्य सोचता है तद्नुसार पुनः क्रिया-प्रवृत्ति भी करता है। अतः जहां सोचना ही अशुभ खराब हो गया है वहां फिर प्रवृत्ति अच्छी हो यह कल्पना भी कैसे करें ? इसलिए अशुभ आर्त-रौद्रध्यान की जो प्रवृत्ति जीव करता है वह अशुभ है, पाप प्रवृत्ति है। अठारह पापस्थानों में आप देखिए मनो योग के द्वारा कितने पाप कर्म होते हैं ?

**18 पाप स्थानों में मनो योग के पापः-** क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, रति-अरति, मिथ्यात्व।

यद्यपि देखा जाय तो अठारह ही पाप स्थान सभी का मूल उत्तम स्थान मन ही है ! हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन आदि सभी पाप पहले मन में उत्पन्न होते हैं, फिर वचन के व्यवहार में आते है, फिर काय योग शरीर से प्रवृत्ति होती है ! फिर भी 18 ही पाप स्थानों में कुछ पापों में मनोयोग की प्रवृत्ति की प्राधान्यता है, उपरोक्त 8 पापों में मनोयोग की प्राधान्यता है। मृषावाद, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, परिपरिवाद, माया, मृषावाद आदि वचनयोग की प्राधान्यता वाले पाप है ! और प्राणातिपात, चोरी, मैथुन, परिग्रह आदि अनेक पापों में काय योग की प्राधान्यता है। अतः इस तरह पाप स्थानों मन के पाप वचन के पाप और काय योग के पाप का विश्लेषण किया गया है।

**रति-अरति यह मनोयोग का पाप हैः-**

जिस पापस्थान का विवेचन किया जा रहा है वह रति-अरति नामक 15 वां पाप स्थान है। रति और अरति इनका सामान्य शब्दार्थ इस प्रकार है-रति=अर्थात् प्रिय, आनन्द होना। अनुकुल पदार्थो में सुख मानना और अरति यह रति से ठीक उल्टा-विपरीत है ! अप्रिय-दुःख अर्थ में है। प्रतिकूल व्यक्ति या वस्तु में अप्रीति, ग्लानि या दुःख उत्पन्न होना यह अरति का अर्थ है। अब रति-अरति के शब्दार्थ देखने से आपको यह अच्छी तरह ख्याल आ जाएगा कि ये दोनों मानसिक-वैचारिक पाप है। मन में विचारधारा में उत्पन्न होते हैं। फिर-मन वचन को आदेश देता है कि मेरा इतना काम तू पूरा कर। वैसे ही काया को भी आदेश देता है और काया के जरिए भी किसी का अपमान-तिरस्कार आदि कराके भी अपना काम पूरा कराता है। आखिर मन भी बिचारा अकेला क्या करे ? विचार करने से ज्यादा उसकी दूसरी क्षमता है ही नहीं ! अतः स्वयं विचार करके फिर वचन योग और काय योग के पास अपनी धारणानुसार काम करा लेता है। लेकिन रति-अरति का उद्गम तो मन की विचारधाराओं में ही होता है। इसलिए पू.वाचकवर्यजी यशोविजयजी महाराज ने रति-अरति की 15 वें पापस्थानक की सज्झाय में फरमाया है कि-

**मन कल्पित रति-अरति छे जी, नहीं सत्य पर्याय।**
**नहीं तो बेची वस्तुमांजी, किम ते सवि मीट जाय॥**

रति-अरति ये तो सिर्फ मन के द्वारा की हुई कल्पना मात्र है। अतः इन्हें मनकल्पित कहा गया है। वास्तव में किसी पदार्थ में न तो रति रहती है और न ही अरति रहती है ! अतः ये वास्तविक द्रव्य, गुण या पर्यायरुप नहीं है ! यदि ऐसा न हो तो सोचिए जिस वस्तु में पहले उत्पन्न हुई रति-सुख की लालसा उसी वस्तु को बेच देने से कैसे मिट जाती है ? नष्ट हो जाती है ? यदि रति या अरति भाव मनोगत न होते और सिर्फ वस्तुगत ही होते तो वस्तु में ही हमेशा रहते फिर वस्तु किसी को देने का बेचने का व्यवहार ही नहीं होता। न करते ! लेकिन वस्तु पर कितना भी मोह हो, कितना भी राग होता है परन्तु जरुर पड़ने पर जब वस्तु देते है तब वस्तु पर का रति भाव नष्ट हो जाता है। इसलिए कहा है कि रति अरति ये मन कल्पित-मानसिक कल्पना मात्र है। विचारों की नीपज है ! यह हमारी मानी हुई कल्पना है। **(आगे और भी है...!)**

*❊ मन को वश किया उसने जगत को वश किया।*

# मैं सोमदत्त

**✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.**

***पाटलीपुत्र*** के बुजुर्ग सेठ सोमदत्त ने अपने एक मित्र को अपना एक विशिष्ट अनुभव कहा-

मेरे पास एक दिन एक युवा आया। उसकी आँखों में आँसू थे। चेहरे पर निराशा थी। मेरे पास आते ही वह चौधार आँसू में रो पड़ा। मैं आश्चर्य में पड़ गया। ऐसे गर्भश्रीमंत युवा को रोने का क्या कारण होगा ? मैं उसे बचपन से ही पहचानता था। उसके पिता जिनदत्त सेठ तो मेरे स्नेहाल मित्र ! सुख-दुःख की बातें करते हमारे कितने ही घंटों निकाल देते। उनके साथ बातें करते मुझे ऐसा ही लगता- जैसे समझदारी के समुद्र के पास बैठे हो ! सचमुच इसके पिता समझदारी के भण्डार थे तो यह पुत्र भोलेपन का भण्डार था। मैं अनेक बार जिनदत्त को कहता- पिता जैसा पुत्र और बरगद जैसा टेटा (बरगद का फल), (बाप तेवा बेटा ने वड तेवा टेटा) ऐसे दुनिया कहती है, परन्तु तुम्हारे पुत्र में तुम्हारी समझदारी का कोई अंश भी आया हो ऐसा नहीं लगता। मेरी बात सुनकर जिनदत्त सेठ मौन हो जाते। उनके मुख पर गहरी उदासीनता छा जाती। कभी-कभी वे मुझे कहते- सोमदत्त ! तू जानता है कि मेरा पुत्र भोला है, व्यवहार कुशल नहीं है। अभी तो ठीक है परन्तु मेरी अनुपस्थिति में बेचारे का क्या होगा ? यह दुनिया तो ऐसी है कि आप में समझदारी न हो तो सभी तुम्हें खा जाते हैं ! भोलेपन का सभी लाभ उठाते हैं। तो मैं कल शायद इस दुनिया में न रहुं तो तुम मेरे पुत्र को संभालना। इसे व्यवहार कुशल बनाना। मेरे शरीर का अब बहुत कम भरोसा है। सच में उनकी भविष्यवाणी सच्च निकली थी। कुछ समय पूर्व ही जिनदत्त सेठ गुजर गये।

मैंने उसे प्रेम से पूछा- क्यों बेटा ! क्या हुआ ? इतना क्यों रो रहा है ? तेरे पिता तो तेरे लिये पुष्कल संपत्ति छोड़ गये हैं। तो फिर दुःख कौन-सी बात का है ?

उसने कहा- चाचा ! आपकी बात सच है, परन्तु मैं तो अभी एकदम कंगाल हो गया हूं। बाजार में जाते भी मुझे शर्म आती है। कल मुझे जो सेठ.... सेठ.... कहकर बुलाते थे वे ही आज मुझे देखते ही मुंह मोड़ लेते हैं। सभी को पता चल गया है कि इसकी जेब खाली है ! खाली जेबवाले का मान क्या ?

मृत्यु के पहले मेरे पिताजी ने मुझे 10 सिखावन लिखाकर दी थी, परन्तु उसके अनुसार चलते-चलते तो मैं चौपट हो गया।

मैं चमक गया। पिता की शिक्षा का अनुसरण करते कोई पुत्र चौपट हो जाये ? हो नहीं सकता। मैंने पूछा- मुझे कहेगा ? कौन-सी सिखावन थी।

उसने कहा- सुनिये।

1- घर के चारों तरफ दांत की बाड़ बनाना।

2- किसी को धन देकर लेने जाना नहीं।

3- सिर पर थोड़ा भी बोझ उठाना नहीं।

4- दिन को सफल करना।

5- स्त्री को स्तम्भ से बांधकर मारना।

6- सदा मिठाई खाना।

7- सुखपूर्वक सो जाना।

8- गाँव-गाँव में घर करना।

9-खराब दशा आए तो गंगा जमुना के बीच खोदना।

10-प्रत्येक क्षेत्र में धन खर्च करना।

और साथ-साथ यह भी कहा था- इसमें कुछ समझ न आये तो मेरे मित्र सोमदत्त को पूछना।

हाथीदांत लाकर मैंने वाड बनाई, परन्तु वह लूटकर ले गये। उधार धन देकर वापस लेने ही न गया, तो पैसे सब डूब गये। सिर पर जरा भी भार नहीं उठाया और मजदूरों को मुंह मांगे पैसे दिये। पत्नी को स्तम्भ से बांधकर मारी तो वह पियर भाग गई। रोज मिठाई खाने से तो पेट बिगड़ गया। गांवों में जगह-जगह मकान बनाने लगा, लेकिन सभी अधूरे रहे और उन सभी के मालिक वहां के लोग ही बन गये। गंगा-जमुना के बीच कितनी खुदाई का काम किया किन्तु बरबादी के सिवाय कुछ नहीं मिला। खेत में जाकर रुपये बोने लगा, लेकिन आज तक रुपये का एक भी पेड़ लगा नहीं है। क्या करुं ? पिता की सिखावन मानने गया तो मैं हैरान-परेशान हो गया।

भोलेनाथ की बात सुनकर मैं मनोमन हंस पड़ा। मैंने कहा-इन सभी का जवाब मैं बाद में दूंगा।

मैंने उसे दूसरी उलटी-सीधी बातों में डाला। ऐसे बहुत समय निकलने से उसे जोरदार भूख लगी तब खाने के लिये उबाले चोले दिये। जोरदार भूख लगी होने से उसे वह भी घेबर जैसे मीठे लगे।

शाम के समय उसे मैंने हर रोज का हिसाब-लेखा इत्यादि का कार्य सौंपा। तीन घंटे तक काम करते-करते इतना थक

गया कि वह बैठे-बैठे ही सोने लगा। मैंने कहा- जा.... अब सामने के पलंग पर नवकार का स्मरण करके सो जा। वह तुरन्त ही गहरी नींद में सो गया।

दूसरे दिन मैंने उसे बुलाकर कहा- तेरे पिताजी बहुत ही व्यवहार कुशल चतुर पुरुष थे। मेरे उनके साथ वर्षों का संबंध था। उनके जैसे आदमी पायमाली करनेवाली सिखावन दूसरों को भी नहीं देते तो सगे पुत्र को कैसे दे सकते हैं ? लेकिन वत्स ! तूने पिता के मात्र शब्द पकड़े हैं भावार्थ नहीं पकड़ा। सत्य शब्दों में नहीं होता, भावार्थ में होता है, यह बात तुझे बराबर याद रखना चाहिये। व्यवहार में भी कुछ वाक्यों में हम शब्द नहीं देखते, भावार्थ ही पकड़ते हैं। जैसे कि (1) ''रास्ता कहां जाता है ?'' सचमुच तो रास्ता कभी भी कहीं नहीं जाता हैं। उस पर चलते वाहन लोग इत्यादि जाते हैं, रास्ता तो स्थिर है, फिर भी हम बोलते है- ''यह रास्ता कहां जायेगा ?'' (2) ''घड़ा बह रहा है'' सचमुच घड़ा थोड़े ही बहता है ? उसमें रहा पानी बहता हैं। ऐसे तो कई उदाहरण दे सकते हैं।

ऐसे साधारण वाक्यों में भी शब्दार्थ नहीं चलता तो तेरे पिताजी की सिखावन में कैसे चल सकता ? तेरे पिता तो बहुत ही समझदार और गहरी कोठा सूझवाले थे।

सुन। अब मैं तुझे उन सिखावन का रहस्य बताता हूं।

1- घर के आसपास दांतों की वाड़ बनानी, इसका अर्थ यह हुआ कि हमारे आसपास रहनेवाले सभी लोगों के साथ मधुर और हितकारी वचन बोलने चाहिये जिससे हमारे मुंह में रहे दांत ही हमारे आसपास मजबूत वाड़ बन जाये।

हमारा पहला मित्र पड़ोसी है, जरुरत होने पर वही काम आता है परन्तु मानव स्वभाव की यह कमजोरी है कि वह उसे ही पहला दुश्मन बनाता है। दांतों की वाड़तो नहीं बनाता परन्तु बनी हुई हो तो भी उसे तोड़ देता है। एक बात कभी मत भूलना कि दांतों की वाड़ बनती भी है और टूटती भी है।

वचन में अमृत भी है और जहर भी है। वचन में सूई भी है और कैंची भी है, संग्राम भी है और संधि भी है। जोड़ना और तोड़ना दोनों काम उसे आते हैं।

आँख, कान, नाक के छिद्र दो-दो होने पर भी उन्हें काम एक ही मिला है। जबकि जीभ एक ही होने पर भी उसके काम दो है- बोलना और खाना। ध्यान रखो तो दोनों से सुधरता हैं और ध्यान न रखो तो दोनों से काम बिगड़ता है। दुनिया में अस्पताल और अदालत जीभ की पैदाईश है। खाने में ध्यान न रखो तो जीभ मनुष्य मनुष्य को अस्पताल में धकेलती है और बोलने में ध्यान न रखो तो जीभ उसे (झगड़े के कारण केस होने से) अदालत में धकेलती हैं।

**''जिह्वा में अमृत वसे, विष भी उसके पास,**
**एके बोल्या कोडि गुण, एके कोडि विनाश।''**

2- ''दूसरों को धन देकर वापस लेने नहीं जाना।'' इसका रहस्य यह है कि हम लेनेवाले से डेढ़ी या दुगुनी किम्मत की वस्तु रखकर फिर धन देना। इससे वस्तु लेनेवाला पहला स्वयं ही हमारे पास आये। हमें जाना नहीं पड़े। समझा ?

3- ''सिर पर थोड़ा भी बोझ उठाना नहीं।'' पोटले सिर पर रखना वह भार नहीं है, सिर पर कर्ज होना वही खारा भार है। समझदार लोगों ने कहा है कि- ऋण का भार कभी मत रखो। हो तो जल्दी पूरा कर दो। क्योंकि बरगद के बीज की तरह थोड़ा भी ऋण बढ़ता-बढ़ता बहुत ही बड़ा हो जाता है।

इस संदर्भ में कुछ नीति की सूक्तियां जानने जैसी है।

''थोड़ा ऋण, थोड़ा व्रण (घाव), थोड़ी आग या थोड़ी भी कषाय की वृत्ति, थोड़ा भी विश्वास योग्य नहीं है। क्योंकि उन्हें थोड़े में से बड़ा स्वरुप होते जरा भी देर नहीं लगती।

''पाल सके वैसा वचन बोलना चाहिये।
आधे रास्ते पर छोड़देना पड़े वैसा भार उठाना नहीं।
ऋण उतारने में थोड़ा भी विलंब करना नहीं।''

धर्म के आरंभ में, ऋण उतारने में, धन प्राप्त करने में, शत्रु के घात में, आग बुझाने में और रोग दबाने में क्षणमात्र का भी विलंब करना नहीं।

''तेल की मालीश, कर्ज का अदा करना और कन्या की मृत्यु-ये तीन शुरुआत में दुःखदायी लगने पर भी परिणाम से वैसे नहीं होते।''

इस भव में यदि हम किसी का ऋण अदा नहीं करेंगे तो परभव में नौकर बनकर अथवा गाय, भैंस या भैसा बनकर ऋण अदा करना पड़ेगा।

हमारा कर्जदार मनुष्य यदि भरपाई करने में असमर्थ हो तो उसे स्पष्ट कह देना चाहिये- ''सुविधा हो सके तो मुझे मेरी रकम दे देना। नहीं तो मेरी तरफ से धर्मकार्य में खर्च कर देना।''

ऐसे करने से कर्ज का संबंध लम्बे काल तक नहीं चलता। नहीं तो भवांतर में भी वैर-वृद्धि होती रहती है।

4- ''दिन को सफल करना।'' इसका अर्थ यह है कि कुछ धन अवश्य कमाना। धनार्जन से ही गृहस्थ का दिन सफल गिना जाता है। नीति शास्त्राकार कहते हैं कि-वणिक वेश्या, कवि, भाट, चोर, जुआरी और ब्राह्मण जिस दिन नया कमाते नहीं उस दिन को व्यर्थ मानते हैं।

5- ''स्त्री को स्तंभ से बांधकर मारना।'' यानि कि पत्नी को पुत्रादि के स्नेह के स्तंभ से बांधना और फिर आवश्यकता लगे तो मारना। पुत्र-पुत्री आदि के जन्म के बाद पत्नी को किसी समय मारने में आए तो भी कुछ हरज नहीं। पुत्रादि के प्रेम के कारण वह घर छोड़ नहीं सकती।

6- ''रोज मिष्ठान्न खाना।'' इसका अर्थ यह है कि कड़ाके की भूख लगे तब ही भोजन करना चाहिये। भूख के बिना घेबर भी मीठे नहीं लगते और भूख हो तब रोटी भी घेबर से मीठी लगती है, यह बात तू कभी मत भूलना। सच्चा स्वाद मिठाई में नहीं, बल्कि भूख में है। कल इसीलिए ही मैंने देरी से तुझे भोजन दिया था। कड़ाके की भूख लगी होने से उबाले चौले भी तुझे कैसे मीठे लग रहे थे ? यही खरी मिठाई हैं।

पहले का भोजन पचा नहीं हो और नया भोजन लिया जाये तो रोग होने की बहुत संभावनाएं है- ''मल और वायु दुर्गंधी होते है, कच्चा मल आता है, शरीर भारी लगता है, अन्न पर अरुचि होती है, खट्टी डकार आती है-ये सभी अजीर्ण के चिन्ह हैं। अजीर्ण हो वहां तक भोजन का त्याग करना चाहिये। भूख लगे तब ही समयसर लोलुपता रहित स्वस्थतापूर्वक भोजन करना चाहिये। नीतिशास्त्र में कहा है- हे जीभ ! तू खाने में और बोलने में परिमित बन। बहुत खाना और बहुत बोलना मनुष्य को मौत भी देता है।

7- ''सुखपूर्वक सो जाना।'' ऐसी कोई सिखावन देता होगा ? अप्रमाद की सिखावन होती है, सोने की कहीं सिखावन होती है ? परन्तु इसका रहस्य यह है कि काम करके लोथपोथ हो गये हो, गहरी नींद आती हो तभी सोना चाहिये। कल मैंने तुझे खटमलभरी खटिया में सुलाया था फिर भी कैसी नींद आ गई थी ? परिश्रम के बाद गाढ़ नींद आ जाती है।

**''भूख नहीं देखती ठंडे भात,**
**नींद नहीं देखती टूटी खाट।''** यह बात याद है न ?

8- ''गांव-गांव में घर बनाना।'' इसका अर्थ यह है कि आसपास के प्रत्येक गांव में घर जैसा एक मित्र अवश्य करना चाहिये जिससे जहां जाएं वहां तात्कालिक सभी सुविधाएं मिल जाएं, हमारा मित्र वर्ग, बढ़े, प्रत्येक कार्य में सरलता रहे।

9- ''खराब दशा आए तो गंगा-यमुना के बीच में खोदना।'' तू तो ऐसी सिखावन से गंगा-यमुना के पास पहुच गया और खोदने लग गया। कुछ तो विचार कर ! इतने विशाल प्रदेश में कहां खोदना ? और इसका अंत भी कब आये ? इसका खरा अर्थ यह है कि तेरे पास जो गंगा और यमुना नाम की गायें है उन गायों की दो चरनी (चरागाह) के बीच खोदना है। वहां तेरे पिताजी ने अपार संपति गाड़ी होगी ?

10- ''प्रत्येक क्षेत्र में धन खर्च करना।'' तू तो खेतों में जाकर रुपये बोने लगा और फिर रुपये का पेड़ लगे उसकी राह देखने लगा। पागल। कुछ तो समझ। रुपयों के कभी पेड़ लगते होंगे ?

''सात धर्मक्षेत्रों में धन वापरना।'' यह इसका खरा अर्थ है। धर्मक्षेत्रों में बोया-वापरा हुआ धन अनेक गुना पुण्य के रुप में हमें ही भवांतर में मिलता है। समझा ?

मैंने उपसंहार करते हुए कहा- तेरे पिता ने जान-बुझकर ऐसी रहस्यमयी शिक्षाएं लिखी हैं। जिससे तू कभी उसे भूल नहीं सके। सीधी-सादी बातों की तरफ मनुष्य ध्यान नहीं देता, उन्हें वह तुरन्त ही भूल जाता है परन्तु जिस बात को समझने में मनुष्य को तकलीफ पड़ती है, अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ता है, उस बात को वह कभी नहीं सकता। बेटा ! मुझे अब विश्वास है कि तू 10 में से एक भी शिक्षा जीवन पर्यन्त भूल नहीं पायेगा सच है न ?

''सच बात है काका ! अब कैसे भूल सकता हूं ? आपका उपकार मैं जिंदगीभर भूल नहीं पाऊंगा। रहस्यों को समझाने के लिए आपका खूब-खूब आभार।''

ऐसे कहकर मेरे चरणों में प्रणाम करके वह भोला युवान चल पड़ा। मैं दूर तक उसकी पद-ध्वनि सुनता रहा। उस पद ध्वनि में उसके पिता की सुनहरी शिक्षाओं का रणकार मुझे सुनाई दे रहा था।

''आज आपने बहुत सुन्दर अनुभव कहा। ये शिक्षा तो मुझे भी काम आये वैसी है।'' सोमदत्त सेठ मित्र बोल उठे।

**(आधार : उपदेशप्रसाद व्या.126)**

***✻ इच्छा, आशा जब तक अतृप्त है, तब तक वह प्राणी अधोवृत्तिवाला है। इच्छा को जीतनेवाला प्राणी उर्ध्व गतिवाला है।***

# कोल्डड्रिंक पीने से मृत्यु भी हो सकती है ?

**✻ सुरेश पिंगले**

**किसी** व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात अग्निदाह संस्कार में देशी घी डाला जाता है जिससे पूरा शरीर जल जाता है व हड्डियां भी काफी हद तक जल जाती है परन्तु दांत बिल्कुल नहीं जलते। इसी तरह, यदि दांतों को मिट्टी में गाड़ दें व 20 साल के बाद निकालें तो भी वे बिल्कुल नहीं गलते है। यह आश्चर्यजनक बात है कि जिस दांत को घी की आग नहीं जला सकती है, मिट्टी नहीं गला सकती है उसे किसी भी कोल्डड्रिंक में डालने पर ज्यादा से ज्यादा 20 दिन में वह पूरा घुल जाता है तथा छानने पर भी दिखाई नहीं देता।

दरअसल कोल्डड्रिंक में फास्फोरिक एसिड (तेजाब) नामक जहर होता है जो मनुष्य के शरीर के सबसे कठोर अंग यानि दांत को ही नहीं बल्कि दुनिया की अधिकतर वस्तुओं, यहां तक की लोहे को भी पूरी तरह से खा जाता है। अब आप सोचिये कि कोल्डड्रिंक पीने पर यह शरीर के कई नाजुक अंगों के संपर्क में आता है तो उनका क्या हाल होता होगा। चूंकि कोल्डड्रिंक में काफी पानी होता है इसलिए इसका असर धीमे-धीमे होता है व तत्काल दिखाई नहीं देता।

अहमदाबाद स्थित कंज्यूमर्स एजुकेशन एण्ड रिसर्च सेंटर द्वारा जांच करने पर कोल्डड्रिंक में कार्बोलिक एसिड एरिथारबिक एसिड व बेंजोइक एसिड नामक तेजाब भी पाये गये। रसायन विज्ञान का कोई भी विद्यार्थी जानता है कि किसी भी एसिड की तीव्रता पी.एच.पेपर से पता की जा सकती है। खट्टमान पी.एच. से जितना कम होगा, एसिड उतना ही तीव्र होगा। कोल्डड्रिंक की पी.एच. तीव्रता लगभग 2.4 होती है। इसी कारण कोल्डड्रिंक पीने पर गले व पेट में जलन, डकारें, दिमाग में सनसनी, चिड़ चिड़ापन तथा एसिडिटी हो जाती है। ध्यान रहे कि कई फलों व सब्जियों जैसे नारंगी, नींबू, कैरी में भी एसिड होते है परन्तु प्राकृतिक रुप में होने से शरीर में जाकर क्षार में बदल जाते है तथा शरीर की एसिडिटी कम करने का कार्य करते है जबकि कोल्डड्रिंक में एसिड कृत्रिम रुप में होने के कारण खतरनाक होते हैं।

घर में संडास साफ करने में इस्तेमाल होने वाले हाइड्रोक्लोरिक एसिड की पी.एच. तीव्रता कोल्डड्रिंक के बराबर है। क्या ऐसे कोल्डड्रिंक को पीना चाहिये या...? जरा सोचिए!!!

शरीर विज्ञान के अनुसार हर प्राणी सांस के माध्यम से हवा में विद्यमान ऑक्सीजन (प्राणवायु) लेता है तथा शरीर में उत्पन्न कार्बन डाई आक्साइड नामक जहरीली गैस बाहर निकाल देता है। हर कोल्डड्रिंक में कार्बन डाई आक्साइड डाली जाती है जिससे वह लंबे समय तक खराब न हो। कोल्डड्रिंक पीने पर शरीर इसे नाक व मुंह के माध्यम से वापस बाहर निकाल देता है। यदि कभी गलती से कार्बन डाई आक्साइड बाहर न निकल पाये तो मृत्यु निश्चित है।

हवा में सीसे की मात्रा 0.2 पी.पी.एम. से अधिक होने पर सांस के द्वारा अंदर पहुंचकर यह स्नायुयंत्र, मस्तिष्क, गुर्दो, लीवर व मांसपेशियों के लिये घातक होता है।

कोकाकोला व पेप्सीकोला दोनों अमरीका की कंपनियां है लेकिन वहां अधिक जागरुकता के कारण बेचे जाने वाले कोल्डड्रिंक में 0.2 पी.पी.एम. में कम सीसा डाला जाता है जबकि इन्हीं बेईमान कंपनियों द्वारा भारत में ''सब चलता है'' की तर्ज पर कोल्डड्रिंक में 0.4 पी.पी.एम.सीसा डाला जाता है।

कोलाब्रांड के कोल्डड्रिंक में कैफीन डाला जाता है जो अधिक मात्रा में लेने पर बैचेनी, अनिद्रा व सिरदर्द पैदा करता है। ये बहुराष्ट्रीय कंपनियां अमरीका व यूरोप में 88 पी.पी.एम.से कम कैफिन डालती है जबकि भारत में 111 पी.पी.एम. तक कैफीन उपयोग करती है। जांच करने पर कोल्डड्रिंक में कई अन्य जहरीले रसायन भी पाये गये, जैसे- आर्सेनिक, कैडमियम, जिंक, सोडियम ग्लूटामेट, पोटेशियम सोरबेट, मिथाइल बेंजीन, ब्रोमिनेटेड वेजिटेबल ऑयल इत्यादि। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोल्डड्रिंक को ''धीमा जहर'' घोषित किया है।

बजाय इनके ताजे फलों का रस, मिल्क शेक, नारियल पानी, कैरी पानी, नींबू की शिकंजी, दूध, दही, लस्सी, जलजीरा, ठंडाई, चंदन तथा विभिन्न स्वदेशी उत्पादकों द्वारा बनाये जा रहे निरापद पेयों को अपनाया जाये तो राष्ट्र का धन एवं स्वास्थ्य दोनों की रक्षा होगी।

***✻ भीतर के जगत को जितना स्वच्छ रखेंगे मन में उतनी ही शांति रहेगी।***

# शासन प्रभाविका ढंकगिरी तीर्थोद्धारिका साध्वीरत्ना प.पू.श्री चारुव्रताश्रीजी म.सा. का जीवन-परिचय

''जिनके नयन कमल में से निकलती थी, प्रशांत रस की धारा, वंदन कमल से बरसती थी, सिद्धचक्राराधना की धर्मधारा, हृदय कमल में छाई हुई थी, सिद्धचक्र यंत्रमय छबी की धवलधारा ऐसी गुरुवर्या चारुव्रताश्रीजी के चरणों में भावभरी वंदना ।''

''गुरुवर्या हेमेन्द्र श्रीजी ने हर्ष से दिया चारुव्रता नाम, चारित्रचंपा-सौरभ द्वारा पावन किया अपना नाम, सिद्धचक्र साधना से बने आत्मध्यान मस्तान, शासनभक्त भक्तिभाव से, कर रहा है गुणगान ।''

**जन्म-** श्रावण सुद-3, ता. 8-8-1948 पाटणवाव

**पिता का नाम-** देवचंदभाई

**माता का नाम-** कसुंबा बेन

**समुदाय का नाम-** आगमोद्धारक प.पू.आ.दे.आनंदसागर सूरीश्वरजी म.सा.

**दीक्षादाता-** वर्तमानमय प.पू.आ.देव श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी म.सा.

**दीक्षा-** अक्षय तृतीया, ता. 5-5-1973 अहमदाबाद (गुज.)

**गुरुवर्याश्री का नाम-** प.पू.सा.श्री शिव-तिलक-मनोहर-इन्दुश्रीजी म.सा.की शिष्या सरलस्वभावी प.पू.सा.श्री हेमेन्द्रश्रीजी

**शिष्या-प्रशिष्या-** प्रप्रशिष्या संपदा-

मानवभव की दुर्लभता गुरु भगवंतों से जानकर संयम रुपी धर्मरत्न-अपनाया, चिद् (ज्ञान) ध्यान, संयम, तप, स्वाध्याय जाप में अप्रमतता थी, प्राचीन स्तवन-सज्झाय नये-नये राग में मधुर कंठ गाकर भक्ति गीत गंगा को बहाते थे । मालव ज्योति पू.सा.श्री इन्दुश्रीजी म.सा. एवं गुरुवर्या हेमेन्द्रश्रीजी म.सा.के सानिध्य में जीवन भव्य बनाने लगे। देवगुरु के परम आर्शीवाद, प्रज्ञा प्रकर्ष मेघा मांगलय एवं नम्रता आदि गुणों से युक्त हो सिद्धचक्र यंत्र जिनालय का निर्माण कार्य करवाने में मग्न हो गये जब यह साकार हुआ तब सिद्धाचक्र भक्तों के प्रिय बने। स्वभाव में विनय, समता- सरलता- सहिष्णुता होने से आत्मा हेममय होने लगी। प्रतिदिन त्रिकाल सिद्धचक्र पूजन–अर्हम् की साधना से सिद्धचक्र महाराजा के मीत बन गये, इसी तरह संपूर्ण जिनशासन अर्पण कर आर्य देश को गौरवान्वित किया।

**महाप्रयाण का दिन-** चैत्र सुद-5 ता. 17-4-2021 शनिवार, प्रातः 9.45

**समाधि स्थल-** ढंकगिरी तीर्थ, तलेटी, पाटणवाव

पूज्यश्री ने मालवा, मेवाड़, महाराष्ट्र, मुंबई, कर्नाटक, बैंगलोर, सौराष्ट्र एवं चैन्नई आदि प्रांतों में विचरण कर मीठी मधुरी वाणी द्वारा धर्मोपदेश देकर भिन्न-भिन्न संघों में जिनशासन की ध्वजा फहराई। भीलवाड़ा-विजयनगर मंदिर का खनन शिलान्यास, बेगु मंदिर का जीर्णोद्धार, सुवाना मंदिर की प्रतिष्ठा, निकाया (सौराष्ट्र) मंदिर की प्रतिष्ठा, अंधेरी (मरोल) मंदिर की ऐतिहासिक अंजनशलाका-प्रतिष्ठा महोत्सव एवं कई नूतन उपाश्रय का निर्माण कार्य आदि सत्कृत्यों के प्रेरणास्त्रोत आपश्री थे।

आपश्री से प्रेरित होकर परमभक्त श्रीमान मोहनलालजी छगनलालजी कोठारी परिवार रिछेड़निवासी रिछेड़में सिद्धचक्र यंत्रमय मंदिर की अंजनशलाका-प्रतिष्ठा, रिछेड़से सिद्धाचल तीर्थ का छःरि पालित संघ 45 दिन का, नवांणु उपधान, आराधना करवाकर जिनशासन की अनमोल प्रभावना की थी।

आपश्री के सद् उपदेश से भीलवाड़ा से करेड़ा पार्श्वनाथ का, मध्यप्रदेश में नीमच से सर्वप्रथम राणकपुर का, जीरन से ही पार्श्वनाथ का आदि 25 तीर्थो के छःरिपालित संघ निकले थे।

सन् 1995 में आपश्री के सत्प्रेरणा से पाटणवाव गांव में उपाश्रय का निर्माण-उद्घाटन, ढंकगिरीराज पर मंदिर का खनन शिलान्यास तत्पश्चात् पाटणवाव गांव में प.पू.आ.दे. कल्याणसागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में परिकर युक्त आदेश्वर भगवान की प्रतिष्ठा, सन् 2002, 2010 में वर्तमान गच्छाधिपति आ.देव श्री दौलतसागरसूरीजी भगवंत की निश्रा में ढंकगिरीराज की तलेटी में परिकरयुक्त 81 इंच की श्रीऋषभस्वामीजी की अंजनशलाका चल प्रतिष्ठा, सिद्धाचक्र यंत्रमय जिनालय की अंजनशलाका प्रतिष्ठा,

अलौकिक-अद्वितीय-अनुपम रुप से सम्पन्न हुई थी, सन् 2015 में युवा हृदय सम्राट प.पू.आ.देव श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म. की निश्रा में श्री शांतिस्नात्र जिनालय की अंजनशलाका प्रतिष्ठा हुई थी। सन् 2017, 2019 में जिनागमसेवी प.पू.आ.देव श्री दौलतसागरसूरीजी भगवंत की निश्रा में ढंकगिरीराज पर ऋषभकुट मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा जय तलेटी मंदिर की अंजनशलाका-प्रतिष्ठा सुचारु रुप से सम्पन्न हुई थी।

विश्व का प्रथम सिद्धचक्र यंत्रमय जिनालय-शांतिस्नात्र जिनालय ऋषभकुट की अमूल्य-अनेरी-अद्भूत धरोहर जिनशासन को प्रदान करनेवाली, अनेक सद्गुणों से सुशोभित पूज्याश्री चैत्र सु.5 तारीख 17-4-2021, शनिवार, प्रातः 9.45 पर नवकार मंत्र का श्रवण करते-करते समाधिपूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए। जिनशासन के नभांगण से चमकता सितारा खिर पड़ा हृदय वेदना व्यथा का अनुभव कर रहा है।

प.पू.सा.गीतव्रताश्रीजी म.सा., पू.सा.प्रियव्रताश्रीजी म.सा. और पू.सा. हेमव्रताश्रीजी म.सा. ने अंतिम समय तक सेवा वैयावच्च की एवं अंतिम निर्यामणा भी कराई।

ओ गुरुमैय्या ! आपश्री की साधना-आराधना से हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि -आपश्री स्वर्गलोक में गये होंगे और वहां से जिनशासन, समुदाय और हम सभी पर आर्शीवृष्टि करते रहना।

*''सागर समुदाय की आन-बान-शान थी*
*वह ममतामयी मूर्ति*
*अब कोई न कर सकेगा उनके पुनित प्रेम की पूर्ति,*
*दसों दिशाओं में फैली हुई थी कला-कुशलता की कीर्ति*
*शासनप्रेमी के दिलों में हमेशा रहेगी सत्कार्यों की स्मृति।''*

हेमचारु शिष्याओं की ओर से पूज्याश्री के दिव्यचरणों में कोटीशः वंदना !

---

***आदमी बाह्य परिस्थितियों के कारण जितना दुःखी नहीं होता है, उतना दुःखी मन के विचारों के कारण होता है। नकारात्मक सोच Negative Thinking के कारण बाहर से सब कुछ अच्छा हो तो भी कष्ट का ही अनुभव होने लगता है।***

# स्वयं से मिलने की कला-मौन

✻ मनुष्य की भाषा शब्दों में और परमात्मा की भाषा मौन में है।

✻ मौन चंचल मन का निरोध एवं अन्तःकरण को पवित्र करने का श्रेष्ठ तप है।

✻ मौनी व्यक्ति सभी का प्रिय होता है, वह सुखी और स्वस्थ रहता है।

✻ मौन रहने से मन में ताजगी, विचारों में स्फूर्ति और वाणी में उत्साह आ जाता है।

✻ मौनी साधक कलह कटूता से स्वयं को बचा लेताहै।

✻ मौन का प्रभाव भाषणों से अधिक पड़ता है, मौन वाणी का संयम है।

✻ मौन आत्म रक्षक है, इससे साधना में सिद्धि शीघ्र प्राप्त होती है।

✻ मौन जीवन की श्रेष्ठतम साधना है, मौन से वचन सिद्धि प्राप्त होती है।

✻ विकार समाप्त होते हैं, अशुभ कार्य रुक जाते है और पाप का निरोध हो जाता है।

✻ झूठ के द्वार बन्द हो जाते हैं तथा गंभीरता और धैर्यता के गुण आ जाते हैं।

✻ मौन में अन्तःकरण की शक्ति की शक्ति को जगाने की क्षमता होती है।

✻ मौन में परम शान्ति है और परम शान्ति में ही परम शक्ति है।

✻ मौन से राग द्वेष व ईर्ष्या समाप्त हो जाती है।

✻ जो मनुष्य जितना कम बोलता है, वह उतनी ही अधिक प्रशंसा पाता है।

✻ मौन से अन्तर में बाहर दोनों ओर शांति छा जातीहै।

✻मौन से मन,वचन और बुद्धि में पवित्राता आ जाती है।

यदि मनुष्य कम बोलने का अभ्यास कर ले, तो उसके जीवन की आधी मुसीबतें तो ऐसे ही कम हो जाएं। बोलना ऊर्जा का विघटन है और मौन ऊर्जा का संकलन एवं संपादन है। मित्रों ! मौन रहने का अभ्यास करें। जीवन धन्य हो जायेगा।

---

***✻ आंख तो पशु को भी मिली पर जीवदया का पालन मनुष्य जीवन में ही है।***

# स्वाध्याय साधुओं का भोजन है, आहार है।

**✻कहे कलापूर्ण सूरी से**

✻ स्वाध्याय साधुओं का भोजन है, आहार है। जितना स्वाध्याय प्रबल होगा, उतनी आत्मा की पुष्टता प्रबल होगी। स्वाध्याय से मन शास्त्रों में रहता है, जिससे ध्यान की पूर्व भूमिका तैयार हो जाती है।

स्वाध्याय प्रेमी सहज ही ध्यान कर सकता है। इसीलिये अभ्यंतर तप में स्वाध्याय के पश्चात ध्यान बताया है।

✻ उपयोग एवं ध्यान एकार्थक है, पर्यायवाची है। उपयोग अर्थात् उपयोग।

उपयोग नहीं रहने के कारण ही हमारी क्रियाएं ध्यान नहीं बनती। उपयोग-रहित क्रियाएं द्रव्य-क्रिया कहलाती है।

स्वाध्याय में वाचना, पृच्छना, परावर्तना तक फिर भी द्रव्य-क्रिया हो सकती है, परन्तु अनुप्रेक्षा उपयोग के बिना नहीं हो सकती। ..अतः अनुप्रेक्षा ध्यान है।

केवल उपयोग को सिद्ध कर लें तो सब ध्यान रुप बन जायें।पूज्य आनन्दघनजी ने कहा है-

**''दहतिग पण अहिगम साचवतां,**
**इकमना धुरि थइए रे....''**

एक-मना दस त्रिकों से बना जाता है। एकमना अर्थात् ही उपयोग सहित साधक।

योग की व्याख्या-मोक्ष (भगवान) के साथ जोड़ दे वह योग है।

मोक्ष एवं भगवान कहां भिन्न है ?

संक्षेप में-आत्मा को जो परमात्मा बना ले वह योग है।

इच्छायोग आदि में भी योग शब्द का प्रयोग हो चुका है।

इच्छायोग रुचि है।...सामर्थ्य-योग अनुभूति है।

अनुभूति का मूल रुचि है। यदि रुचि में ही कमी (त्रुटि) हो तो अनुभूति की आशा छोड़ देनी चाहिये।

प्रत्येक अनुष्ठान उपयोग पूर्वक हो तो काम हो जाये, समस्त क्रियाएं भाव आवश्यक बन जायें।

उपयोग न हो तब तक चैत्यवन्दन, प्रतिक्रमण आदि द्रव्यक्रिया ही कहलाती है।

उपयोग मिल जायेगा तो भगवान के प्रति बहुमान उत्पन्न होगा।

अर्थ में मन सम्मिलित हो जाये तो भगवान के प्रति बहुमान उत्पन्न होगा ही।

''नमुत्थुणं'' का अर्थ जानने पर ही सिद्धर्षि को भगवान की करुणा समझ में आ गई। इसीलिये वे जैन-शासन में स्थिर हुए।

उपयोग पूर्वक आप आनन्दघनजी आदि के स्तवन बोलें तो आपकी चेतना झंकृत हो उठेगी।

**''अभिनंदन जिन दरिसण तरसिये....''**

यह बोलते समय आपकी चेतना दर्शन के लिये तड़प का अनुभव करेगी।

चन्द्रप्रभु स्वामी का स्तवन बोलते समय लगेगा-

अनादिकाल में ऐसे दर्शन कहां हुए है ? अब दर्शन हुए है तो पेट भर कर दर्शन करने दे।

**''विमल जिन दीठा लोयण आज.... ''**

✻ पुद्गलास्तिकाय जिस प्रकार द्रव्य रुप में एक है उस प्रकार जीवास्तिकाय भी एक ही द्रव्य है, जिसमें निगोद से सिद्ध तक के समस्त जीव आ गये। एक भी जीव बाकी नहीं है।

इन जीवों को आत्मवत् देखना है।

**''आत्मवत् सर्वभूतेषु ''** आगे बढ़कर कहूं तो जीवों को परमात्म-तुल्य देखना है। यह कक्षा आने के पश्चात भेद समाप्त हो जायेगा।

✻ इस समय जिस प्रकार एकत्रित होकर कार्य करते हैं उस प्रकार सदा के लिये एकत्रित होकर कार्य किया जाये तो जैन-शासन का जय जयकार हो जाये। यहां मेरा-तेरा का भेद कैसा ?

✻ योग अर्थात् ध्यान, समाधि आदि। संक्षेप में मोक्ष के सभी साधन योग है। जो भगवान के साथ जोड़ दे वह योग है। भक्ति भी योग है जो भगवान के साथ जोड़ देती है।

**''तस्मिन् परमप्रेमरुपा भक्ति।''**

**- नारदीय भक्तिसूत्र**

✻ व्यवहार से सम्यग्दर्शन **विनय** है।

चैत्यवंदन आदि विनय के सूचक है।

समकित के सड़सठ भेदों को देखें, देव-गुरु का परम विनय ही दृष्टिगोचर होगा। पांच शंका-दूषण टालने से तात्पर्य है देव-गुरु के प्रति अविनय टालना।

सुनने की इच्छा शुश्रुषा। शुश्रुषा होती है वहां ज्ञान आता ही है।

अनुष्ठानों की आराधना सम्यक् चारित्र है। तात्पर्य यह कि विनय से सम्यग्दर्शन शुश्रुषा से सम्यग्ज्ञान और अनुष्ठानों की आराधना से सम्यक्चारित्र प्राप्त होता है।

✻ ''योगविंशिका'' का सम्पूर्ण सार ''ज्ञानसार '' के योगाष्टक में मात्र आठ श्लोकों में बताया है।

उसमें लिखा है-चैत्यवंदन आदि में स्थान आदि का उपयोग करना। .....स्थान, वर्ण-क्रियायोग।

अर्थ, आलम्बन, अनालम्बन ज्ञानयोग है।

अर्थ आदि का भावन करें तो ही चैत्यवंदन भाव-चैत्यवंदन हो सकेगा।

स्थान-वर्ण में प्रयत्न और अर्थ आदि में विभावन करना है। इन पांचों (स्थान आदि) में ध्यान रखना कहां ? ऐसा न सोचें। मन का इतना शीघ्र स्वभाव है कि एक साथ चारों में पहुंच जाता है।

मन के बालक को छूट दे देनी है-इन चारों में चाहे जहां जा, छूट है।...स्थान में काय।....वर्ण में वाणी।

**अर्थ आदि में मन जोड़ना है। मन को जोड़ना ही कठिन है। मन को जोड़े। कदाचित छटक जाये तो पुनः वहां जोड़े। रोकड़, खाता-बही लिखते समय मन का ध्यान हट जाये तो पुनः वहां मन को जोड़ते हैं न ? उस प्रकार मन को यहां भी पुनः पुनः जोड़े। प्रशिक्षण दो तो यह सम्भव है। मन सर्वथा बेवफा नहीं है, कुछ तो मानेगा ही।**

रसगुल्लों में मन एकाग्र हो सकता हो तो ऐसे अनुष्ठानों में एकाग्र क्यों न हों ?

अशुभ में एकाग्रता के लिये तो प्रयत्न करना ही नहीं पड़ता, शुभ के लिये ही प्रयत्न करना पड़ता है।

यदि मन आप कहो वैसा करने लग जाये तो ही वह आपका सेवक गिना जाता है। मन स्वेच्छानुसार करता रहे और आप विवश होकर देखते रहो तो उसमें आपका स्वामित्व नहीं है।

✻ ''भगवती'' में उल्लेख है कि- शिवराजर्षि को सात द्वीपों-समुद्रों का अवधि ज्ञान हुआ और उसने घोषणा की कि जगत इतना ही है।

पुद्गल परिव्राजक को पांचवें देवलोक तक ज्ञान हुआ और उसने तदनुसार घोषणा की।

वर्तमान विज्ञान यही करता है न ? जितना जानता है वही सम्पूर्ण है, यही मानता है न ? यहीं ''कूप-मण्डुक-वृत्ति'' है।

कुंए में रहनेवाले मैंढक ने कुंए के अतिरिक्त कुछ जाना ही नहीं। वह समुद्र को कैसे जान सकता हैं ?

उस समय लोगों में ऐसी बातें फैला कर उनका निराकरण करने के लिये गौतम स्वामी भगवान को पूछते और भगवान उनका निराकरण करते।

अधकचरा ज्ञान खतरनाक है। शिवराजर्षि आदि को तो भगवान मिले, परन्तु हमे? हम अपूर्ण ज्ञान से छलक रहे हैं।

✻ क्षपकश्रेणी, केवलज्ञान, अयोगी गुणस्थानक इत्यादि का वर्णन शास्त्रों में उपलब्ध ही है, परन्तु शास्त्र पढ़ने मात्र से कोई केवलज्ञान नहीं हो जाता। इसके लिये आपको शास्त्रों से अतिक्रांत होना पड़ता है। शास्त्र यहां रुक जाते हैं। शास्त्रों का कार्य केवल दिशा-निर्देशन है, चलना तो हमें है। दूसरा व्यक्ति मंजिल की मुख्य-मुख्य जानकारी देता है, परन्तु चलने का अनुभव तो अनुभव से ही मिलता है न ?

शास्त्र मील के पत्थर है। मील के पत्थर यहीं बताते हैं कि आप कितने चले ? अन्य कुछ नहीं बताते। उस प्रकार शास्त्रों की भी सीमा है, मर्यादा है।

कोई व्यक्ति भोजन की सामग्रियां के नाम बताये, उतने मात्र से पेट नहीं भर जाता। पेट भरने के लिये भोजन करना पड़ता है।

इसी प्रकार से शास्त्रों की बातें जीवन में उतारनी पड़ती हैं, फिर आगे जाकर ऐसी दशा आती है कि शास्त्र भी पीछे रह जायें। यह ''सामर्थ्य योग'' है।

सामर्थ्य योग से प्रातिभ ज्ञान मिलता है। फिर प्रतिभ ज्ञान केवल ज्ञान तक ले जाता है। योगाचार्यो ने विशेष तौर से ''प्रातिभ ज्ञान'' शब्द का प्रयोग किया है।

✻ जिस भूमिका में हों वहां से प्रारंभ करना पड़ता है। हम यहां पालीताना आये। कोई 500 किलोमीटर दूरी से, कोई हजार कि.मी. की दूरी से और कोई ढाई हजार कि.मी. की दूरी से आये हैं तो जो जितने दूर हों, वहां से उन्हें चलना पड़ता है।

**हम जिस भूमिका में हों, वहां से प्रारम्भ करना पड़ता है। तलहटी में खड़ा व्यक्ति शिखर से यात्रा प्रारंभ नहीं कर सकता।**

✻ प्रातिभ ज्ञान में आत्मवीर्य की प्रधानता है। वह क्षपक श्रेणी के समय होता है। जिस प्रकार कोई व्यापारी अमुक समय पर एक भी ऋण-दाता लेनदार को अपने पास आने नहीं देता। मुद्दत दी हो तो ऋण-दाता मांगने के लिये आयेंगे ही। यदि वे लेनदार एक साथ मांगने के लिये आ जायें तो आज का व्यापारी दिवाला निकाल देता है न ?

**पूज्य हेमचन्द्रसागरसूरिजीः-**व्यापार किया प्रतीत होता है।

**पूज्यश्री :** सब नाटक किये है, परन्तु ऐसा कदापि किया नहीं है। भूल से भी अन्याय नहीं किया। कोई भूल जाये तो सामने से याद कराया है।

✻ बांधे हुए कर्म तो उदय में आते ही है। बांधते समय आप स्वतंत्र है, भोगते समय आप परतंत्र है। भोगते समय समता ही रखनी पड़ती है।

आपको क्या ? मुझ पर भी प्राणघातक व्याधि आई है। उस समय भगवान के तत्वज्ञान ने ही मुझे दुर्ध्यान से बचाया है, अन्यथा उस समय क्रोध भी आ जाये कि कोई सेवा करता नहीं है आदि परन्तु एक अंगुली की पीड़ा दूसरी अंगुली ले नहीं सकती तो अपनी पीड़ा दूसरे कैसे ले सकते हैं ?

**यश-अपयश, शाता-अशाता सब अशाश्वत है, चले जाने वाले हैं । विहार में अच्छा तथा बुरा दोनों मार्ग चले जाने वाले हैं, यही मानें न ? उस प्रकार यहां भी यह सब चला जाने वाला है, यह मानकर समता रखनी है ।**

ऐसा करने से ही राग, द्वेष आदि लुटेरों को जीत सकेंगे।

वे सर्व प्रथम भगवान के भक्तों पर आक्रमण करते हैं, क्योंकि उन्हें क्रोध है-भगवान ने हमारा अपमान किया है। अब उनके भक्तों को नहीं छोड़ेंगे। अतः राग-द्वेष आदि भक्तों पर आक्रमण करते हैं, परन्तु भक्त भी कहां पीछे रहनेवाले हैं ?

उन्हें विश्वास है कि हमारे मन की गुफा में सिंह के समान भगवान बैठे हैं। राग-द्वेष आदि पशुओं का क्या सामर्थ्य है कि वे वहां आ सकें ?

गांव के बाहर सिंह का पुतला रखकर देखो। अन्य पशु उसे देख कर ही भाग जायेंगे।

**पूज्य नवरत्नसागरसूरीजीः-**

सिंह के पद-चिन्हों को देखकर भी भाग जायेंगे।

पूज्यश्री- हम सब तो भगवान के किले में हैं। यहां अशुभ भावों का स्पर्श कहां से होगा ?

हम सबको सामर्थ्य योग प्राप्त करना है, परन्तु वह प्राप्त होगा, शास्त्र योग के द्वारा और शास्त्र योग प्राप्त होगा इच्छा योग के द्वारा।

इस समय तो इच्छा योग आ जाये तो भी बड़ी बात है।

अतः आप भगवान को प्रार्थना करें कि प्रभु ! उसके लिये मुझे शक्ति दें।

# अध्यात्म दुर्लभ है....

अभी भयंकर कलियुग है। आज जड़वाद की सर्वत्र जय-जयकार है। पैसा आज की दुनिया का परमेश्वर बन गया है। विज्ञान की नित्य नूतन खोज की झगमगाहट में आदमी की आँख अंधी सी बन गई है। जिसकी आँख जिसमें प्रभावित हो गई होती है, उसे उसके बिना दूसरा कुछ भी दिखाई नहीं देता। भौतिकवाद से प्रभावित आज के आदमी को दूसरा कुछ कहां दिखाई देता है ?

भौतिकता ते ढोल-नगाड़े चारों ओर बज रहे हो तब अध्यात्म की वीणा कौन सुने ?

अभी तो भौतिक-शास्त्रों की सर्वत्र बात है। ''अध्यात्म'' शब्द का श्रवण भी दुर्लभ हो गया है।

ऐसे पंचम काल में अगर ''अध्यात्म'' शब्द का श्रवण हो जाय तो झूम उठना।

जंगल में घूमते आदमी को घर मिलना दुर्लभ है। भयंकर गरीबी में धन का दर्शन दुर्लभ है। अंधेरे में भटकने वाले को प्रकाश-प्राप्ति मुश्किल है। मारवाड़ में घूमते-फिरते आदमी को पानी मिलना मुश्किल है, उसी तरह कलिकाल में अध्यात्म की प्राप्ति मुश्किल है। जंगल में आदमी अगर प्रयत्न करें तो झोपड़ी बना सकता है। अकस्मात् ही कहीं से गरीबी में धन मिल सकता है। अंधेरे में कहीं से दीया भी मिल सकता है। प्रयत्न करने पर मारवाड़ जैसे देश में से पानी भी मिल सकता है, परन्तु अध्यात्म की प्राप्ति इससे भी ज्यादा मुश्किल है। क्योंकि इसकी प्राप्ति प्रयत्न साध्य नहीं है, कृपासाध्य है। भौतिकता प्रयत्न से मिल सकती है।

आध्यात्मिकता तो कृपा से ही मिल सकती है।

अध्यात्म-प्राप्ति की दुर्लभता का और कारण भी है। भौतिकता आदमी को बाहर दौड़ाती है। अध्यात्म अंदर आने के लिए कहता है, दौड़ को बंद करने के लिये कहता है। अनंत अनंतकाल से हम दौड़ते ही रहे है, निगोद से लेकर आज तक हम पदार्थों के पीछे दौड़ते ही रहे हैं। अनादि की इस आदत को अध्यात्म उल्टाने के लिए कहता है। अनंतकाल पुरानी आदत को हटानी बड़ा मुश्किल काम है। एक भव की बीड़ी या शराब की आदत भी जल्दी जल्दी छूट नहीं सकती तो अनंत काल की आदत किस तरह छूटें ? अरे.... इस आदत को छोड़ने का मन हो जाय तो भी मानना कि मैं बड़ा सौभाग्यशाली हूं।

# साधारण कर्म भी बन जाता है-योग

**इतने** ऋषियों तपस्वियों के रहते-एक राजा तत्वज्ञानियों की सभा का संचालन करें ? सभी के मनों में यह प्रश्न खटक रहा था। पर परमर्षि याज्ञावल्क्य के निर्णय का प्रतिकार ? यही पर आकर बात अटक जाती। महर्षि इस अन्तर्द्वंद्व से अपरिचित न थे। वन मार्ग पर पड़ते कदमों के साथ उनका मन समाधान के सूत्र खोज रहा था। साथ में चल रही तत्व जिज्ञासाओं की मण्डली अपने मन की तरंगों में उलझी थी। चलते-चलते महर्षि ने आकाश की ओर ताका सूर्यास्त हो रहा था। अस्ताचल की ओर जाते हुए आदित्य की रश्मियों को गले लिपटाकर विदाई दे रहे वृक्ष सुनहले दिख रहे थे। पक्षियों का साम-गान वायुमंडल को एक अनोखी गूंज से भर रहा था।

वन पथ कब राजपथ से मिलने लगा इसे जानने का किसी को अवकाश न था। चलते-चलते सभी किसी गाँव के पास आ पहुंचे थे। राह के किनारे ही देव-मंदिर बन रहा था। शाम होने के बाद भी अभी निर्माण कार्य थमा नहीं था। शायद इसे जल्दी परिपूर्णता देनी हो, न जाने महर्षि को क्या स्फुरणा हुई- उन्होंने निर्मित हो रहे मंदिर के सीमा क्षेत्र में प्रवेश किया। पीछे-पीछे तपस्वियों की मंडली भी घिर आई। ढेरों मजदूर, कारीगर और बढ़ई वहां काम कर रहे थे। पता नहीं क्या सोचकर उन्होंने एक ओर बैठे काम कर रहे मजदूरों के पास जाकर पूछा-भाई ! क्या कर रहे हो ? देखते नहीं हो। पत्थर तोड़ रहा हूं, मजदूर ने कहा। यद्यपि सवाल बड़ी विनम्रता से किया गया था। वाणी पर्याप्त माधुर्य से सनी थी। परन्तु इतना तिक्त जवाब पाकर लगा कि काम करने वाला तेज मिजाज है। यही नहीं वह किसी बात को लेकर दुःखी है। तभी तो सीधी-साधी बात का इतना कड़वा उत्तर ।वह कुछ और बढ़े। दूसरे मजदूर के पास पहुंच कर पहलेवाला सवाल दौहराया। मजदूर के उत्तर में पहले जैसी तिक्कता तो नहीं थी, पर यह जरुर लगता था कि उसे काम में आनन्द नहीं आ रहा है। उसने कहा था- ऋषिवर ! उदर पूर्ति के लिए काम कर रहा हूं। उसकी वाणी में विवशता की बोझिलता और अनुत्साह का फीकापन था। वह इधर-उधर देखते हुए एक और कार्यकर्मी के पास गए। महर्षि के साथ चल रही मंडली कुछ आश्चर्य और कौतुक के साथ उनका यह कार्य-व्यवहार देख रही थी। पर वह इस सबसे अनभिज्ञ तीसरे मजदूर के पास खड़े थे। वह बड़े उत्साह शक्ति और सुधाड़ता से पत्थर तोड़ रहा था। उन्होंने उससे पूछ ही लिया- भाई यहां क्या हो रहा है और तुम क्या कर रहे हो ? मजदूर ने बिना हाथ हटाए उनकी ओर देखा व किंचित सिर झुक कर तत्वज्ञ ऋषि को प्रणाम किया। उसकी आँखों में अल्लाद की चमक और आनन्द ही दीप्ति नाच रही थी। उसी भाव को व्यक्त करते हुए उसने धैर्यपूर्व उत्तर दिया- भगवन् ! यहां प्रभु का मंदिर बन रहा है। मैं भी इस भगवत् कार्य को पूरा करने के लिए मेहनत कर रहा हूं।

वह फिर अपनी राह पर चल पड़े। तनिक पीछे मुड़ते हुए ऋषिगणों को संबोधित किया- आप अब समझे कर्म का रहस्य ? उत्तर में उन सभी की आँखों में एक शून्यता का भाव उभरा। लगता था उनमें से किसी को समझ में नहीं आया था। अब वह खुद समझाते हुए बोले-ऋषिगणों ! पहला मजदूर जबदस्ती लादी गई मजदूरी कर रहा था। दूसरा बेचारा स्वतः की विवशता के कारण जुटा था। दोनों अपने मनोभावों के कारण दुःखी, निराश और उद्विग्न थे। जबकि तीसरा वही काम करते हुए आनंदित था जानते हैं क्यों ? हल्की मुस्कान के साथ उन्होंने देखा- तीसरे व्यक्ति में एक गरिमा थी, आनन्द था, प्रवीणता थी और उन सबका कारण थी उस व्यक्ति की समर्पण की आध्यात्मिक भावना जो उसे तीनों विशेषताओं से आप्लाबित कर रही थी। यदि कर्म ही सब कुछ है तब योग और तपश्चर्या की प्रक्रियाएँ ? एक जिज्ञासु ने प्रश्न उठाया।

तप और स्वाध्याय से मनन और निदिध्यासन से ध्यान और समाधि से वह परम तत्व अनुभव का विषय बनता है। सत्संग और सदाचार से यह मनुष्य का शरीर इसके भीतर देखने वाला अन्तःकरण वह पवित्र अधिष्ठान बनता है जिसमें आत्मानुभूति स्थिर और अचंचल होकर निवास करती है। सत्य बड़ा गुण है, स्वाध्याय और सत्संग तप है। पर पर-दुःख कातर होकर रात दिन कर्म में तत्पर रहना सर्वत्र आत्मानुभूति का प्रत्यक्ष प्रमाण है। कार्य के स्वरुप का मूल्य नहीं मूल्यवान और महत्वपूर्ण उसके पीछे विद्यमान भाव है। भावों की इसी उत्कृष्टता के कारण जनक राजा होने पर भी तत्व-ज्ञानियों में श्रेष्ठहै, उपदेश देने योग्य है। ऋषिगणों को समाधान मिल रहा था महर्षि कह रहे थे-उत्कृष्ट भावनाओं के घुल जाने पर साधारण कर्म भी योग बन जाता है। फिर महाराज विदेह तो भगवान के विष्णु उद्यान को सुन्दरतम बनाने के लिये स्वयं को प्रतिफल दलित द्राक्ष की तरह निघोड़रहे हैं। इससे अधिक साधना मुझे ज्ञात नहीं।''निश्चित रुप से वह श्रेष्ठतम तत्वज्ञानी है।'' अनेक स्वर एक साथ उभरे।

# महाराजा सवाई जयसिंह एवं उनकी प्रस्तर-वेधशालाएं

❋ ठा. श्री प्रहलादसिंहजी

**मध्यकालीन** भारतीय इतिहास की अठारहवीं शताब्दी के प्रारंभिक पचास वर्षो के राजनीतिज्ञों और शासकों पर दृष्टि डाली जाय तो महाराजा सवाई जयसिंह का व्यक्तित्व और कृतित्व अत्यन्त विशिष्ठता लिये दृष्टिगोचर होता है। वे जहां एक पराक्रमी योद्धा थे, वहां वे एक चतुर कूटनीतिज्ञ धर्मप्रेमी, युद्धनीति में निपुण, शास्त्रनिर्माण के विशेषज्ञ, वास्तुविद् और ज्योतिर्विद भी थे। राजा जयसिंह का जन्म 3 नवम्बर सन् 1688 ई. को कछवाहा (कुशवाहा)-वंश में हुआ था। उनके पिता राजा विशनसिंह (विष्णुसिंह) आमेर के राजा थे। बालक जयसिंह के जन्म के समय दरबारी ज्योतिषीयों ने भविष्यवाणी की थी कि राजकुमारों की आकाश गंगा में उनके पुत्र बृहस्पति की भांति देदीप्यमान रहेंगे और इस वंश के सर्वाधिक प्रतिष्ठित सूर्य होंगे।

उनके दूरदर्शी पिता ने उनकी शस्त्रविद्या और शैक्षणिक शिक्षा के लिये अलग-अलग प्रबंध किये। सन् 1699 ई. में पिता के आकस्मिक निधन के उपरांत जयसिंह बाल्यकाल में ही 11 वर्ष की आयु में आमेर के राजा बने। वे अपनी आयु से भी अधिक समझदार थे। मुगल सम्राट औरंगजेब उनकी बुद्धिमत्ता और बहादुरी से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने इस युवा राजपूत राजा को सवाई की उपाधि से सुशोभित किया। वे अपने समकालीन राजाओं से सवा गुना बुद्धिमान थे।

महाराजा किशनसिंह की मृत्यु के बाद राजमाता इन्द्रा कँवर ने अपने बुद्धिमान पुत्र को विद्वानों और गुरुओं की छत्राछाया में रखकर उसके सर्वागीण विकास के हर संभव प्रयास किये।

खगोल विज्ञान संबंधी हिन्दू, यूनानी, मुस्लिम और यूरोपियन विचारों का सर्वागसम अध्ययन करने के बाद सवाई जयसिंह ने सन् 1799 ई. में दिल्ली में प्रथम खगोल-विज्ञानीय वेधशाला का निर्माण आरंभ किया। उस समय मुगल बादशाह मुहम्मदशाह भारत के सम्राट थे, उन्होंने इसके लिये सहर्ष अनुमति दे दी।

सवाई महाराज जयसिंह पहाड़ियों के बीच स्थित अपनी पुरानी राजधानी आमेर को एक बृहत् और सुन्दर शहर में बदलना चाहते थे, 18 नवंबर, सन् 1727 ई. को उन्होंने इसके निर्माण का शिलान्यास किया। उनके खगोलीय ज्ञान का प्रकट रुप हम गुलाबी शहर जयपुर के निर्माण में देखते हैं जिसमें उन्होंने नौ आयताकार खण्ड और सात द्वारों का निर्माण कराया, इनमें से कुछ सूर्य, चन्द्र और ध्रुवतारे की ओर अभिमुख हैं। उनके द्वारा किये गये खगोल विज्ञान-संबंधी कार्य और वेधशालाएं उनकी कीर्तिपताका के रुप में आज भी विद्यमान हैं।

**उनके कीर्तिमान :-**

1- जयपुर में विश्व की सबसे बड़ी और सर्वाधिक सूक्ष्म ''सूर्यघड़ी'' निर्मित कराने का कीर्तिमान भी सवाई राजा जयसिंह के ही नाम है। 35 मीटर के बृहत्त व्यास क्षेत्र में चूना-पत्थर से निर्मित यह घड़ी सैद्धांतिक रुप से प्रत्येक मिनट में 2 सेकण्ड तक के समय को ठीक बताती है।

2- आकाश के व्यावहारिक रुप से अवलोकन के आधार पर उन्होंने वर्तमान पंचांगों (कैलेण्डरों) में सुधार किया, उज्बेग की खगोलीय तालिकाओं का परिशोधन एवं परिवर्धन किया और तारों तथा ग्रहों की प्रसिद्ध जिज-ए-मुहम्मदशाही विवरणिका की रचना की।

3- आमेर राजघराने के प्रमुख और कुशल सेनापति के रुप में उन्होंने विश्व की ''पहियों पर सबसे बड़ी तोप'' का निर्माण कराया, जिसकी गोला फेंकने की क्षमता 40 कि.मी. तक थी। यह तोप केवल हाथियों द्वारा ही खींची जा सकती थी। यह आज भी आमेर के जयगढ़ किले में प्रदर्शनार्थ रखी हुई हैं।

4- सवाई महाराज जयसिंह ने ऐसे कई मंदिरों का निर्माण करवाया, जो पूर्णतः खगोलपिण्डों-सूर्य, चन्द्र और नौ ग्रहों को समर्पित थे। भगवान सूर्य की प्रतिष्ठा में उन्होंने एक प्रसिद्ध सूर्य मंदिर का निर्माण कराया, जो पूर्व दिशा की पहाड़ी पर स्थित है तथा जयपुर शहर से दिखाई देता है।

खगोलविद्या-संबंधी इन अमर कीर्तिमानों का निर्माण कराकर 21 सितंबर 1743 ई. को लगभग 55 वर्ष की आयु में उन्होंने जीवन की अंतिम सांस ली। उनके द्वारा स्थापित वेधशालाओं का संक्षेप में विवरण प्रस्तुत है-

**1- जयपुर की वेधशाला:-**

यह वेधशाला समुद्र तल से 431 मीटर (1414 फीट)

की ऊंचाई पर स्थित है, इसका देशान्तर 75° 49'8.8'' ग्रीनविच के पूर्व में तथा अक्षांश 26° 55'27'' उत्तर में है।

प्रस्तर-यंत्रों से युक्त दिल्ली वेधशाला पर किये गये सफल प्रयोग के उपरांत सन् 1724 ई. में महाराजा सवाई जयसिंह ने अपनी नयी राजधानी जयपुर में एक बृहत्त वेधशाला के निर्माण का निर्णय लिया और सन् 1728 ई. में यह वेधशाला बनकर तैयार हुई।

जयपुर वेधशाला राजा सवाई जयसिंह की हिन्दू, मुसलिम और यूरोपियन खगोलविदों से खगोल-विज्ञान संबंधी विषयों पर विचार-विमर्श करने का केन्द्र बन गयी। इस वेधशाला का प्रयोग ज्योतिष-संबंधी अध्ययन, भविष्यवाणियों और जन्म-पत्रिकाएं बनाने तथा विभिन्न खगोल-विज्ञानीय यंत्रों की सहायता से खगोल-विज्ञान संबंधी आँकड़े एकत्रित करने में होता था।

जयपुर वेधशाला ऊँची-ऊँची दीवारों से घिरी हुई है। यद्यपि यह आधुनिक शहर के व्यस्ततम क्षेत्र में स्थित है, फिर भी भीड़भरे माहौल में यह वेधशाला अत्यन्त शांत और गंभीर वातावरण का आभास कराती है।

आकाशीय पिंडों की क्रांति, खगोलीय देशान्तर, भौगोलिक देशान्तर, क्रांतिवृत्त, भचक्र राशियों की स्थिति, विषुवांश, सूर्य समय, उन्नतांश, दिगांश, अक्षांश, इत्यादि का अध्ययन गृह-नक्षत्र-सारणी तथा पंचाग आदि की रचना तथा मुहूर्त-निर्धारण करने हेतु जयपुर वेधशाला में निम्नलिखित यंत्रों की रचना की गईः-

1- लघु विषुवतीय धूरपड़ी (लघु सम्राट यंत्र), 2- ध्रुव दर्शक यंत्र, 3- वृत्ताकार उत्तरी तथा दक्षिणी सूर्यघड़ी (नाड़ीवलययंत्र), 4- समतल (क्षितिजीय धूपपड़ी), 5- क्रांतिवृत्तयंत्र, 6- ज्योतिष प्रयोगशाला (यंत्रराज) 7- उन्नतांशयंत्र, 8- दक्षिणी वृत्ति भित्ति-यंत्र-(क) पश्चिमी भित्तियंत्र (ख) पूर्वी भित्ति यंत्र 9- बृहत्त विषुवतीय सूर्यघड़ी (बृहत्त सम्राट यंत्र), 10- राशिवलय (राशि यंत्र 12), 11- जयप्रकाश यंत्र, 12-अर्धगोलाकार (कपाली यंत्र-2) 13-चक्रयन्त्र-2, 14-रामयंत्र-2 (उन्नतांश, दिगांश यन्त्र), 15-दिगांशयन्त्र एवं 16- प्रतिबंधित क्रांति वृत्तयंत्र।

महाराजा सवाई माधोसिंह के आदेश से सन् 1901 ई. में इस वेधशाला का जीर्णोद्धार हुआ। स्वतंत्राता के बाद यह वेधशाला राष्ट्रीय धरोहर बन गयी और अब इसका संरक्षण-अनुरक्षण राजस्थान सरकार के पुरातत्व विभाग द्वारा किया जाता है।

**2- दिल्ली वेधशालाः-**

यह समुद्र तल से 239 मीटर (785 फीट)- की ऊंचाई पर, अक्षांश-28 अंश 39 विकला उत्तर तथा देशान्तर-ग्रीनविच के पूर्व में 77 अंश 13 कला 5 विकला पर स्थित है।

यह भव्य वेधशाला जन्तर-मन्तर के नाम से प्रसिद्ध है। जन्तर-मन्तर एक राष्ट्रीय स्मारक है, जिसका अनुरक्षण भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा किया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि महाराजा ने इस वेधशाला का निर्माण कार्य हिन्दुस्तान के मुगल-सम्राट मोहम्मद शाह के राज्याभिषेक के तुरन्त बाद सन् 1799 ई. में आरम्भ कराया था और सन् 1724 ई. में पूर्ण कर लिया था। सवाई जयसिंह ने पं. जगन्नाथ सम्राट के सहयोग से यहां सात वर्ष तक खगोलीय पिण्डों का अवलोकन करके खगोलीय सारणियां और तारा सूचीपत्र तैयार किये, जिन्हें मुगल बादशाह मुहम्मदशाह के नाम पर ''जिज-ए-मुहम्मदशाही'' नाम दिया गया।

सन् 1739 ई.में फारस के नादिरशाह ने आक्रमण कर दिल्ली में भारी कत्ले-आम और लूटपाट मचा दिया। वह अनेक अमूल्य रत्नों और आभूषणों को लूट ले गया। उसने महाराज सवाई जयसिंह के ताँबे के यंत्र और खगोलीय प्रयोग संबंधी अन्य यंत्रों का अनमोल संग्रह भी लूट लिया। इस प्रकार भारत प्राचीन खगोली विज्ञान के सर्वाधिक मूल्यवान खजाने से सदैव के लिये वंचित हो गया। फिर भी चूना-पत्थर के यंत्र नादिरशाह की तोड़-फोड़ से बच गये क्योंकि इन पर किसी देवी-देवता की या मानवीय मूर्ति अंकित नहीं थी। बाद में सवाई माधोसिंह द्वितीय ने इस वेधशाला के कुछ क्षतिग्रस्त यंत्रों का जीर्णोद्वार कराया। तत्पश्चात यह ऐतिहासिक ''जन्तर-मन्तर'' कई दशकों तक उपेक्षित रहा और सन् 1982 ई. में इसके फिर दिन बदले, जब एशियाड सन् 1982 ई. में इस वेधशाला के मिश्र यन्त्र को ''शुभंकर'' के रुप में चुना गया। पुरातत्व विभाग ने इस वेधशाला के अधिकांश यंत्रों का चूने पत्थर और पलस्तर से जीर्णोद्धार कराया। दिल्ली वेधशाला के खगोलीय यंत्र इस प्रकार हैः-

1- मिश्र यंत्रः- (क) मध्यान्ह रेखा भित्तियंत्र (दक्षिणीवृत्ति भित्तियन्त्र), (ख) लघुविषुवतीय धूप-घड़ी (ग) कर्क भचक्रयन्त्र (कर्कराशिवलय), (घ) अग्रायन्त्र,

(ण) स्थिरयन्त्र (नियत चक्रयन्त्र अन्तर्राष्ट्रीय सूर्य-घड़ी) 2- बृहत्त विषुवतीय सूर्य-घड़ी (बृहत्त सम्राट यन्त्र) 3- वलीय गोलाधयन्त्र (जयप्रकाशयन्त्र, भाग 2) 4- उन्तांश-दिगांशयन्त्र-2 (रामयन्त्र)।

**3- उज्जैन वेधशालाः-**

यह समुद्र तल से 492 मीटर (1500 फीट) ऊँचाई पर, देशान्तर-75 अंश 45 कला (ग्रीनविचके पूर्व) तथा अक्षांश-23 अंश 10 कला उत्तर पर है।

प्राचीन भारत के लिये उज्जैन वही था, जो आज की दुनिया के लिये ग्रीनविच है। प्राचीन हिन्दू खगोलविद् उज्जैन की स्थिति मुख्य मध्यान्ह रेखा पर मानते थे और खगोलीय गणनाएं खगोल विज्ञान की इस प्राचीन पीठ के मध्यान्ह बिन्दू के संदर्भ में ही की जाती थी।

प्राचीनकाल में यह भी मान्यता थी कि सूर्य अपने सुदूरतम उत्तरी अक्ष, जो उज्जैन के शिरोबिन्दु पर है, पहुंचने के बाद दक्षिण की ओर भ्रमण करने लगता है। यह वही बिन्दु था जहां प्राचीन लंका की मध्यान्ह रेखा, कर्कवृत्त को पार करती थी और इसलिये उज्जैन की मध्यान्ह रेख प्राचीन रेखा मानी जाती थी।

हिन्दू परम्पराओं और धार्मिक आस्थाओं में स्वयं गहरी श्रद्धा रखनेवाले महाराज सवाई जयसिंह ने कर्कवृत्त के ठीक निकट स्थित उज्जैन की स्थिति की सत्यता को गहराई से समझा था और उन्होंने अपनी 5 खगोलीय वेधशालाओं में से तीसरी वेधशाला यहां स्थापित करने का निर्णय लिया, जिसके लिये मुगल-सम्राट मोहम्म्द शाह ने इन्हें मालवा का का प्रशासक नियुक्त किया था।

जयपुर के महाराजा सवाई माधोसिंह-द्वितीय ने सन् 1922 ई. में इस वेधशाला का जीर्णोद्धार कराया। उज्ञैन जन्तर-महल के यन्त्रों का विवरण इस प्रकार हैः-

1- विषुवत्तीय सूर्य-घड़ी (लघु-सम्राट यन्त्र), 2- गोलाकार धूप घड़ी (नाड़िवलययन्त्र), 3- दिगांशायन्त्र, 4- मध्यान्ह भित्तियन्त्र (दक्षिणावर्तीय याम्योत्तर भित्तियन्त्र), 5- क्षितिजीय धूप-घड़ी, 6- क्षितिजीय समतलीय यन्त्र, (शंकुयन्त्र)। यह अनूठा शंकुयन्त्र एक मात्र उज्ञैन वेधशाला में ही उपलब्ध है। यह उत्तर 25° 20°' तथा देशान्तर ग्रीनविच के पूर्व 83°2' स्थित है।

**4- वाराणसी वेधशालाः-**

वाराणसी प्राचीनकाल से धार्मिक आस्था, कला, संस्कृति और विद्या का एक महान परम्परागत केन्द्र रहा है। काशी और बनारस के नाम से भी जानेवाली यह नगरी सभी शास्त्रों का अध्ययन-केन्द्र रही है। अन्य विद्याओं के साथ-साथ खगोल-विज्ञान और ज्योतिष के अध्ययन की भी यहां परम्परा थी। इसलिये जयपुर के महाराज सवाई जयसिंह (द्वितीय) ने इस ज्ञानपीठ में गंगा के तट पर एक वैज्ञानिक संरचनापूर्ण वेधशाला का निर्माण कराया।

सवाई जयसिंह ने अपनी चतुर्थ वेधशाला (जन्तर-मन्तर) के निर्माण के लिये अपने प्रतिष्ठित पूर्वज, आमेर के राजा मानसिंह द्वारा निर्मित महल क्षेत्र में स्थित मानमंदिर के अहाते को चुना। मान मंदिर वेधशाला प्रसिद्ध दशाश्वमेध-घाट के कुछ सैकड़ा गज दूरी स्थित है। इस वेधशाला का निर्माण मानमंदिर क्षेत्र में सन् 1737 ई. में कराया गया था। इस कार्य में महाराजा के दरबारी खगोलविदों में पण्डित जगन्नाथ सम्राट और पण्डित केवलराम प्रमुख सहयोगी थे। यह विश्व की श्रेष्ठ, सुसज्जित वेधशालाओं में-इस वेधशाला के खगोलीय यन्त्र इस प्रकार हैः-

1- विषुवतीय सूर्य-घड़ी (सम्राट यंत्र) (लघु विषुवतीय सूर्य-घड़ी), 2- लघु विषुवतीय धूप घड़ी एवं ध्रूवदर्शक-यंत्र, 3- दक्षिणोवृत्ति भित्तियन्त्र, 4- दिगांशयन्त्र, 5- गोलाकार धूप-घड़ी (नाड़िवलय यन्त्र)।

**5- मथुरा वेधशालाः-**

यह समुद्रतल से 600 फीट ऊंचाई पर, देशान्तर-ग्रीनविचके पूर्व 77°42' तथा अक्षांश-27°28' उत्तर पर स्थित है।

महाराजा जयसिंह ने सन् 1738 ई. के आसपास यहां कई खगोलीय यंत्रों का निर्माण कराया था। इस वेधशाला के निर्माण के लिये महाराज ने शाही किले की छत को चुना था, जिसे कंस का महल कहा जाता था।

सोलहवी सदी के अन्त में महाराजा जयसिंह के पूर्वज आमेर के राजा मानसिंह ने इस किले का पुनर्निर्माण कराया और इसे सुदृढ़ किया। मथुरा वेधशाला के बारे में बहुत अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है परन्तु प्राप्त विवरण के अनुसार यहां कई लघु यंत्र थे, जैसेः-

1- अग्रयंत्र, 2- लघु सम्राट यंत्र, 3- विषवतीय धूपघड़ी, 4- दक्षिणोवर्ती भित्तियंत्र-ये यंत्र ईट और चूना पलस्तर से बने थे और ये जयपुर वेधशाला के यंत्रों के समरुप लघुयंत्र थे।

***मोक्ष का मार्ग, बाहर नहीं, परन्तु आत्मा में है। मार्ग पाया है वहीं मार्ग प्राप्त करायेगा।***

# भव रोगों की औषध है भावना

**दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम् ।**
**दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शनं मोक्ष-साधनम् ।।**

भाव या विचार एक ऐसी शक्ति है, जो क्षणभर में सब कुछ बदल देती है । नरक के अंधकारमय द्वार पर पहुंचे हुए को उठाकर स्वर्ग और मोक्ष तक पहुंचा देनेवाली शक्ति क्या है ? भाव ।

**भाव रसायन है....**

प्रसन्नचन्द्र राजर्षि प्रसंग में नन्द मणियार की भी चर्चा में नन्द सेठ का जीव अपनी बनाई बावड़ी में ही मेंढक बनकर फुदक-फुदक कर रहा है । कभी-कभी पश्चाताप के आँसू भी बहाता है कि मैंने अपनी ही निकृष्ठ भावना और यश की आसक्ति के कारण मनुष्य भव खोकर यह तिर्यंच भव प्राप्त किया है और एक दिन वहीं मेंढ्क सुनता है राजगृह में परमात्मा श्रीमहावीर का पधारना हुआ है । समवसरण लगा है । हजारों नर-नारी प्रभु के दर्शन करने जा रहे हैं । तो उसके मन में भी भक्ति की लहर उठती है, भावना की तरंग मचलती है- मैं भी चलूं ! कहाँ ? प्रभु के दर्शन करने ? उस विशाल समवसरण के बीच विराजमान प्रभु के दिव्य अतिशय सम्पन्न स्वरुप का दर्शन करुं ? भक्ति भाव से उनको नमन करके उनकी साक्षी से अपने पूर्वजन्म में किये पापों का प्रायश्चित करुं ! अपने श्रावकव्रतों में लगे अतिचारों की आलोचना करुं ! अपने श्रावकव्रतों में लगे अतिचारों की आलोचना करुं ! आत्मा को शुद्ध-निर्मल बनाऊँ ! कितनी उच्च भावना है, कितनी निर्मल और भक्ति रस भरी धारा बह रही है उसके वन में ? और उस नन्दा बावड़ी से निकलकर चल पड़ता है राजगृह के राजमार्ग पर फुदक-फुदककर बढ़ रहा है प्रभु समवसरण की तरफ। उसके मन में बसे है प्रभु ! उसकी स्मृति में विराजमान है देवाधिदेव ! उनके ध्यान, चिन्तन-स्मरण में मस्त हो रहा है। हृदय हर्ष से उछल रहा है । आनन्द के आँसू निकल रहे हैं- अहो ! आज का दिन धन्य है । आज में उन वीतराग परमात्मा के दर्शन करुंगा ! रोम-रोम पुलक रहा है । इस उत्साह में, उमंग से वह सब कुछ भूल जाता है । चल रहा है राजमार्ग के एक किनारे । मगधेश्वर श्रेणिक भी प्रभु की वंदना करने निकले हैं। उनकी सवारी उस मार्ग से आ रही है । आगे-आगे घुड़सवार सैनिक चल रहे। एक कियोर घोड़े के पांव के नीचे वहीं मेंढक आ जाता है । दब जाता है । कुचल गया उसका शरीर । रक्त बहने लगा । माँस निकल गया। घायल हो गया। कोई बड़ा प्राणी होता तो लोग इकट्ठे हो जाते, देखते क्या हुआ। कौन है यह ? परन्तु विचारे मेंढक को कौन पूछे।

*आचार्यों ने कहा है- भवो जन्म-जरा मृत्युः भावस्तस्य निवारणम् । जन्म-जरा-मृत्यु रुप भव का निवारण करने वाला भाव है । इसलिये भावों को सदा पवित्र रखो, निर्मल रखो, शुभ रखो । भाव यदि पवित्र है, तो संसार में सभी जगह आपको पवित्रता मिलेगी । भाव यदि मलिन है तो जहां भी जाओगे मलिनता ही मिलेगी । कहते हैं- कुएँ में झाँककर आवाज दो, जो लौटकर वहीं आवाज वापस आपके पास आयेगी । हम कहते हैं जैसी ध्वनि, वैसी प्रतिध्वनि । पहाड़ की चोंटी पर खड़े होकर पुकारो- दुष्ट को पकड़ो, मारो । तो लौटकर प्रतिध्वनि क्या आयेगी ? दुष्ट को पकड़ो, मारो ! यदि आप कहेंगे- आओ मित्रों ! स्वागत है । तो वही प्रतिध्वनि गूजेंगी- आओ मित्रों ! स्वागत है ।*

सबकी अन्तर पुकार सुन रहे हैं। यहीं बैठे-बैठे मैं आपकी वंदना कर रहा हूं। मेरे शरीर में अब शक्ति नहीं है कि आगे आऊँ ? यहीं से मेरी वन्दना स्वीकारो प्रभु ! मैं अपने पूर्वजन्म में किये पापों का प्रायश्चित करता हूं, आपकी साक्षी से मेरा कल्याण करो प्रभु ! आप तो तिन्नाणं तारयाणं हो, मेरे सब अपराध क्षमा करो प्रभु ! इस प्रकार अत्यंत भक्तिपूर्वक प्रभु को वन्दन-नमस्कार करते हुए प्राण त्याग देता है। वह मेंढक मरकर कहां जाता है ? कौन बनता है ? देव ! हाँ, महान ऋद्धिशाली दर्दुरांक देव बनता है वह। तिर्यंच भव से देव भव

तक किसने पहुंचाया ? भावना ने ! भावना दिव्य रसायन है, जो जीवन में आमूलचूल परिवर्तन कर देती है। भव रोगविनाशिनी भावना-जन्म-जन्म के रोगों का नाश करने वाली रसायन भावना है। इसलिये भावना भवनाशिनी कहा जाता है-यथा मतिः तथा गतिः। -जैसे मति होती है, जैसी वृत्ति ! वैसी ही गति होती है।

मेंढक ने प्रभु के दर्शन कैसे किये ? मन से, भावना से, इसलिये आचार्यो ने फरमाया है-

**दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम्।**
**दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शनं मोक्ष-साधनम्॥**

जिसने भाव-पूर्वक प्रभु के दर्शन कर लिए तो उसके जन्म-जन्म के पापों का नाश हो गया। आचार्य श्री हेमचन्द्र सूरि वीतरागस्तोत्र में प्रभु के भाव-दर्शन में लीन होकर फरमाते हैं-

**भव-रोगार्तजन्तूनाम गदंकार दर्शनः।**
**निःश्रेयस-श्री रमणः श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तु वः॥**

भयंकर रोगों से पीड़ित अंतिम सांस गिनते हुए रोगी को डॉक्टर या वैद्य का दर्शन ही मन को सान्त्वना और आश्वासन देने वाला होता है, उसी प्रकार भव रोग से पीड़ित प्राणियों को प्रभु, आपका दर्शन ही सान्त्वना देने वाला है, उनकी पीड़ा हरने वाला है। मोक्ष लक्ष्मी के स्वामी प्रभु श्रेयांसनाथ ! आपका दर्शन हम सबको कल्याणकारी हो।

आचार्यश्री मानतुंगसूरि फरमाते हैं-

**त्वत् संस्तेवन भव सन्तति सन्निबद्धं,**
**पापं क्षणात् क्षयुमुपैति शरीरभाजाम्।**
**आकान्त लोकमलिनीलमन्धकारम् !**
**सूयांशु मित्रामिव शार्वमन्धकारम् !**

प्रभो ! भावपूर्वक जो आपकी स्तुति करता है, उसके भव-भव के संचित पाप कर्म क्षणभर में ही क्षय हो जाते हैं। जैसे सूर्य कैसे उदय होते ही संसार में फैला अन्धकार भाग जाता है और प्रकाश जगमगाने लगता है, वैसे ही आपकी भाव वन्दना करने वालों के पापों का अंधकार नष्ट हो जाता है।

भगवान कहां विराजमान होते हैं ? मंदिर में ? नहीं, मंदिर तो एक आधार है, प्रतिमाजी की स्थापना का, परन्तु भगवान तो भाव में रहते हैं- भावेषु विद्यते देव स्तस्माद् भावों हि कारणम् ! - भावों में भगवान है- मन में प्रभु है तो चाहे जहां चले जाओ, आपको उनका दर्शन हो जायेगा।

**दिल में है तसवीरें-यार की,**
**जब जरा गर्दन झुकाई देख ली !**

कबीरदास ने कहा है-

**मुझको कहां ढूंढे बन्दे, मैं तो तेरे पास में।**
**ना मैं मक्का, ना मैं काशी ना काया कैलाशं में॥**

मैं तो हूं विश्वास में।

प्रभु का निवास विश्वास में है। भावना में है। भाव से भव का निवारण होता है।

***वैज्ञानिकों ने तो परीक्षण करके यहां तक बताया है, कोई आदमी कुल्हाड़ी लेकर वृक्षों को काटने के लिये जाता है तो उसके पास आने पर ही वृक्ष कुम्हलाने व सिकुड़ने लगते हैं। उनके अंदर भय की आकुलता छाने लगती है। यदि आप फूल तोड़ने जाते हैं तो आपकी आहट से ही फूल मुर्झाने लग जाते हैं। उनमें कम्पन्न पैदा हो जाता है। क्योंकि आपके मन में हिंसा की भावना है। फूल तोड़ने की भावना है तो उसका प्रभाव उन पर अवश्य ही पड़ता है।***

**चेहरा है भावों का दर्पणः-**

निशासनरत्न, पूज्य गुरुदेव एक दृष्टांत फरमाते थे। एक राजा था। राजा का जन्म-दिवस आया तो नगर में खूब सजावट हुई। बहुत बड़ा उत्सव मनाया गया। नगर के सेठ-साहूकार तरह-तरह के उपहार सजाकर राजा को भेंट करने के लिये आये। हालांकि राजा के यहां कोई कमी नहीं होती, परन्तु यह एक व्यावहारिक बात है कि आप किसी के जन्म दिन या अन्य किसी शुभ प्रसंग पर जाते हैं तो उसके प्रति शुभ कामना प्रकट करने के रुप में कुछ उपहार भी साथ लेकर जाते हैं।

नीतिकार कहता हैः-

**रिक्तपाणिनं पश्येत, राजानं देवतां गुरुम्।**

राजा, दूवता और गुरु के पास किसी खाली हाथ न जायें। प्रसिद्ध लेखक डेल कारनेगी ने लिखा है- किसी के घर शुभ प्रसंग पर जाओ तो खाली हाथ मत जाओ। कोई कीमती आभूषण ले जाता है, कोई मिठाईयाँ तो कोई फूलों का गुलदस्ता ही ले जाता है। राजा के जन्म-दिन पर लोग बधाई देने आते

हैं और तरह-तरह के सुन्दर मूल्यवान उपहार भेंट कर रहे हैं। एक चंदन का व्यापारी भी चन्दन की एक सुन्दर कलाकृति लेकर आता है। मंत्री उसका परिचय कराता है। सेठ राजा को नमस्कार करके कलाकृति भेंट करता है और जन्मदिन की मंगल कामना करता है। सेठ को देखते ही राजा के मन में प्रेम की जगह द्वेष जाग उठता है। सोचता है- यह यहां क्यों आया ? बड़ा दुष्ट आदमी है, ऐसे आदमी करें तो जेल में बन्द करा देना चाहिये या तुरन्त फाँसी पर लटका देना चाहिये।

सेठ उपहार भेंट कर बधाई देकर चला जाता है। राजा ने भी उपहार रख लिया, मुंह से कुछ नहीं बोला। परन्तु उसे बड़ा आश्चर्य हुआ- मैं इस सेठ को जानता ही नहीं, इसने कभी मेरा कोई अहित नहीं किया, फिर मेरे मन में ऐसे विचार क्यों आये ? इसको देखते ही मेरे मन में द्वेष उत्पन्न क्यों हुआ ? बहुत देर तक राजा अपना मनोविश्लेषण करता रहा, परन्तु कुछ भी समझ में नहीं आया । पहेली नहीं सुलझी। राजा ने मौका देखकर मंत्री से कहा- इसका कारण क्या है ? अमुक चन्दन के व्यापारी को देखकर मेरे मन में इस प्रकार का द्वेष भाव क्यों आया ? जबकि बाकी सब लोगों से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। किन्तु जैसे ही देखा, मेरे मन में क्रोध उमड़ पड़ा।

मंत्री बड़ा चतुर था, नीतिज्ञ था । उसने कहा- महाराज ! मैं पता लगाऊंगा। दो-चार दिन बाद नगर-भ्रमण करता-करता मंत्री सेठ की दुकान पर पहुंच गया। बातचीत करते-करते पूछा-सेठजी, काम धंधा कैसे चल रहा है ?

सेठ ने कहा- मंत्रीजी, धंधा तो बहुत मंदा है। चंदन के माल से गोदाम भरे है, माल बिक ही नहीं रहा है। सारी रकम फँसी पड़ी है। ब्याज-भाड़ा ही खाये जा रहे हैं।

मंत्री समझ गया। उसने कहा- महाराज के भोजन के लिये चन्दन की लकड़ियाँ चाहिये। वेद्यराज ने कहा-हे महाराज का भोजन चन्दन की लकड़ियों से बनना चाहिये। इसलिये आप प्रतिदिन एक मन चन्दन भोजनशाला के लिए भिजवाते रहिये और इसकी रकम राजकोष से मंगाते रहना।

अंधे को क्या चाहिये ? दो आँखें ! सेठ को तो मुंह मांगी मुराद मिल गई। ऐसी मंदी में राज एक मन चन्दन बिकता रहेगा-बस, हो गया वास-न्यास। सेठ सोचता है- महाराज चिरकाल तक राज करते रहे, तो मेरा एक मन चन्दन रोज बिकता रहेगा । राजा दीर्घायु हो । दीपावली का समय आया। नगर के सेठ-साहूकार महाराज से मिलने भेंट देने आने लगे। चन्दन का वह व्यापारी भी आया और एक नया उपहार लेकर जैसे ही राजा के सामने आया, राजा के मन में प्रेम भाव उमड़ पड़ा। ऐसा लगा जैसे कोई पुराना मित्र है, स्वजन है। राजा ने उपहार ले लिया।

दो दिन बाद फिर मंत्री से कहा- यह क्या बात है ? विचारों में परिवर्तन क्यों आया ? इस बार उसी चन्दन व्यापारी को देखकर मेरे मन में प्रेम उमड़ा और मेरा मन हुआ उससे गले लगाकर मिलूं ? यह बात क्या है ?

मंत्री ने कहा- महाराज ! यह सब भावों का प्रभाव है। विचारों का खेल है। आपके जन्म-दिन पर जब वह चन्दन व्यापारी आया तो उसका धंधा बड़ा मंदा चल रहा था। उसके मन में विचार आया- यदि राजा का स्वर्गवास हो जाय, तो सौ-दो सौ मन चन्दन बिक जावेगा । मेरा घाटा निकल जायेगा। इस प्रकार उसके मन में आपकी मृत्यु की कामना का चित्र बन रहा था। उन्हीं दुर्भावों का प्रतिबिम्ब आपके मन पर पड़ा। बुरा विचार हमेशा बुराई को ही जन्म देना है। सेठ के प्रति आपके मन में भी द्वेष भाव उमड़ा। किन्तु इस बार प्रेम क्यों उमड़ पड़ा ? राजा ने पूछा।

मंत्री ने पूरी घटना सुनाकर कहा- महाराज ! अब वह सोचता है, आप दीर्घायु हो। जब तक आप विराजमान रहेंगे, राज एक मन चन्दन बिकता रहेगा। इसलिये वह मन से आपके दीर्घायु की, आरोग्य की कामना करता है। उसके मन में आपके प्रति शुभ भाव आये तो उनकी प्रतिक्रिया आपके मन पर भी हुई। राजा सुनकर आश्चर्यचकित रह गया। आश्चर्य तो आपको भी रहा होगा, परन्तु यह एक तथ्य है, सत्य है कि जैसे विचार आपके मन में होंगे, दूसरों के मन में भी वैसा ही प्रतिक्रिया होगी। बच्चे को प्यार से पुकारो तो वह खुश हो जाता है और घूर कर देखो तो वह भयभीत हो जाता है। मुंह से कुछ भी बोलो तब भी मनोभावों का प्रतिबिम्ब उसके मन पर पड़ ही जाता है।

***❊ निराबाध रुप से जिसकी मनोवृत्ति प्रवाहित रहती है, संकल्प-विकल्पों की मंदता जिसको हो गई है, पंच विषयों से विरक्त बुद्धि के अंकुर जिसके फुटे हैं, क्लेश के कारणों को जिसने निर्मूल किया है, अनेकांत-दृष्टियुक्त एकान्त दृष्टि का जो सेवन किया करता है, जिसकी मात्र शुद्ध वृत्ति ही है, ऐसा प्रतापी पुरुष जयवान हो।***

# अन्तर्जगत् की यात्रा

**अध्यात्म**-साधना बहिर्जगत् से अन्तर्जगत् की यात्रा है। इसमें व्यक्ति को अपनी चित्तवृत्तियाँ बहिर्मुखी से अन्तर्मुखी बनानी होती है। बाहर कोलाहल है, प्रवृत्तियाँ है, जबकि अंदर गहरी शांति है, सुख के स्त्रोत है, अनंत आनंद के निर्झर बहते हैं।

एक बार एक संत ने ''जोड'' से कहा कि- ''कभी-कभी तुम भीतर की भी यात्रा कर लिया करो। भीतर जाने के लिए किसी भी सोच विचार की जरुरत नहीं होती है फिर तुम तो अपने युग के बहुत बड़े विचारक हो।'' जोड ने अपने मन में सोचा- ''संत भी जाने की बहुत कह रहे हैं। चलो, एक बार भीतर की यात्रा कर ली जाए।'' संयोगवश जोड बीमार हो गए। पलंग पर जाकर लेट गए। बाहर की प्रवृत्तियों पर रोक लगाई। ''लेटे-लेटे क्या करें ?'' यह सोच जोड ने भीतर जाने का मन बना लिया।

उन्होंने पहले शरीर को निश्चेष्ट किया। अंदर जाने की यात्रा प्रारंभ की। ज्यों-ज्यों वे भीतर की ओर आते, त्यों-त्यों उनके विचार मार्ग में अवरोधक बनते। भीतर जाने का वह बहुत प्रयत्न करते जा नहीं पाते। विचार शून्य होते ही वे भीतर प्रवेश कर गए। भीतर देखा कि अनंत प्रकाश वहां जगमगा रहा है, ज्ञान की अखण्ड ज्योति वहां जल रही है, उनमें एक ''अपूर्वकरण'' की स्थिति पैदा हुई। परम शांति का अनुभव हुआ। न कोई हलचल है, न कोलाहल। निस्तब्धता ही निस्तब्धता छायी हुई थी। भीतर से बाहर आए तो यहां भी उन्हें अब शांति महसूस हुई थी। क्योंकि उनकी प्रवृत्तियाँ जो चंचल थी, बहिर्मुखी थी, अब अन्तर्मुखी हो गयी।

एक बार जो अनंत के अभिदर्शन कर लेता है, अमृत के निर्झर को पा लेता है तो फिर हर जगह अनंतता ही अनंतता दिखाई देती है। उसके लिये अमृत चारों ओर बिखारा हुआ होता है।

अध्यात्म-साधना में चार तत्व प्रमुख होते हैं। इन तत्वों को जानना परमावश्यक होता है। ये तत्व है 1- आस्रव 2- कर्म 3- संवर तथा 4- तप।

जिससे दुःख का सृजन होता है वह आस्रव कहलाता है और जो दुःख है वह कर्म है जिससे दुःख का निरोध होता है संवर और जिससे दुःख क्षीण होता है वह है तप। वास्तव में आस्रव दुःखों का सर्जक है तथा संवर और तप नए पुराने सभी प्रकार के दुःखों से मुक्त होने की एक प्रक्रिया है। दुःखों से पूर्णत मुक्त होने पर ही चैतन्य प्रकट होता है।

इस प्रकार अध्यात्म-विकास के मुख्यतः दो उपाय है- एक, संवर योग और दूसरा, तपोयोग। संवर के द्वारा नए-नए दुःखों पर रोक लगाई जाती है। दुःखों का सृजन रुक जाता है। अन्तर्दृष्टि वहां जगी होती है। समता, अप्रमाद और वीतरागता वहां विकसित रुप में रहती है, जिसके कारण विभिन्न माध्यमों से आने वाले दुःखों का निरोध हो जाता है।

तपोयोग में दुःख का निरोध और क्षय दोनों ही होते है। वास्तव में तपोयोग जीवन के मैल को मेटता है। उसके जीवन का कंचन चमक-दमक उठता है। कहा भी है-

***तप करने से ही तन की तपन मिटा करती है।***
***राग-द्वेष की मन पर छायी परत हटा करती है।***
***यह जीवन कंचन-सा तब बनता है मानव का-***
***जब मानव मन से कर्मों की धुन्ध छंटा करती है॥***

इस प्रकार तपोयोग के माध्यम से प्रस्तुत शक्ति-ऊर्जा को जगाया जाता है। एक मुक्तक देखिए- जीवन को तपाओ कंचन-सा चमकने लगेगा।

**अंधेरी रात में यह सितारे-सा दमकने लगेगा।**
**तपस्या में तो वह शक्ति होती है साथी।**
**कि पानी भी आग बन धधकने लगेगा।**

तपोयोग के लिए ये चार साधन यानी उपाय है- 1- आहार शुद्धि 2- आसन या काय-क्लेश, 3- इन्द्रिय संयम तथा 4- ध्यान।

पहले दो शरीर को अध्यात्म की ओर प्रवृत्त करने के साधन है। बाद के दो आध्यात्म-विकास के उपाय हैं।

भगवान श्रीमहावीर ने ध्यान से पहले संयम की बात कही है। ध्यान से आप शक्ति-ऊर्जा अर्जित कर सकते है। आत्म-विश्वास, आंतरिक क्षमता उत्पन्न कर सकते हैं। इतना ही नहीं देहासक्ति को विसर्जित कर चेतना का विकास कर सकते हैं।

कोलम्बिया विश्वविद्यालय के जे.एस. लिफ्टन एवं जे.जे. मारकैन ने एक प्रयोग किया। इसमें उन्होंने लगभग सौ मरीजों का अध्ययन किया है। वे रोगी किसी न किसी निराशा से पीड़ित थे। उन्हें योग-साधना में प्रवृत्त किया गया, योग का

अभ्यास कराया गया। इसमें उन्हें काफी सफलता मिली। जितने भी रोगी थे, उनमें जीवन शक्ति बढ़ी। आत्म-विश्वास की भावना का वर्द्धन हुआ। दुःख एवं आंतरिक वेदना पर नियंत्रण रखने की शक्ति जागृत हुई है।

ध्यान योग के माध्यम से मानसिक रोगों, जैसे खिन्नता, अवसाद, आंतरिक वेदना इत्यादि का सरलता पूर्वक निदान किया जा सकता है। योग साधना से शारीरिक रोग भी ठीक किये जा सकते है, जैसे- रीढ़ की हड्डी का सीधा हो जाना, लीवर गुर्दे, हृदय, दमा आदि रोगों से मुक्ति ध्यान-साधना से जहां चिंतायें, तनाव व अनिद्रा आदि मनो शारीरिक व्याधियाँ दूर की जा सकती है वहां वृद्धों में नवीन शक्ति, स्फूर्ति, आशा और उत्साह को भी पैदा किया जा सकता है। ध्यान-योग अंदर की प्रसुप्त शक्तियों को जगाता है।

यदि साधना में संयम का अभाव है तो यह अर्जित शक्तियां राग-द्वेष से जुड़कर अशुभ कर्म में प्रवृत्त होगी। यानी दुरुपयोग की संभावनाएं वहां बनी रहती है। जैसा कि आपने सुना होगा कि अमुक ऋषि या तापसी ने किसी को शाप या वरदान दे दिया यह संयम के अभाव का ही परिणाम है। इसलिए पहले तीन गुप्तियों-मनोगुप्ति, वचन गुप्ति, कायगुप्ति का अभ्यास किया जाता है फिर संयम की साधना की जाती है तब ध्यान में प्रवृत्त हुआ जाता है।

इस प्रकार की क्रमबद्ध जो साधना की जाती है उस साधना से साधक में वीतराग-भाव की सिद्धि होती है। संयम को साधे बिना साधक को कभी भी ध्यान में प्रयुक्त नहीं होना चाहिये। व्यवहार सूत्र का एक विधान है जिसमें कहा गया है कि ''जो साधक चौदह वर्षो तक संयम की साधना कर चुका है, वह ''स्वप्न भावना'' को पढ़ सकता है। पन्द्रह के बाद ''चारण भावना'' सोलह वर्ष के बाद ''तेजोनिसर्ग'' सत्राह वर्ष के बाद ''आशीविष भावना'' और अठारह वर्ष के बाद ''दृष्टिविष भावना'' का अध्ययन कर सकता है।'' वास्तव में ये ग्रंथ विशिष्ट ऋद्धियों की साधना-पद्धति का प्रतिपादान करते है।

यदि कोई साधक संयम की साधना किये बिना इन ग्रंथों के आधार पर साधना में प्रवृत्त होता है तो वह इन ऋद्धियों का दुरुपयोग ही करेगा। वास्तव में संयमी साधक अर्चना, रचना, वंदना, पूजा, ऋद्धि, सत्कार और सम्मान आदि की मन में भी अभिलाषा नहीं रखते।

अध्यात्म-साधना से साधक को दो प्रकार की आंतरिक उपलब्धियाँ प्राप्त होती है- एक, ऋद्धियां और दूसरी, वीतरागता। इसमें वीतरागता ही साथ है। वीतरागता का मार्ग अभीष्ट लक्ष्य को साकार करता है जो ऋद्धियों में बह जाता है उसे संयम-साधना में जरुर प्रवृत्त रहना चाहिये, नहीं तो ऋद्धियों का उपयोग साधक गलत तरीके से कर सकता है। ऋद्धिधारक भी अभीष्ट लक्ष्य को साकार कर सकता है यदि उसमें ध्यान का प्रवाह वीतरागता की ओर बना रहे और वह इन प्राप्त ऋद्धियों का प्रयोग न करें।

इस प्रकार ध्यान की दो धाराएं बहती हैं- एक धारा ऋद्धि की ओर जाती है और दूसरी धारा वीतरागता की ओर। अध्यात्म के क्षेत्र में वीतरागता की धारा ही अधिक मूल्यवान है। प्रायः लोग यह पूछ बैठते हैं कि आपने ध्यान किया ? क्या उपलब्धि हुई ? यदि आपको कुछ भी उपलब्ध नहीं हुआ है, आपकी ध्यान-साधना बेकार है और आप यदि कहेंगे कि मैं जलमार्ग, वायुमार्ग, अंगारों आदि पर चल सकता हूं तो लोग आपको सम्मान देंगे।

लोगों की धारणा है कि ध्यान से ऐसी चमत्कारिक शक्ति अर्जित न की तो ध्यान-साधना का कोई महत्व नहीं है। वे यह नहीं जानते कि ऋद्धियाँ मन को शांति, समत्व व संतुलन नहीं दे सकती। जगत में रहे और मन में कोई समस्या न हो, इससे बड़ी और उपलब्धि क्या होगी ? वीतरागता पर चलने वाला साधक इस स्थिति को प्राप्त होता हुआ अपनी आत्मा का उत्थान करता है।

इस प्रकार अध्यात्म-साधना में अन्तःकरण पर संकीर्णता, मोह-ममता, राग-द्वेष, कषाय तथा मिथ्यात्व आदि की चढ़ी पर्तो को उघाड़ते हुए अन्तश्चेतना को परिष्कृत किया जाता है, जहां सत्य जाना नहीं जाता अपितु जिया जाता है।

***विश्वास ही मानव जीवन में सबसे बड़ी शक्ति है। विश्वास का बल ही मनुष्य को संकटों से पार कराता है। उसे लक्ष्य पर पहुंचाता है। दृढ़ विश्वासी कभी हारता नहीं, थकता नहीं, मिटता नहीं, मरता नहीं। विश्वास अपने आप में अमर औषध है। विश्वास जीवन है और अविश्वास मृत्यु। वीतराग वाणी पर दृढ़विश्वास ही मोक्ष प्राप्त कराता है।***

# गौ माता पर मंडराता संकट...!

* मेनका गांधी

**भारत** द्वारा किये जा रहे मांस निर्यात को बंद करने के पक्ष में केन्द्र में सत्तारुढ़ सरकार के भीतर से ही एक स्वर मुखर हुआ है। यह स्वर है सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री श्रीमती मेनका गांधी का। श्रीमती इंदिरा गांधी के कनिष्ठ पुत्र संजय गांधी की पत्नी के रुप में तो वे जानी ही जाती रही है परन्तु अब यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के लिए संघर्षरत हैं।

उन्होंने हाल में ही राजधानी से प्रकाशित प्रमुख साप्ताहिक पांचजन्य को दी गई एक भेंट वार्ता में पर्यावरण और मांस निर्यात से जुड़े अनेक ज्वलंत प्रश्नों पर जो दो टूक बातें कहीं है उसमें गोहत्या के विरोध में भी अपना सशक्त स्वर उभरा है उस भेंटवार्ता के गौरक्षा संबंध कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं।

भारतवासी गाय को माता कहते है, लेकिन गाय के साथ यहां जो क्रूर व्यवहार हो रहा है, उसे वे चुपचाप देख रहे है। गाय पर मंडरा रहे संकट पर वे चुप है। यहां गाय के चमड़ेसे बनी वस्तुओं का प्रयोग होता है, गाय का मांस और चमड़ा निर्यात किया जाता है, बेहद क्रूर ढंग से उनका वध किया जाता है। हम अपने आपको यह कह कर धन्य मानते हैं कि हम दुग्ध उत्पादन में सबसे आगे हैं। इसके लिये हम हजारों गायों का कृत्रिम गर्भाधान कराते हैं। बछड़ों को तुरन्त उनसे दूर करके मार डाला जाता है। गायों से ज्यादा दूध प्राप्त करने के लिये उन्हें दिन में दो-दो बार इन्जेक्शन लगाया जाता है।

गाय एक ऐसा जानवर है, जो अपने जीवन के अंत तक हमारी अर्थव्यवस्था के लिये बहुत उपयोगी है। यदि देखें तो गाय के गोबर के सदुपयोग से ही हम अपने देश का कर्जा चुका सकते हैं। पूछिये कैसे ? वह ऐसे कि हम खाद के रुप में सिर्फ गाय का गोबर प्रयोग करें तो विदेशों से यूरिया, रासायनिक खादों-कीटाणुनाशकों का आयात बंद कर सकते हैं। यूरिया रासायनिक खाद और कीटाणुनाशक धरती को बहुत प्यासा बना देते हैं। लगातार इनके प्रयोग से एक फसल के लिए धरती को चार गुना पानी की जरुरत पड़ती है। यदि आपके पास खेतों के लिए पानी नहीं है तो आपकी फसल जल जायेगी। फिर जमीन को इनकी लत पड़ जाती है। हर साल जमीन पहले से ज्यादा कीटाणुनाशक, ज्यादा यूरिया और ज्यादा खाद मांगने लगती है। एक चीज और है कि इनके प्रयोग से मिट्टी को उर्वरा बनाने वाले कीटाणु मर जाते हैं जब आप केंचूए को मारेंगे, भंवरें को मारेंगे, तितली को मारेंगे तो आपको हजारों और मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। इसके अलावा इनके प्रयोग से शरीर में कैंसर की संभावना बहुत अधिक बढ़ जाती है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि सीधे ही कीटाणुनाशकों के प्रयोग से प्रति वर्ष 30 हजार किसानों की मौत हो जाती है। यदि हम गाय के गोबर के खाद का प्रयोग करें तो इन सब मुसीबतों से बच सकते हैं। उदाहरण के लिये हम मृत गाय के सींग में गोबर भर कर दो सप्ताह के लिए उसे जमीन में गाड़ दें तो दस एकड़ जमीन के लिए खाद की आपूर्ति हो सकती है। गोमूत्र बहुत उत्तम कीटनाशक है यदि आप सिर्फ गोबर और गोमूत्र पर अपनी खेती को केंद्रित करें तो पूरी अर्थव्यवस्था में बदलाव आ जाएगा।

यदि हम अपने जीवन से मवेशियों को हटा दें तो अर्थ व्यवस्था ध्वस्त हो जाएगी। हम जो सब्जी खाते हैं, उसकी कीमत सौ गुना हो जाएगी, क्योंकि गांवों से सब्जियां गायों, बैलों और भैंसों की पीठ पर लादकर शहर में आती है। यदि उन्हें खत्म कर दें तो गांवों से सब्जियां ट्रकों में ले जानी पड़ेगी जिसके लिये तेल आयात करना पड़ेगा। सड़कें बनानी पड़ेगी, अर्थात आपका राष्ट्रीय ऋण कई गुना ज्यादा हो जायेगा।

यदि गोवंश को बूढ़ा समझ कर कसाईखानों में कटने के लिए भेज दिया तो पूरी भूस्वामित्व व्यवस्था को बदलना होगा। खेत जोतने के लिये ट्रेक्टर में पैसा लगेगा या फिर एक आदमी को 50-50 एकड़ जमीन का स्वामी बनाना होगा। यानी गरीब से जमीन लेकर अमीर को देनी होगी। यदि गोवंश नहीं होगा तो गरीबों की जमीन बिना जोते हुए रह जाएगी। इस प्रकार हमारी अर्थव्यवस्था गाय के उपयोग पर टिकी है। इसीलिए हम उसे माँ कहते हैं, सिर्फ दूध के लिये उसे माँ नहीं कहते। जिस दिन हमारे यहां से गायें हट जाएगी। यह देश खत्म हो जाएगा। कोई भी मजहब और धर्म व्यवस्था से अलग नहीं है। गोरक्षा के जितने भी अधिनियम हैं, वे सब कांग्रेस ने ही पारित किये हैं। कांग्रेस तो इसके खिलाफ है नहीं फिर सरकार किससे डर रही है। यदि आप डरते हैं कि पिछड़ा माना जाएगा, तो देश को बचाना पिछड़ा होना नहीं है। आज विश्व का हर वैज्ञानिक, हर अर्थशास्त्री, हर कृषि वैज्ञानिक

कह रहा है। गाय धर्म नहीं अर्थव्यवस्था है, तो मुझे समझ में नहीं आता कि गाय को बचाने में हमें हिचकिचाहट क्यों है ? वे लोग बेवकूफ हैं जो लोग कहते हैं कि गोरक्षा सेक्यूलरवाद के विरुद्ध है, मैं पूछती हूं कि क्या जानवर को। ऐसा जानवर जो जीवन भर आपको देगा ही देगा, पेड़ की तरह। अपने लिए कुछ नहीं मांगता। इसके पक्ष में अलबर्ट आईसराइन ने भी कहा, महात्मा गांधी ने भी कहा। जीव विज्ञान के लिए जिन-जिन वैज्ञानिकों को नोबल पुरस्कार मिला, उन्होंने जानवरों पर परीक्षण नहीं किया। तो क्या वे पिछड़े हुए है ?

हिंसा स्वयं में पिछड़ापन है। हमारे पूर्वज यदि जानवरों को, औरतों को मारते थे, तो क्या हम उनकी तरह बर्बर हो जाएं, सभ्यता वह होती है, जो आगे बढ़ती है, लेकिन लगता है हम हजारों साल पीछे वाली मनोवृत्ति की और लौट रहे हैं।

इसका (मांस के निर्यात) का कारण है कि हम अपनी अर्थव्यवस्था को समझते नहीं हैं। मांस निर्यात से हमें कोई लाभ नहीं हो रहा, बल्कि बड़ा घाटा हो रहा है। आप एक बकरे को सिर्फ ढाई सौ रुपये में विदेश में बेचते हैं जबकि एक बकरे को पालने में, भेजने में भारत का सीधा साठ हजार रुपया खर्च होता है और एक लाख रुपया उस पर अप्रत्यक्ष रुप से खर्च होता है।

# एक लोटा पानी

एक लोटा पानी ठोकर से नष्ट कर देनेवाले की यदि कोई उपालंभ दे तो इसका यह मतलब नहीं कि वह व्यक्ति बड़ा कंजूस है।

देहात में रहते हुए भी सेठजी के पास शहर सरीखे, सभी सुख-साधन थे। पूर्वजों की कमाई की बहुत बड़ी रकम भी सेठजी को मिली थी तथा पुरुषार्थ भी करते थे। सेठजी का ध्यान सदा धर्म और नीति की बात में लग रहा था। वे अनीति का एक पैसा भी इकट्ठा करना नहीं चाहते थे।

सेठजी के लड़के की शादी भी शहर के एक धनी सेठ की लड़की से हुई थी पर शादी के समय जो पुत्र-वधु स्वस्थ व सुन्दर थी वह दिन ब दिन दुबली होती जा रही थी। कारण जब पुत्र-वधु की ठोकर से एक लोटा पानी ढूल गया था तो सेठ ने पुत्र-वधु को ओलमा देते हुए कहा था कि इस प्रकार का अविवेक मुझे पसंद नहीं। बस इसी ओलंमे का कांटा उसे निर्बल बना रहा था। वह सोचती थी कि मैं किस घर में आ गई, जहां इतनी कंजूसी का साम्राज्य।

सेठ ने पुत्र-वधु के लिये वैद्य बुलाकर औषधी के लिये कहा तो वैद्य ने कहा कि सच्चे मोती की राख देने से तबीयत सुधर जायेगी। सेठ ने पांच तौला सच्चे मोती मंगवाये तथा वैद्य को देने लगे तो पुत्र-वधु ने इन्कार कर दिया तथा बोली- वैद्यजी को जाने दीजिये। बाद में बात का खुलासा करुंगी। वैद्य के जाने पर पुत्र-वधु बोली- मेरे मन में एक कांटा था कि मैं कैसे कंजुस घर आ गई। पर जब आप मेरे लिये पांच तोला खरे मोती देने लगे तो मुझे मालूम हुआ कि कहीं न कहीं मैं गलती पर हूं।

इस पर सेठ ने कहा कि -निरर्थक पानी ढुल जाने से मैंने ओलंमा दिया था। पानी पीने के काम आ जाता या बर्तन धोने के काम में आ जाता तो वह पानी किसी अर्थ में लगता। पानी घी से भी ज्यादा कीमती होता है, यह बात मैं मेरे जीवन की घटना से तुझे फिर कभी सुनाऊंगा। इस पर पुत्रवधु बोली कि कृपाकर मुझे वह बात अभी ही बता दीजिये तो सेठ ने कहाकि हमारे यहां से किसानों को उधार माल दिया जाता है तथा फसल आने पर हम उनके यहां से माल लाते हैं। इस प्रकार उनका कर्ज उतर जाता है। एक बार गरमी के दिनों में मैं जब दूसरे देहात से अपने घर आ रहा था तब रास्ते में मुझे जोर की प्यास लगी। आसपास कोई जलाशय नहीं था तभी एक लकड़ी काटनेवाला मुझे दिखाई दिया उसके पास पानी का बर्तन था। मैंने पानी मांगा तो बोला-आपके पास इस डिब्बे में क्या है ? मैंने कहा- गांव के पटेल ने ताजा घी दिया है। उसने कहा- एक लोटा पानी दूंगा तो एक लोटा घी लूंगा।

बोल, उस समय जबकि पानी के बिना मेरे प्राण निकलने वाले थे-मैं उस समय घी देता कि नहीं देता। सेठ ने पुत्रवधु से पूछा। पुत्रवधु बोली-देना ही था। सच है मेरी समझ में आ गया कि पानी घी से भी महंगा है तथा निरर्थक ढोलने से अनर्थ दण्ड के भागी बनते है।

***✻ अपने आपको भूल जाने रुप अज्ञान का नाश, ज्ञान प्राप्ति से ही होता है, ऐसा निःसंदेह मानो। ज्ञान की प्राप्ति ज्ञानी से ही होना चाहिये।***

# महाविदेह क्षेत्र और बीस विहरमान तीर्थंकर

**बीस विहरमान तीर्थंकर और उनकी बीस विशेषताएंः-**

1- भरत ऐरावत क्षेत्र की तरह महाविदेह क्षेत्र में एक के बाद एक ऐसे चौबीस तीर्थंकरों की व्यवस्था नहीं है। महाविदेह क्षेत्र की पुण्यवानी अनंतानंत और अद्‌भूत है, वहां सदाकाल बीस तीर्थंकर विचरते रहते हैं, उनके नाम भी हमेशा एक सरीखे ही रहते हैं इसलिये उन्हें जिनका कभी भी वियोग न हो, ऐसे विहरमान बीस तीर्थंकर भी कहते हैं।

2- महाविदेह क्षेत्र में बीस से कभी भी कम तीर्थंकर नहीं होते हैं। अतः उन्हें जयवंता जगदीश भी कहते है क्योंकि वे सभी साक्षात परमात्म स्वरुप में विद्‌यमान रहते हैं।

3- इस तरह महाविदेह क्षेत्र में तीर्थंकरों का कभी भी अभाव नहीं होता है।

4- महाविदेह क्षेत्र का समय सदाकाल एक सा ही रहता है और वहां सदैव चतुर्थ काल के प्रारंभकाल के समान समय रहता है।

5- महाविदेह क्षेत्र के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण इस तरह चार विभाग करने से पांचों महाविदेहों में 5द4=20 विभाग हुए। एक विभाग में एक, ऐसी बीस तीर्थंकर सदा विचरते हैं।

6- ये बीस विहरमान तीर्थंकर सदाकाल से धर्म-दीप को प्रदीप्त कर रहे हैं और करते रहेंगे।

7- महाविदेह क्षेत्र के इन बीसों का जन्म एक साथ सत्राहवें तीर्थंकर श्री कुंथुनाथजी के निर्वाण के बाद महाविदेह क्षेत्र में हुआ था।

8- 20 वें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी के निर्वाण के बाद महाविदेह क्षेत्र के इन तीर्थंकरों ने एक साथ दीक्षा ली।

9- बीसों विहारमान एक हजार वर्ष तक छद्‌मस्थ अवस्था में रहते है और इन्हें एक ही समय में केवलज्ञान, केवलदर्शन की प्राप्ति होती है।

10- भविष्यकाल की चौबीसी के सातवें तीर्थंकर श्री उदयप्रभस्वामी के निर्वाण के पश्चात बीसों विहारमान एक ही समय में मोक्ष पधारेंगे।

11- इसी समय महाविदेह क्षेत्र में दूसरे बीस विहरमान तीर्थकर पद को प्राप्त होंगे।

12- यह अटल नियम है कि बीस विहरमान तीर्थकर एक साथ जन्म लेते है, एक साथ दीक्षित होते है, एक साथ केवलज्ञान को प्राप्त होते हैं।

13- यह भी नियम है कि जब वर्तमान के बीस विहरमान तीर्थकर दीक्षित होते हैं तब भावी बीस विहरमान तीर्थकर जन्म लेते हैं।

14- जब वर्तमान के बीस विहरमान तीर्थकर केवल्य प्राप्त होते हैं तब भावी बीस विहरमान तीर्थकर दीक्षित होते है।

15- वर्तमान के जब बीस विहरमान तीर्थकर निर्वाण प्राप्त करते है तब भावी बीस विहरमान तीर्थकर केवलज्ञान को प्राप्त कर तीर्थकर पद पर आसीन हो जाते है और उसी समय अन्य स्थानों में बीस विहरमान तीर्थकरों का जन्म होता है।

16- प्रत्येक विहरमान तीर्थकर के 84-84 गणधर होते हैं।

17- प्रत्येक विहरमान तीर्थकर के साथ दस-दस लाख केवलज्ञानी परमात्मा रहते हैं।

18- प्रत्येक विहरमान तीर्थकर के साथ एक-एक अरब मुनिराज और इतनी ही साध्वियां होती है।

19- बीसों विहरमान तीर्थकरों के संघ में कुल मिलाकर दो करोड़ केवलज्ञानी, दो हजार करोड़ मुनिराज, दो हजार करोड़ साध्वियां होती है।

20-महाविदेह क्षेत्र में सदाकाल रहनेवाले विहरमान बीस तीर्थकरों के एक सरीखे नाम इस तरह हैः-

1- श्री सीमंधर स्वामी, 2- श्री युगमंधर स्वामी, 3- श्री बाहु स्वामी 4- श्री सुबाहु स्वामी, 5- श्री सुजातस्वामी, 6- श्री स्वयंप्रभ स्वामी, 7- श्री ऋषभानन स्वामी, 8- श्री अनन्तवीर्य स्वामी, 9- श्रीविशालस्वामी, 10- श्री वज्रधार स्वामी, 11-श्रीसूरप्रभस्वामी , 12- श्री चन्द्रानन स्वामी, 13- श्री चंद्रबाहु स्वामी, 14- श्री भुजंगस्वामी, 15- श्री ईश्वर स्वामी, 16- श्री नेमिप्रभ स्वामी, 17- श्री वीरसेन स्वामी, 18- श्री महाभद्र स्वामी, 19- श्री देवयशा स्वामी, 20- श्री अजितवीर्य स्वामी

## सीमंधर स्वामी का अधिक परिचयः-

भगवान सीमंधर स्वामी कौन है ? भगवान सीमंधर स्वामी वर्तमान तीर्थंकर भगवान है, जो हमारी जैसी ही दूसरी पृथ्वी पर विराजमान है। उनकी पूजा का महत्व यह है कि उनकी पूजा करने से, उनके सामने झुकने से वे हमें शाश्वत सुख का मार्ग दिखाएँगे और शाश्वत सुख प्राप्त करने का और मोक्ष प्राप्ति का मार्ग दिखाएँगे।

**भगवान सीमंधर स्वामी कहां पर है ?**

महाविदेह क्षेत्र में कुल 32 देश है, जिसमें से भगवान श्री सीमंधर स्वामी पुष्प कलावती देश की राजधानी पुंडरिक गिरी है। महाविदेह क्षेत्र हमारी पृथ्वी के उत्तर पूर्व दिशा में लाखों मील की दूरी पर है।

***सीमंधर स्वामी का अधिक परिचयः-***

भगवान सीमंधर स्वामी का जन्म हमारी पृथ्वी के सत्राहवें तीर्थंकर श्री कुंथुनाथ स्वामी और अठारहवें तीर्थंकर श्री अरहनाथ स्वामी के जीवनकाल के बीच में हुआ था। भगवान श्री सीमंधर स्वामी के पिताजी श्री श्रेयंस पुंडरिकगिरी के राजा थे। उनकी माता का नाम सात्यकी था। अत्यंत शुभ घड़ी में माता सात्यकी ने एक सुंदर और भव्य रुपवाले पुत्र को जन्म दिया। जन्म से ही बालक में मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधि ज्ञान थे। उनका शरीर लगभग 1500 फीट उंचा है। राजकुमारी रुकमणी को उनकी पत्नी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जब भगवान राम के पिता राजा दशरथ का राज्य हमारी पृथ्वी पर था, उस समय महाविदेह क्षेत्र में भगवान सीमंधर स्वामी ने दीक्षा अंगीकार करके संसार का त्याग किया था। यह वही समय था, जब हमारी पृथ्वी पर बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत स्वामी और इक्कीसवें तीर्थकर श्री नेमीनाथ की उपस्थिति के बीच का समय था। दीक्षा के समय उन्हें चौथा ज्ञान उद्भव हुआ, जिसे मनः पयार्य ज्ञान कहते हैं। एक हजार वर्ष तक के साधु जीवन, जिसके दौरान उनके सभी ज्ञानावरणीय कर्मो का नाश हुआ, उसके बाद भगवान को केवलज्ञान हुआ। भगवान के जगत कल्याण के इस कार्य में सहायता के लिये उनके साथ 84 गणधर, 10 लाख केवली (केवलज्ञान सहित), 10 करोड़ साधु, 10 करोड़ साध्वियां, 900 करोड़ पुरुष और 900 करोड़ विवाहित स्त्री-पुरुष (श्रावक-श्राविकाएं) हैं। उनके रक्षक देव-देवी श्री चांद्रायण यक्ष देव और श्री पाँचांगुली यक्षिणी देवी हैं।

महाविदेह क्षेत्र में भगवान सीमंधर स्वामी और अन्य उन्नीस तीर्थंकर अपने एक करोड़ अस्सी लाख और 400 हजार साल का जीवन पूर्ण करने के बाद में मोक्ष प्राप्ति करेंगे। उसी क्षण पर पृथ्वी पर अगली चौबीसी के नौवें तीर्थंकर श्री प्रोस्थिल स्वामी भी उपस्थित होंगे और आठवें तीर्थंकर श्री उदंग स्वामी का निर्वाण बस हुआ ही होगा।

**सीमंधर स्वामी मेरे लिये किस प्रकार अधिक हितकारी हो सकते हैं ?** तीर्थ का अर्थ है पूर्ण चंदर जिन्हें आत्मा का पूर्ण ज्ञान हो चुका है, तीर्थंकर भगवान श्री सीमंधर स्वामी महाविदेह क्षेत्र में हाजिर हैं। हमारी इस पृथ्वी (भरत क्षेत्र) पर पिछले 2547 साल से तीर्थंकरों का जन्म होना बंद हो चुका है। वर्तमान काल के सभी तीर्थंकरों में से सीमंधर स्वामी भगवान हमारी पृथ्वी के सबसे नजदीक हैं और उनका भरत क्षेत्र के जीवों के साथ ऋणानुबंध है। सीमंधर स्वामी भगवान की उम्र अभी 1,50,000 साल है और वे अभी अगले 1,25,000 सालों तक जीवित रहेंगे, अतः उनके प्रति भक्ति और समर्पण से हमारा अगला जन्म महाविदेह क्षेत्र में हो सकता है और भगवान सीमंधर स्वामी के दर्शन प्राप्त करके हम आत्यंतिक मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। सीमंधर स्वामी मुझे कैसे मदद रुप हो सकते हैं ? ''तीर्थंकर'' का मतलब ''पूर्णिमा का चंद्र'' (शाश्वत व पूर्ण आत्मा का ज्ञान-केवळज्ञान)। तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी हाल में महाविदेह क्षेत्र में मौजूद है। हमारी पृथ्वी पर, यानी भरत क्षेत्र में, पिछले करीब 2500 वर्षो से तीर्थंकर का जन्म नहीं हुआ। हाल में मौजूद सभी तीर्थंकरों में से सीमंधर स्वामी हमारे सबसे नजदीक है उनका भरत क्षेत्र से ऋणानुबंध है और हमारे मोक्ष की जिम्मेदारी ली है। सीमंधर स्वामी की आयु अभी डेढ़ लाख वर्ष की है और वे सवा लाख साल और जीनेवाले है। उनकी आराधना करके हम अगले भव में महाविदेह क्षेत्र में जन्म पाकर, उनके दर्शन करके आत्यंधिक मोक्ष पा सकते है...!

**बीस विहरमान के पांच कल्याणक एवं परिवारः-**

- ✻ च्यवन कल्याणक श्रावण वद एकम।
- ✻ जन्म कल्याणक वैशाख वद दसम।
- ✻ दीक्षा कल्याणक फाल्गुन सूद तीज।
- ✻ केवलज्ञान कल्याणक चैत्र सूद तीज।
- ✻ निर्वाण कल्याणक श्रावण वद तीज।
- ✻ जन्म राशि- धन, जन्म नक्षत्र-उत्तराषाढ़ा।

ये वो ही महाविदेह क्षेत्र है जहां भरत क्षेत्र का निवासी अगला जन्म वहां लेने की इच्छा करता है क्योंकि भरत क्षेत्र में आत्मा का मोक्ष नहीं होता ऐसा माना जाता है कि अंतिम मोक्षगामी श्री जम्बु स्वामी थे और मोक्ष के दरवाजे बंद हो गये। महाविदेह क्षेत्र से आत्मा का मोक्ष हो सकता है।

✻ अनु दीपक जैन, जयपुर, मो.नं. 9782499999

# आगमोद्धारक भविष्य फल जून-2021

**मेष–** आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, परिश्रम की अधिकता रहेगी एवं मित्रों का सहयोग शुभ फलकारी रहेगा। परिश्रम की अधिकता रहेगी एवं मित्रों का सहयोग शुभ फलकारी रहेगा। माह के उत्तरार्द्ध में पारिवारिक अशांति संभावित है।

**वृष–** आपके लिये यह माह सामान्य रहेगा। शत्रु निस्तेज होंगे परन्तु व्यापारिक प्रगति मध्यम गति से रहेगी। इस समय किसी प्रकार के ऋण आदि की संभावना भी बन सकती है।

**मिथुन–** आपके लिये यह माह शुभ फलदायक सिद्ध होगा। इस माह में क्रोध की अधिकता बने हुए कार्य बिगाड़ सकती है। अधिकारी वर्ग का सहयोग प्राप्त होगा।

**कर्क–** ये माह आपके लिये मिश्रित फलदायक रहेगा। व्यापारिक लाभ में बेहतर होंगे परन्तु कार्य की अधिकता रहेगी। व्यय की अधिकता रहेगी।

**सिंह–** ये माह शुभ फलदायक सिद्ध होगा। व्यापारिक लाभ में आशानुसार परिणाम प्राप्त होंगे। मान सम्मान में वृद्धि होगी। कोई नई योजना बन सकती है।

**कन्या–** यह माह आपके लिये शुभ फलदायक रहेगा, मित्रों तथा बंधुओं के सहयोग से अधूरे काम बनते नजर आएंगे। स्वास्थ्य हेतु अनुकूल समय रहेगा। इस समय किसी यात्रा आदि का योग बन सकता है।

**तुला–** यह समय आपके लिये मिश्रित फलदायक रहेगा। अधिकारी वर्ग के मार्गदर्शन से सफलता प्राप्त होगी। इस समय भाग्य वृद्धि का शुभ सहयोग मिलेगा। व्यापारिक गतिविधियों में लाभ एवं महिला वर्ग से बेहतर सहयोग प्राप्त होगा।

**वृश्चिक–** यह समय आपके लिये सामान्य फलदायक रहेगा। बनते हुए कार्यो में बाधा संभावित है। व्ययों की अधिकता से मन परेशान रहेगा। इस समय यात्रा आदि टालना बेहतर रहेगा।

**धनु–** यह माह आपके लिये मिश्रित फलदायक रहेगा। इस समय व्यापारिक लाभ में वृद्धि होगी परन्तु बाधा सहित धन प्राप्त होगा। स्वास्थ्य संबंधी समस्या उभर सकती है। इस समय किसी नए कार्य में निवेश करना उचित नहीं रहेगा।

**मकर–** यह समय आपके लिये शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक लाभ में वृद्धि होगी। नए निवेश की योजनाएं बनेंगी। इस समय स्व बुद्धि के चातुर्य से कार्य क्षेत्र का विस्तार होगा। मान-सम्मान में वृद्धि हेतु बेहतर समय रहेगा।

**कुम्भ–** आपके लिये यह समय सुख शांतिदायक रहेगा। पारिवारिक कार्यो में रुचि रहेगी तथा समाज में यश की बढ़ोतरी होगी। क्रोध पर अवश्य रुप से नियंत्रण रखें अन्यथा बनते हुए कार्य बिगड़ सकते हैं।

**मीन–** आपके लिये यह समय सामान्य फलदायक रहेगा। घरेलू वाद विवाद से मानसिक तनाव की स्थिति बन सकती है। परिवार में किसी प्रकार का विशेष आयोजन संभावित है।

## वर्ग पहेली क्रमांक-*313*

**✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | ■ | ■ | 2 | | 3 | 4 | ■ | 5 |
| 6 | | 7 | | ■ | 8 | | ■ | |
| | ■ | 9 | | 10 | ■ | 11 | 12 | |
| 13 | 14 | ■ | 15 | | 16 | ■ | 17 | |
| ■ | 18 | | ■ | ■ | 19 | | | ■ |
| 20 | | ■ | 21 | 22 | | ■ | 23 | 24 |
| 25 | | 26 | ■ | 27 | | 28 | ■ | |
| | ■ | 29 | 30 | ■ | 31 | | | |
| 32 | | | | | | ■ | ■ | |

**बाएं से दाएंः-**

2- बामनवाड़ा के पास भ.महावीर का तीर्थ....(4)
6- संगमदेव ने भ.....पर छःमाह तक उपसर्ग किये थे (3)
8- संकट से बचाने के लिये गुहार,प्रार्थना-त्राहि.... (2)
9- झांसी की रानी की सेना व क्रांतिकारियों की मदद के लिये भरपूर राजकोष देनेवाले जैन सुश्रावक शहीद-अम....बाठियां (1,2)
11-कर्नाटक के उडिपी जिले में 59 फीट के मान स्तंभ वाला नेमिप्रभु का तीर्थ- का ....(3)
13-जहां न पहुंचे रवि, तहां पहुंचे.... (2)
15-बड़ी दूर से चल कर आई हूं, दादा तेरे.... के लिए, एक फूल गुलाब का लाई हूं, चरणों में तेरे अर्पण के लिए (3)
17-हिंदी में आज, क-,रसों और उसके बाद वाले दिन को कहते है नरसौ (1,1)
18- बीस विहरमानजी में से एक का नाम है-ई....स्वामी (2)
19-मझधार में है नैया और प्रभुतू ही है-खे....र (3)
20-आठवें तीर्थकर के पिता का नाम- श्री म....न जी (2)
21-पार्श्व प्रभु के 108 तीर्थों में से एक सिरोही जिले के काछोली ग्राम में स्थित है, नाम है श्री क....पार्श्वनाथ (3)
23-नर हो, न नि....करो मन को, कुछ काम करो, कुछ काम करो, जग में रह कर कुछ नाम करो- (2) - मैथिलीशरण गुप्त
25-पाटण में कम्बोई ग्राम में स्थित पार्श्व प्रभु का तीर्थ.... हन पार्श्वनाथ (3)
27-पालनपुर में जन्मे अकबर प्रतिबोधक आचार्य श्री.... रिश्वरजी (2,1)
29-तेरहवें तीर्थकर का नाम श्री....लनाथ स्वामी (2)
31-वीरायतन के संस्थापक राष्ट्रसंत उपाध्याय अ.... (2,2)
32-चारों साधनाओं में से एक है योग, अन्य तीन हैः....(2,2,2)

## वर्ग पहेली क्रमांक-312 का परिणाम

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वि | श्रा | म | ■ | न | व | मी | ■ | घ |
| ■ | व | ■ | न | न्द | न | ■ | क्षा | र |
| ह | स्ति | ना | पु | ■ | ग | ल | प | थ |
| ण्डा | ■ | गौ | ■ | बू | ■ | ■ | ण | ■ |
| उ | द | र | ■ | क | ■ | सू | क | र |
| ■ | र्भा | ■ | वी | र | चं | द | ■ | क |
| श्री | व | त्स | ■ | ■ | द | र्श | न | म |
| म | ती | ■ | अ | र | ना | ■ | न्दा | ■ |
| ती | ■ | सा | र्थ | क | ■ | च्य | व | न |

**ऊपर से नीचेः-**

1- आयुर्वेद में भोजन के 3 भेद बताये है-सात्विक, राजसिक और.... (4)
2- महुवा में जन्मे, विश्व धर्म संसद में जैन धर्म का प्रतिनिधित्व भी किया श्री.... गांधी (4)
3- श्री पार्श्वनाथ भ.की माता का नाम-.... देवी (2)
4- सड़क बनाने में प्रयुक्त काला पदार्थ (3)
5- रतलाम जिले के रिंगनोद ग्राम स्थित नेमि प्रभु का तीर्थ.... थ (4)
7- पावापुरी निर्वाण भूमि है भ.महा....की (2)
10-भ.महावीर की बहन का नामः सु.... ना (2)
12-पार्श्व प्रभु के 108 तीर्थों में से एक भरुच शहर में है, नाम है- .... पार्श्वनाथ (4)
14-श्री शांतिनाथ भ.के पिताः श्री.... (4)
16-जैन धर्म का प्रमुख मंत्र है.... (4,2)
20-हिंदू महासभा के 3 संस्थापकों में से एक, महात्मा गांधी द्वारा उपाधि देने पर इनका यह नाम हुआ था- .... दन मोहन मालवीय (3,1)
22-भ.महावीर के 10 प्रमुख श्रावकों में से एक-शा.... पिता (2)
24-मृगावती कोशांबी के राजा.... की रानी थी (4)
26-न स्वेदं, न खेदं, न वर्ण, न मुद्रा।
चिदानन्द रुपं, न.... रागं (1,2)
28-बीस विहरमानजी में से एक है श्री.... प्रभ स्वामी (2)
30-समरो.... बड़ो नवकार है, ए तो चौदह पूरव नो सार है....(2)

## ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-313

**✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.**

**प्रश्न-प्रस्तुत प्रश्न अंताक्षरी पर आधारित है। पहले प्रश्न के उत्तर का अंतिम अक्षर, दूसरे प्रश्न के उत्तर का प्रथम अक्षर होगा।**

1- श्रेणीक राजा कौन सी नगरी के राजा थे ?

2- गुरुवर राजा के प्रतिरोधक के गुरु कौन थे ?

3- जो तत्वों में से एक तत्व का नाम लिखे ?

4- जिनशासन के प्रेमी जो बीसलदेव के जो मंत्री बने जिनके नाम ''व'' से प्रारंभित होता है ?

5- माया करके किसने अस्सी चौबीसी तक संसार बढ़ाया था ?

6- हेमचन्द्राचार्य ने किस विशिष्ट स्त्रोत की रचना की ?

7- केप्टन स्कोर्सबी ने पानी की एक बूंद में 36450 कौन से जीव देखे थे ?

8- बीस तीर्थकरों के निर्वाण से पवित्र बनी तीर्थस्थली कौन सी है बताईये ?

9- राजीमति ने किसको प्रतिबोध दिया था ?

10-राशियों में से एक राशि का नाम जो ''मि'' से प्रारंभित है ?

---

*✻ कपड़े बदलते है, मकान बदलते है पर मन जैसा है चलता है, उसे बदलने के भाव क्यों नहीं आते ?*

### आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता:-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं. 030001000331

IFSC Code ICIC0000300

**कोरोना के कारण उत्तर प्राप्त नही होने से एवं मई 2021 का अंक छप नही पाने से - वर्ग पहेली क्रमांक-311 -312 एवं ज्ञान गंगोत्री क्रमांक-311-312 के परिणाम निरस्त किये गये। क्षमा करें ✻ सम्पादक**

**ज्योति-** *जीवन को महिमाशाली बनाने के लिये सद्गुणों को अपनाना को अपनाना अत्यन्त आवश्यक है। सद्गुण हमारे भीतर उसी तरह विद्यमान है जैसे लकड़ी में अग्नि। आवश्यकता है उन्हें प्रदीप्त करने के लिए समुचित साधना की। घर्षण करने से लकड़ी में से आग निकलती है और चकमक पत्थर से भी घर्षण द्वारा ज्योति पैदा हो जाती है। जब लकड़ी या पत्थर जैसे निर्जीव पदार्थो से भी घर्षण द्वारा ज्योति पैदा की जा सकती है तो क्या साधना के द्वारा मनुष्य के हृदय में ज्ञान की ज्योति प्रदीप्त नहीं की जा सकती ! पुरुषार्थ के द्वारा साधना के मार्ग में हम जीवन को ऊपर उठा सकते है पतित व्यक्ति भी साधना के द्वारा कराल-पाप-पुन्ज से अपनी उन्नति कर गौरवगिरि का अधिवासी बन सकता है।*

**सूचना-** अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

**नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।**

**प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-6-2021 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक**

# पूज्यपाद जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी ने संयम के 66 वें वर्ष में प्रवेश किया

**✻ मुनिप्रवर श्रीपद्मकीर्तिसागरजी म.सा.को 91 वीं ओली का पारणा हुआ ✻ चार्तुमास देपालपुर में होगा।**

देपालपुर- सागर समुदाय के वचन सिद्ध, भोपावर महातीर्थ के प्रतिष्ठाचार्य पूज्यपाद श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा, मुनिश्री पद्म कीर्तिसागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में चैत्र नवपद ओली आराधना महोत्सव के साथ पूर्णाहुति हुई । अनेक शासन प्रभावक कार्यो की श्रृंखला के साथ आपका जन्मोत्सव कार्यक्रम 7 मई 2021 को भव्य रुप से आयोजित किया गया। अक्षय तृतीया दिनांक 15 मई को अपने संयम जीवन के 65 वर्ष पूर्ण कर 66 वर्ष में प्रवेश किया इसके साथ ही मुनिप्रवर श्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा.के द्वारा वर्धमान तप की 92 वीं ओली का पारणा भी तपोत्सव के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर संध के श्रावक-श्राविकाओं ने भी तप की अनुमोदनार्थ आयंबिल तप किया। श्रीसंध के द्वारा आगामी चातुमार्सिक आराधना के लिये जोरदार विनंती करने पर आपश्री ने जिनागमसेवी गच्छाधि पति पूज्यपाद आचार्य श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी म.सा के आदेश पर स्वीकृति प्रदान करने पर श्रीसंध के द्वारा गच्छाधि पतिश्री को अवगत कराने पर पूज्यपाद श्री ने स्वीकृति आदेश लिखित में प्रदान किया इससे श्रीसंध में हर्ष व्याप्त हो गया गया। अभी आपश्री कोरोना महामारी के कारण ने देपालपुर में ही विराजित है ।

# वागड़ नरेश जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागर सूरीजी का चार्तुमास उदयपुर होगा

**✻ महामांगलिक सीतामऊ में हुई।**

सीतामऊ - मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागर सूरीजी म.सा. के तीसरे सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा. अर्हम्‌रत्नसागरजी सा. आदि ठाणा की निश्रा में पूज्यश्री की महामांगलिक की आयोजन सीतामऊ में 12 मई को हुआ। यहां से आपश्री ने श्रीनागेश्वर महातीर्थ के लिये प्रस्थान किया है कोरोना से प्रभावित होने के कारण आगे के सब कार्यक्रम पर ब्रेक लग गया है। आगे भी परिस्थिति के अनुसार निर्णय लिया जायेगा। आपका चार्तुमास आयड उदयपुर पूर्व से सुनिश्चित है। आप अभी श्री नागेश्वर महातीर्थ में विराजित है।

**किलपाक संघ में चार्तुमास** द वर्धमान तपोनिधि आचार्य भगवंत श्री नयचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा के स ाथ साध्वीवर्या पूज्य श्री दिव्ययशाश्रीजी म.सा.एवं दिव्यदर्शा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास किलपाक संघ के श्री मुनिसुव्र स्वामी जैन संघ में होगा।

## कालधर्म

✻ सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या श्री रम्यधर्मा श्रीजी म.सा. का कालधर्म बदनावर (म.प्र.) में 30 अप्रेल को हुआ।

✻ सागर समुदाय की पूज्य साध्वी श्री प्रहर्षिता म.सा. का 1 मई को रत्नत्रायी आराधना भवन, पालीताना में कालधर्म हुआ।

✻ पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री हेमप्रभसूरीजी म.सा. के समुदाय-वर्तीय साध्वी श्री आनंदश्रीजी की सुशिष्या साध्वी श्री कुसुमलता श्रीजी म.सा. (75) दीक्षा पर्याय (57) का 10 मई को कालधर्म सुमेरपुर में हो गया।

✻ सागर समुदाय आचार्य भगवंत श्री पुण्योदयसागरसूरीजी म.सा.का 13 मई को श्री महावीर पुरम् तीर्थ में काल धर्म हो गया। आपका दोपहर 2.25 बजे कालधर्म हुआ। आपश्री ज्योतिष्य विशारद वास्तुशिल्पी के विद्वान थे। सागर के पूज्य गच्छाधिपति रहे श्री मणिस्यसागर सूरीजी के आप सुशिष्य थे। श्री महावीर पुरम् तीर्थ के निर्माण में आपका बहुत योगदान था।

✻ खंभात में पूज्य आचार्यश्री पद्मयशसूरीजी म.सा. का कालधर्म हुआ।

✻ ॐकार तीर्थ संस्थापक आचार्यश्री पुण्यानंदसूरीजी म.सा.की संसारी भतीजी और श्री सिद्धिसूरी समुदाय के साध्वी श्री मुक्तिप्रभा श्रीजी का कालधर्म 11 मई को अहमदाबाद में हुआ।

✻ नाकोड़ा तीर्थोद्धारक आचार्य श्री हिमाचलसूरीजी म.सा.के समुदाय के साध्वी श्री शीलयशा श्रीजी का 13 मई को सोमेश्वर में कालधर्म हुआ।

# शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

# युवा जैनाचार्यश्री का नागेश्वर महातीर्थ से कोटा होते हुवे जयपुर की ओर विहार:चार्तुमास निर्णय जयपुर में

**✻ श्रीनागेश्वर तीर्थ में वर्चुयली महामांगलिक हुई। ✻ श्री नाकोड़ा महातीर्थ में होने वाले चार्तुमास अभी अंतिम निर्णय होना बाकी।✻भगवंत श्रीदेवचंदसागरसूरीजी म.सा.उपाध्याय श्री वैराग्यरत्न सागरजी म.सा. आदि साधु भगवंत ठाणा - 15 का विहार**

**नागेश्वर**- गुरु नवरत्न कृपा पात्र, युवा हृदय सम्राट, महा मांगलिक प्रदाता परम पूज्य आ.देव श्री विश्वरत्न सागर सूरीश्वरजी महाराजा, प.पू. मुनिश्रीकीर्तिरत्नसागरजी म.सा., प.पू. मुनि श्री तीर्थरत्न सागरजी म.सा., प.पू. मुनि श्री उदयरत्न सागरजी म.सा. ,प.पू. मुनिश्री उत्तमरत्नसागरजी म.सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्ज्वलरत्नसागर जी म.सा.,प.पू.मुनि श्रीगंभीररत्न सागर जी म.सा., प.पू.मुनि प. पू. मुनि श्री रम्यरत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री लब्धि रत्नसागर जी म.सा.आदि ठाणा का मालवा में सुन्दर धर्म प्रभावना के साथ नागेश्वर महातीर्थ में विराजित रहे 28 अप्रेल को रामगंजमंडी से विहार कर युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी म.सा. का आगमन भी श्री नागेश्वर महातीर्थ में हो गया था।12 मई को वर्चुयली महामांगलिक का आयोजन हुआ। प्रत्यक्ष में श्रावक-श्राविका की उपस्थिति नहीं रही। आचार्य श्री मृदुरत्नसागर सूरीजी म. सा.आदि ठाणा का सीतामऊ से विहार कर श्री नागेश्वर महातीर्थ में आगमन हुआ था गुरु नवरत्न कृपापात्र, युवाहृदय सम्राट, महा मांगलिक प्रदाता परम पूज्य आ.देव श्री विश्वरत्न सागर सूरीश्वरजी महाराज का नागेश्वर महातीर्थ से कोटा होते हुवे जयपुर की ओर विहार 20 मई को हुआ चातुमार्सिक आराधना पर भी निर्णय नही हुआ है जयपुर में इस बारे में अंतिम निर्णय लिया जायेगा, विहार में आपके साथ आचार्य भगवंत श्रीदेवचंद सागरसूरीजी म.सा उपाध्याय श्री वैराग्य रत्नसागरजी म.सा..आदि साधु-साध्वीजी ठाणा - 15 है पूज्य आ.देव श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वर जी महाराजा के साथ चर्चा में विहार का निर्णय हुआ जयपुर पहुंचने के बाद यह भी संभावना है कि क्षेत्र अनुकुलता से उत्तर भारत के हिमाचल प्रातः के कागंडा आदि तीर्थो की यात्रा के साथ इस बार इसी क्षेत्र में चार्तुमास हो श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ महातीर्थ में चार्तुमास करने का निर्णय भी पेडिंग में है किन्तु कोरोना महामारी गंभीरता की स्थिति और सरकारी गाईड लाईन पर भी सब कुछ निर्भर करता है। चातुमार्सिक आराधना पर भी तो प्रश्न खड़ा हो गया है, आगे समय में क्या बदलाव होता है उसके अनुसार निर्णय होगा।

## गणिवर्य श्रीआनंदचंद्र सागरजी म.सा. उज्जैन में विराजित है

उज्जैन- बंधु बेलड़ी आचार्य भगवंत के गुरुकुल के चमकते श्रमण भगवंत परमात्मा की वाणी प्रभावना से सबको मोहित करनेवाले पूज्य गणिवर्य श्री आनंदचंद्र सागर जी म.सा. मुनि प्रवर श्री चारित्र चंद्रसागरजी म.सा. मुनिश्री उत्सवचंद्र सागरजी म.सा.एवं साध्वीवर्या श्री मेघवर्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 की निश्रा में उज्जैन में नवपद चैत्र ओली आराधना का भव्य आयोजन श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर था। परन्तु करोना के कारण सरकार की सक्ती से आराधना के आयोजन संभव नही हुआ। कोरोना महामारी के कारण एवं सरकारी गाईड लाईन के कारण आगे के सब कार्यक्रम स्थगित कर दिये गये है आगे समय में क्या बदलाव होता है उसके अनुसार निर्णय होगा।

## श्री नवअपूर्व शिष्य परिवार का विहार मांउड आबु की ओर - मुनिश्रीवज्ररत्नसागरजी का स्वास्थ्य ठीक है

पालीताना- पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्नसागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार श्री नवअपूर्व अमर कृपापात्र बंधु त्रिपठी मुनिप्रवर श्री आगम-प्रशम-वज्ररत्नसागरजी म.सा. ईउर में विराजित है युवा प्रवचनकार मुनिश्री वज्ररत्नसागरजी म.सा. की कोरोना की चपेट में आ जाने के बाद ईडर में ही स्थिरता रखे हुए है, यहां आपके स्वास्थ्य में सुधार हो गया है, चिंता वाली बात नहीं है, अभी पूर्ण स्वस्थ होने के बाद आपने मांउड आबु की ओर विहार किया है। आपका आगामी चार्तुमास ठाणा (मुंबई) में होने की संभावना है। पर कोरोनो की स्थिति पर भी सब कुछ निर्भर करता है। आगे समय में क्या बदलाव होता है उसके अनुसार निर्णय होगा।

# दादा के जिनालय की ध्वजा 31 मई को चढ़ाई गई : चढ़ावे हुए

पालीताना- शाश्वत तीर्थराज श्री सिद्धाचल महातीर्थ में दादाश्री आदिश्वर प्रभु के भव्य जिनालय की 490 वीं ध्वजा (1587) चढ़ाने के लिये 29 अक्टूबर को भव्य चढ़ावे पालीताना में भाताघर में हुए। दादा के देरासर के साथ ही राघण पगलियाजी रायणवृक्ष श्री पुंडरिक स्वामीजी देरासर में भी ध्वजा चढ़ाने के लिये चढ़ावे हुए। सेठ श्री आनंदजी कल्याण जी पेढ़ी के तत्वावधान में ध्वजा की बोलियां हुई। इसके साथ ही श्री शांतिनाथ परमात्मा के जिनालय में 18 अभिषेक का आयोजन भी किया गया। दादा की ध्वजा संवत् 2077 वैशाख वदी-6 (ज्येष्ठ वदी) दिनांक 31 मई, सोमवार को चढ़ाई जावेगी।

### 24 तीर्थकरों के निर्माण दिवस वर्ष 2021 में इन दिनांकों को आयेंगे

| श्री तीर्थंकर का नाम | दिनांक एवं वार | निर्वाण तिथि | निर्वाण क्षेत्र |
|---|---|---|---|
| श्री नमिनाथ | 10 मई,सोमवार | वैशाख वदी-14 | सम्मेदशिखरजी |
| श्री कुन्थुनाथ | 12 मई, बुधवार | वैशाख सुदी-1 | सम्मेदशिखरजी |
| श्री अभिनंदननाथ | 18 मई, मंगलवार | वैशाख सुदी-6 | सम्मेदशिखरजी |
| श्री शांतिनाथ | 9 जून, बुधवार | ज्येष्ठ वदी-14 | सम्मेदशिखरजी |
| श्री धर्मनाथ | 14 जून,सोमवार | ज्येष्ठ सुदी-4 | सम्मेदशिखरजी |
| श्री विमलनाथ | 2 जुलाई,शुक्रवार | आषाढ़ वदी-8 | सम्मेदशिखरजी |
| श्री नेमीनाथ | 16 जुलाई,शुक्रवार | आषाढ़ सुदी-7 | गिरनारपर्वतजी |
| श्री पार्श्वनाथ | 15 अगस्त,रविवार | सावन सुदी-7 | सम्मेदशिखरजी |
| श्री श्रेयांसनाथ | 22 अगस्त, रविवार | सावन सुदी-15 | सम्मेदशिखरजी |
| श्री पुष्पदंतनाथ | 14 सितंबर,मंगलवार | भादो सुदी-8 | सम्मेदशिखरजी |
| श्री वासुपूज्यजी | 19 सितंबर, रविवार | भादो सुदी-14 | चम्पापुरी |
| श्री शीतलनाथ | 13 अक्टूबर,बुधवार | आश्विनसुदी8 | सम्मेदशिखरजी |
| श्री महावीर स्वामी | 4 नवंबर, गुरुवार | कार्तिक वदी-30 | पावापुरीजी |

## 225 गुरु भगवंतों का एक साथ चार्तुमास

सूरत- भक्ति योगाचार्य आचार्य भगवंत श्री यशोविजयजी म.सा., शास्त्र संशोधक आचार्य श्री मुनिचंद सूरीश्वरजी म.सा., आचार्य श्री राजपुण्यसूरीश्वरजी म.सा., आचार्यश्री भाग्यैशविजय सूरीश्वरजी म.सा. तथा आचार्यश्री के समुदाय के 225 साधु-साध्वी भगवंतों का चार्तुमास एक साथ भीलड़ीयाजी तीर्थ में होगा। चार्तुमास प्रवेश आषाढ़ सुदी-7, 16 जुलाई को होगा। इसी रजा 23 मई को सूरत के श्री ऊँकार सूरी आराधना भवन में जुनाडीशा श्री संघ को दी गई।

**बुद्धिः- पानी को फ्रीज में रखते है तो वह बर्फ बन जाता है, पानी से भी बर्फ की कीमत ज्यादा है। दूध को चुल्हे पर चढ़ाते है और वह मावा बन जाता है, उसकी कीमत बढ़ जाती है। भूमि में एक बीज बोया जाता है और उसमें से एक विशाल वट वृक्ष खड़ा हो जाता है, जबकि आश्चर्य है कि मनुष्य को बुद्धि मिलती है और वह ज्यादा शैतान बन जाता है। आज गरीब या अनपढ़ व्यक्ति जितनी बेईमानी नहीं करता है, उससे भी ज्यादा बेईमानी ज्यादा पढ़ा-लिखा व्यक्ति करता है।**

# सुविशाल सागर के पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री की अभ्यर्थना में 1 लाख एकासणा का आयोजन देशभर में हुआ

**✻ सभी समुदाय के गच्छाधिपति का व्यापक समर्थन मिला।**

पूना- सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा अजात शत्रु पूज्य आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धन सागर सूरीश्वर जी म.सा.,पूज्य आचार्यदेव श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि-12 ठाणा की निश्रा में पूज्यपाद श्री का जन्म शताब्दि वर्ष चल रहा है। शासन स्थापना दिवस वैशाखी सुदी-11 दिनांक 23 मई को आपश्री की अभ्यर्थना में देशभर के श्रीसंघों के श्रावक-श्राविकाओं के साथ साधु-साध्वी भगवंतों ने भी एकासणा आराधना की। यह एक अद्‌भूत आयोजन बन गया था क्योंकि जैनत्व के सभी श्रमण समुदाय के गच्छाधिपतियों ने इसे व्यापक समर्थन देते हुए पत्र लिखा था। व्यापक समर्थन के कारण एकासणा की संख्या एक लाख से भी अधिक हो गई। पूज्यश्री अभी पूना में विराजित है।

# 36 दिन का श्री नागेश्वर से श्री नाकोड़ा महातीर्थ का संघ जैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरी निकालेंगे

उज्जैन -पूज्यपाद अभ्युदयसागर जी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर जी म.सा.,पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागर जी म.सा., मुनिश्री पावनमुक्ति सागर जी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में 36 दिवसीय श्री नागेश्वर से श्री नाकोड़ा महातीर्थ छःरि पालित यात्रा संघ निकालने पर योजना का काम चल रहा है। यह संघ दिसंबर 2021 में निकलकर जनवरी 2022 में नाकोड़ा तीर्थ पहुंचकर माल होगी। उज्जैन में चार्तुमास सम्पन्न कर आप मालवा के श्रीसंघों में शासन प्रभावना करत अभ्युदयपुरम् तीर्थ उज्जैन पहुंचे आगे की कार्ययोजना पर काम चल रहा है।

# मुनिश्री हेमेन्द्रसागरजी का कालधर्म हुआ

**पालीताना- सागर समुदाय के मुनिश्री हेमेन्द्रसागरजी म.सा. का 12 मई को पालीताना आगम मंदिर में कालधर्म हो गया। आप 8 मई को पूना से पालीताना पहुंचे थे, वर्षीतप की आराधना, छट्‌ठ से चल रही थी। आखातीज पर पारणा पालीताना करने की भावना से आप पधारे थे। 12 मई कालधर्म के दिन आपको उपवास था। पालकी शाम को निकली। आप आचार्य श्री प्रमोदसागरसूरीजी के सुशिष्य थे, श्री शत्रुंजय महातीर्थ की आपने 2700 यात्रा की थी।**

## चार्तुमास.... चार्तुमास....

✻ जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, मरुधररत्न पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का वि.सं. 2077 का चार्तुमास श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक आराधक संघ बीजापुर (विजयापुर) (कर्णाटक) में निश्चित हुआ है।

✻ पूज्य आचार्यश्री दीक्षा दानेश्वरी श्री गुणरत्नसूरीजी म.सा. के सुशिष्य आचार्यश्री रश्मिरत्नसूरीजी म.सा.आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास अहमदाबाद के श्री साबरमती जैन संघ में होगा। अप्रेल के अंतिम सप्ताह में सूरत में आपकी निश्रा में सामुहिक दीक्षा हुई। 2 मई को दो बहनों की दीक्षा हुई, 3 मई को सूरत में दो गणि पदवी मुनिश्री अतिरत्न एवं मुनिश्री देवरत्नविजयजी की हुई। 9 मई को सूरत में पाल में भी दीक्षा होगी। 15 मई को वेगु में 5 साधु-साध्वीजी को वर्षीतप पारणा होगा एवं 19 मई को वेसु में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ। 22 मई को उमरा में रैवतभाई की दीक्षा हुई।

✻ बारामती- पूज्य साध्वीवर्या श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वीवर्या श्री अर्चितगुणाश्री म.सा. आदि ठाणा-8 का मंगलमय चार्तुमास बारामती जैन श्री संघ में होने जा रहा है। आप अप्रेल के अंतिम सप्ताह तक कात्राज तीर्थ पूना में विराजमान रहे।

## अनुयोगाचार्यश्री का चार्तुमास

देवास- अनुयोगाचार्य श्री वीररत्न विजयजी म.सा. का आगामी चार्तुमास श्री चंद्रप्रभ स्वामी श्री संघ के अंतर्गत ओयसिस कालोनी इन्दौर में होगा।

# कोरोना के कुप्रभाव से धर्माराधना-दर्शन-वंदन-पूजन से आराधक बुरी तरह प्रभावित हुए

**✻ अनेक स्थानों पर ओली आराधना स्थगित करना पड़ी। ✻ महोत्सव तीर्थयात्रा भी प्रभावित हुई। वर्षीतप पारणा घर में हुआ ✻ चातुर्मासिक आराधना पर भी प्रश्नचिन्ह लगा।✻ अनेक साधु साध्वीजी एवं श्रावक श्राविका का जीवन कोरोना के कारण पूर्ण हुआ।✻स्थिति अभी भी विकट है सावधान रहे।**

उज्जैन- विगत एक वर्ष से अधिक समय से फैली संक्रमक बीमारी कोरोना ने सम्पूर्ण विश्व की व्यवस्थाओं को प्रभावित कर रखा दिया। सामाजिक आर्थिक, धार्मिक तनाबना छिन्न-भिन्न हो गया है। लाखों की संख्या में लोग काल के गाल में समा गया जिससे पारिवारिक संकट पैदा हो गये। अनेक परिवार पर घोर संकट की गंभीर घड़ी आ गई है। प्रकृति के निर्णय को रोकने के सभी उपाय निष्फल सिद्ध हो रहे है। यह कहानी किसी एक जात संप्रदाय की न होकर संपूर्ण मानव जाति की है। सभी अनेक कारणों से प्रभावित हुए है। अभी वर्तमान में इसका कोई पक्का समाधान भी दिखाई नहीं दे रहा है और न ही यह कहा जा सकता है कि इस कोरोना का कब और कैसे अंत होगा। न वैज्ञानिक और न ही ज्योतिष्य इस विषय में कुछ कह पा रहे है और न ही इसका कारण ढूंढ पा रहे हैं। प्रकृति पता नहीं किस बात का बदला मानव जाति से ले रही है। अनेक साधु साध्वीजी एवं श्रावक श्राविका का जीवन कोरोना के कारण पूर्ण हुआ।हमारे धार्मिक अनुष्ठान विधि विधान की बात करें तो यह सम्पूर्ण समय धार्मिक भावना को नुकसान पहुंचाने वाला रहा चातुर्मासिक आराधना तप, जप, महोत्सव, वर्षीतप, ओली आराधना सभी कोरोना की भेंट चढ़ गये फिर भी व्यक्तिगत स्तर पर धर्मिष्ठों ने अपनी धार्मिक भावना को बनाकर रखा घर परिवार में रहते हुए तप, जप पूजा, पाठ सब किसी न किसी रुप में चलते रहे है, एक बार फिर सामुहिक रुप से होनेवाले वर्षीतप, ओली जैसे आयोजन के साथ अनेक धर्म प्रसंगों पर रोक लग गई। छःरि पालित संघ, महोत्सव सब पर ब्रेक लग गया है। कोरोना से प्रभावित होने के आगे के कारण सब कार्यक्रम पर ब्रेक लग गया है। आगे भी परिस्थिति के अनुसार निर्णय लिया जायेगा। हमें यह उम्मीद करना है कि- मानव की धैर्य शीलता उसकी भावना के आगे यह कोरोना भी घुटने टेक देगा और एक बार फिर हम सब लोग शोक दुःख संकट से उभर कर सामान्य हो जायेंगे, हम सब की सामुहिक भावनाओं का परिणाम हमें शीघ्र मिलेगा यह विश्वास हमें जीवित रखना है। सावधान तो रहना ही है।

# भाई हितेश खोना गणिवर्य आदर्शरत्नसागरजी का शिष्यत्व ग्रहण कर सागर समुदाय के श्रमण बने

### प्रथम चार्तुमास दिल्ली के मंडार संघ में होगा

**हरिद्वार** - आचार्य भगवंत श्री मृदु रत्नसागर सूरीजी महाराज के सुशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री सुमति नाथ परमात्मा के परिसर नई दिल्ली के श्रीमंडार जैन श्वेतांबर संघ में होगा इसकी स्वीकृति विगत दिनों संघ की चार्तुमास विनंती पर दी गई।साध्वीवर्या अमितगुणा श्रीजी म.सा. की प्रशिष्या साध्वी श्री स्नेहझराश्रीजी का चार्तुमास भी मंडार संघ में होगा। गणिश्री की महामांगलिक 12 मई को गंगा तट के किनारे श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन मंदिर परिसर में हुई। मुनिश्री समकित रत्नसागरजी म.सा.के वर्षीतप पारणा पर त्रिदिवसीय तप महोत्सव का आयोजन किया गया15 मई को आपका पारणा हुआ। सुश्रावक उच्चशिक्षा ,उच्चपद पर कार्य करने वाले श्री हितेश भाई खोना को संसार की असारता को जान आपने सब कुछ मोह माया का त्याग करते है, श्री महावीरस्वामीजी के श्रमण समुदाय में दीक्षित होने का संकल्प लिया है। श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर परिसर हरिद्वार में ज्येष्ठ वदी-5, 30 मई को मुमुक्षु हितेशभाई खोना की दीक्षा सम्पन्न हुई। दीक्षा महोत्सव के आयोजन 28 मई से आरंभ हुवे। 28 मई को छाब भरने, मेंहदी-सांझी के आयोजन के साथ श्री सिद्ध चक्र महापूजन भी पढ़ाई गई। 29 मई को वर्षीदान का भव्य वरघोड़ा निकला साथ ही मुमुक्षु का अंतिम वायणा तथा रात्री में विदाई समारोह हुआ। 30 मई को प्रातःकाल गृहत्याग कर दीक्षा के लिये प्रस्थान कर दीक्षा मंडप में शुभ लग्नांशबेला में गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागरजी म.सा. के वरदहस्त रजोहरण ग्रहण कर दीक्षा स्वीकार करेंगे।

# जैनाचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा धार में ही विराजमान है

**✻सांवेर में 22 मई को होने वाली प्रतिष्ठा बाद में होगी**

धार- श्री अभ्युदय भक्तामर धाम महातीर्थ धार में पूज्यपाद वाणी के जादूगर और अनेक ग्रंथों के रचयिता पूज्य आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. 254 ओली के आराधक आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्न सागरसूरी जी म.सा.,मुनिश्री चैत्यरत्न सागर जी म.सा.,मुनिश्री ज्ञानेशरत्न सागरजी म. सा.,मुनिश्री गोयमसागर जी म.सा. आदि ठाणा की स्थिरता धार में ही बनी हुई है। आपकी निश्रा में सांवेर में होनेवाले श्री आदिनाथ परमात्मा के जिनालय की प्रतिष्ठा का आयोजन 22 मई को होने वाला था परन्तु कोरोना महामारी के कारण एवं सरकारी गाईड लाईनके कारण आगे के सब कार्यक्रम स्थगित कर दिये गये है आगे समय में क्या बदलाव होता है उसके अनुसार निर्णय होगा।

# जैनाचार्य श्री अशोकसागर सूरीजी का विहार गुजरात की ओर हुआ : चार्तुमास पालीताना में

भोपावर- मालवा के विभिन्न जैन श्रीसंघों में जबर्जस्त शासन प्रभावना करते हुए सिंह गर्जना के स्वामी सागर समुदाय के वरिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा पूज्य आचार्य श्री सौम्यचंद्र सागर सूरीजी, पूज्य आचार्य श्री विवेक चंद्रसागर सूरीजी म.सा.,पूज्य आचार्य श्री मतिचंद्रसागर सूरीजी म.सा.आदि ठाणा के साथ पूज्यपादश्रीने गुजरात की ओर विहार किया है। आपश्री का सूरत कतारगांव होते हुए पालीताना की ओर विहार करेंगे। आपश्री आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास जम्बुद्वीप परिसर पालीताना में सुनिश्चित हुआ है।

# श्री नीति सूरी समुदाय में 100 ओली आराधना का ढंका बजा

सूरत- कतार गांव के श्रीसंघ नीति सूरी समुदाय के गच्छाधिपति श्री हेमप्रभसूरीजी महाराजा के साथ 200 साधु-साध्वी भगवंत की अमृत निश्रा में पूज्य साध्वी भगवंत विनीतपूर्णा श्रीजी म.सा. को 100 ओलीजी और साध्वी वैराग्यदर्शिताश्रीजी म.सा. को 100+21 ओली के साथ साध्वी श्री हितेशपूर्णा श्रीजी म.सा.को 83 वीं ओली पारणा प्रसंग पर शतावली महातपोत्सव का आयोजन किया गया। ओली का पारणा 9 मई को धूमधाम से कतारगांव सूरत में सम्पन्न हुआ।

## ओली महातप पारणा हुआ

करादिया- पूज्यपाद गच्छाधि-पति आचार्य भगवंत श्री कल्पतरु सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तीय साध्वीवर्या तप प्रभाविका श्री हंसकीर्ति श्रीजी म.सा. को 100+100+59 वीं वर्तमान तप ओली का पारणा 21 मई को हुआ।

## रुचिका माधुरी की दीक्षा 6 मई को हुई

हैदराबाद- पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री जिनमणिप्रभसागर सूरीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में कुमारी रुचिका सकलेचा एवं माधुरी कंकुचोपड़ा की भगवती प्रवज्या 6 मई को दादा के दरबार श्री शत्रुंजय महातीर्थ में होगी। इस निमित्त दोनों मुमुक्षु बहनों का वर्षीदान वरघोड़ा हैदराबाद में 28 मार्च को भव्य रुप से आयोजित किया गया। चैन्नई के श्री मोहन मनोज के द्वारा अंतिम बिदाई कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

## जासुद बहन दीक्षित हुए

जामनगर- मुमुक्षु जासुद बहन चन्द्रकांतभाई शाह (75) सिहोर निवासी की प्रवज्या 22 मई को पूज्यपाद जिनागमसेवी गच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी म.सा के आज्ञा से सम्पन्न हुई। दीक्षा पूज्य आचार्य भगवंत श्री पूर्णचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में हुई।

## 100 ओली पारणा हुआ

राजगृहीतीर्थ- पूज्य आचार्य भगवंत श्री अक्षयचंदसागरसूरीजी म.सा. की निश्रा में साध्वीवर्या श्री दिव्य-धर्मा श्रीजी म.सा. को वर्धमान तप की 100 वीं ओली का पारणा 28 मई को राजगृही तीर्थ (गुज.) में हुआ।

**✻ हाथ का वजन तो फिर कोई किसी का उठा लेगा परन्तु कर्मो का वजन तो स्वयं को ही उठाना होगा।**

**✻ सागर समुदाय में होनेवाले दीक्षा महोत्सव ✻**

✻ मुमुक्षु भाई हितेश दीक्षा महोत्सव 30 मई हरिद्वार(उ.प्र)

## श्री अमीझरा पार्श्वनाथ प्रभु के भव्य जिनप्रसाद का नवनिर्माण कोरोना के कारण स्थगित

अमीझरा- दादाश्री अमीझरा पार्श्व प्रभु के भव्य जिनप्रसाद निर्माण हेतु भट्ट शिलारोपण के लिये पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीश्वर जी म.सा. ने 8 मई का मंगल मुर्हूत प्रदान किया था। प्रथम ढांकना विधान के साथ भट्ट शिलारोपण का कार्य विजय मुर्हूत 12.39 बजे सम्पन्न होना था। प्रारंभिक तौर पर 21 लाख का नाम मुर्हूत के लिये आ भी गया था किन्तु कोरोना महामारी के कारण एवं सरकारी गाईड लाईनके कारण सब कार्यक्रम को स्थगित कर दिया गया है आगे समय में क्या बदलाव होता है उसके अनुसार निर्णय होगा। मैनेजिंग ट्रस्टी श्री प्रकाशजी सिरोही ने बतलाया कि-मकराना में मंदिरजी के लिये संगमरमर के लिये एग्रीमेंट कर लिया गया अध्यक्ष श्री रमेशजी मुथा मकराना गये थे साथ ही मंदिरजी का नक्क्षा भी फाईनल हो गया है। श्री रमेशजी मुथा ने कहा कि-मंदिरजी निर्माण के सभी नक्क्षे निश्चित कर देवद्रव्य के लिये अपील तैयार की जावे तथा दादाश्री अमीझरा पार्श्वप्रभु और तीर्थ के सभी देवी-देवताओं से विनंती कर निर्माण की आज्ञा भी प्राप्त करें और शीघ्र ही निर्माण सम्पन्न हो ऐसा आग्रह भी करें।

## अभिनव शत्रुंजयधाम की अंजन-प्रतिष्ठा जनवरी 2022 में होगी

रानी- श्री जैनाचार्य श्री नेमी सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवश्री सुशीलसूरीजी म.सा. के सुशिष्य आचार्यदेव श्री जिनोत्तमसूरीजी म.सा. के दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर रानी के सुशील विहारधाम अभिनव शत्रुंजय धाम का नव निर्माण किया गया है। तीर्थ का अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव 15 से 24 जनवरी 2022 तक आयोजित होगा। प्रतिष्ठा 22 जनवरी को सम्पन्न होगी। प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये 153 चढ़ावों का लाभ लेने के लिये 1 लाख 8 हजार का नकरा तैय किया गया जिसका ड्रॉ निकालकर विजेता लाभ दिया जायेगा। ड्रॉ 26 फरवरी 2021 को श्री अष्टापद तीर्थ सुशील विहार रानी में निकाले जायेंगे।

## विधिकारक संजयभाई मालानी मुनिश्री सिद्धाचलविजयजी बने : धर्मपत्नी, पुत्री और पुत्र के साथ दीक्षित हुए

पालीताना- चढ़ाई द्वीप में पूज्य आचार्य भगवंत श्री हार्दिकरत्न सूरीश्वरजी म.सा. एवं साध्वी श्री मोक्षप्रियाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में विधिकारक भाई संजय झालानी ने पत्नी, पुत्र और पुत्री के साथ 20 मई को दीक्षा ग्रहण कर परमात्मा श्री महावीर का पंथ स्वीकार किया। संयमभाई अब मुनि श्री सिद्धाचलविजयजी, विधान भाई-विमलाचलविजयजी, नयना बहन साध्वी- चंदनप्रियाश्रीजी एवं वाचनाकुमारी- साध्वी वंदनप्रिया श्रीजी कहलायेंगे।

## कालधर्म

✻ गच्छाधिपति श्री विजय धर्म-धुरंधरसूरीजी की आज्ञानुवर्तीय साध्वी श्री ज्योतिपूर्णा श्रीजी म.सा. का 16 मई को प्रातः पालीताना में कालधर्म हो गया।

✻ श्री नेमिसूरीश्वरजी समुदाय के मुनिश्री विद्याचंद्रविजयजी म.सा. का कालधर्म कोल्हापुर (महा.) में हुआ।

✻ वल्लभ समुदाय के पूज्यपाद गच्छाधिपति के आज्ञानुवर्तीय मुनिश्री हेमचंद्रविजयजी म.सा. का राजकोट में हृदयगति रुकने से 19 मई को कालधर्म हो गया।

✻ सागर समुदाय की साध्वीवर्या कल्पता श्रीजी म.सा.की प्रशिष्या साध्वी श्री सुसंघमिता श्रीजी म.सा. का सागर श्रमवी विहार आगम मंदिर पालीताना में 19 मई को कालधर्म हो गया।

✻ ससागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री मनोहर इन्दुश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री कारुण्योदया श्रीजी म.सा. (91) दीक्षा पर्याय (70) का 21 मई को मुंबई के बेलापुर में कालधर्म हुआ। शाम को पालकी निकली।

✻ पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी के सुशिष्य मुनिश्री भद्रयशविजयजी म.सा. का गोरे गांव जवाहरनगर मुंबई में 22 मई को कालधर्म हुआ।

*✻ जब रेत पर रेत की परत आती जाती है और उस पर पानी पड़ता रहता है वह चट्टान का रुप ले लेती है वैसे ही जिन संस्कारों को हम जीते रहते हैं वे दृढ़ बन जाते हैं।*

## शासन स्थापना दिवस पर नवकार परिवार के द्वारा 68000 सामायिक का आयोजन

इन्दौर- उज्जैन- बंधु बेलड़ी आचार्य भगवंत के गुरुकुल के चमकते श्रमण भगवंत परमात्मा की वाणी प्रभावना से सबको मोहित करने वाले पूज्य गणिवर्य श्री आनंदचंद्र सागर जी म.सा. मुनि प्रवर श्री चारित्र चंद्रसागरजी म.सा. मुनिश्री उत्सवचंद्र सागरजी म.सा.आदि ठाणा के द्वारा अनुप्रेरित संस्था श्री नवकार परिवार इन्दौर के द्वारा 68000 सामायिक का आयोजन शासन स्थापना दिवस वैशाख सुदी-11 दिनांक 23 मई को किया गया। सामायिक का आयोजन प्रातः 9 बजे किया गया था। आराधक के द्वारा की गई सामायिक के लिये ऑनलाईन पंजीकरण की व्यवस्था की गई थी जिससे सामायिक करने वालों की वास्तविक संख्या ज्ञात हो सके। यह आयोजन पूर्ण रुप से सफल रहा। सामायिक के आयोजक श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ श्री संघ दामोदर नगर रहे।

## सरस्वती पुत्र जैनाचार्य श्री रत्नसुन्दरसूरीजी ब्रीचकेण्डी अस्पताल में भर्ती के बाद स्वास्थ्य में तेजी से सुधार हुआ

मुंबई- सरस्वती पुत्र पूज्यपाद आचार्य भगवंत के साथ गुरुकुल के 13 साधु भगवंत कोरोना से प्रभावित हो गये थे पूज्यश्री को ब्रीचकेण्डी अस्पताल में भर्ती करवाया गया था जहां समाचार लिखाने तक आपश्री के स्वास्थ्य में तेजी से सुधार हो रहा था अब पूज्य आचार्यश्री स्वस्थ होकर 18 मई को अस्पताल से डिस्चार्ज हुए है। आपश्री अभी मुंबई में ही विराजित है। अन्य सभी साधु भगवंत भी स्वास्थ्य लाभ ले रहे है चिंता की कोई बात नहीं है। सम्पूर्ण रुप से स्वस्थ होने तक सभी कार्यक्रम शासकीय गाईड लांईस के अनुसार पूर्ण रुप से स्थगित रहेंगे। आगे के सभी निर्णय परिस्थिति की अनुकुलता के अनुसार किये जायेंगे।

## पूज्यपाद गच्छाधिपति का चार्तुमास मुंबई में

सूरत- सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा अजात शत्रु पूज्य आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धन सागर सूरीश्वरजी म.सा., पूज्य आचार्य देव श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि-12 ठाणा का आगामी चार्तुमास काला चौकी, मुंबई में होगा।

## दहाणु में वर्षीतप पारणा हुए

दहाणु- गच्छाधिपति श्री ऋषभचंद्र विजयजी म.सा. के सुशिष्य मुनि श्री पीयुषचंदविजय की प्रेरणा से यहां वर्षीतप पारणा प्रसंग पर त्रिदिवसीय आयोजन किया गया। 13 से 15 मई तक हुए आयोजन में पंच कल्याणक आदिनाथ पंच कल्याणक पूजन हुए। 15 मई को श्री मोहनखेड़ा गुरुधाम दहाणु में पारणा हुए।

## अकोला में चार्तुमास

मुंबई- पूज्य आचार्य भगवंत राष्ट्रसंत श्री चन्द्राननसागरसूरीजी म.सा. के सुशिष्य पूज्य आचार्य भगवंत श्री गुणचंदसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास अकोला जैन श्रीसंघ श्री आदिनाथदादा की छत्रछाया में होगा।

## देशभर के जैन श्री संघों में वर्षीतप आराधकों का पारणा अक्षय तृतीय पर 15 मई को शातापूर्वक हुआ

**✲ इस वर्ष भी आराधना कोरोना महामारी से प्रभावित रही।**

उज्जैन- परमात्मा श्री आदिनाथ प्रभु की तपस्या के अनुमोदनार्थ होने वाली वर्षीतप की आराधना इस बार फिर से कोरोना से प्रभावित हुई। हजारों तपस्वियों द्वारा की गई आराधना बगैर किसी तपोत्सव गाजे-बाजे के 15 मई को अक्षय तृतीया पर पूर्ण हो गई। अनेक साधु-साध्वी भगवंतों को भी वर्षीतप का पारणा सादगीपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। विगत वर्ष भी यही स्थिति रही थी। इस वर्ष प्रारंभ हुए वर्षीतप के तपस्वियों की आराधना चल रही है। कई तपस्वी दो वर्षीतप संलग्न करते है ऐसी मान्यता है कि दो वर्षीतप करना चाहिये।

**सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के मुनिश्री तत्व रत्न सागरजी म.सा. को संलग्न 20 वें वर्षीतप का पारणा हुआ।**

# हमारे तीज-त्यौहार

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1- | ज्येष्ठ सुदी-10 | रविवार | 20-6-2021 | पू.आगमोद्धारकश्री का गणिपद वि.सं. 1960 (अहमदाबाद) |
| 2- | ज्येष्ठ सुदी-11 | सोमवार | 21-6-2021 | आद्रा न क्षत्र आरंभ |
| 3- | आषाढ़ वदी-4 | सोमवार | 28-6-2021 | श्री आदिनाथ दादा का च्वयन कल्याणक |

**पंचक :-**

**आरम्भः-** ज्येष्ठ वदी-7, मंगलवार, दिनांक 1-6-2021, समय-सुबह 04.00 बजे
**समाप्तः-** ज्येष्ठ वदी-10, शनिवार, दिनांक 5-6-2021, समय-रात्री 11.29 बजे

* * *

**आरम्भः-** आषाढ़ वदी-4, सोमवार, दिनांक 28-6-2021, समय-दोप. 01.20 बजे
**समाप्तः-** आषाढ़ वदी-9, शनिवार, दिनांक 03-7-2021, समय-सुबह 06.15 बजे

**पुष्प नक्षत्र :-**

**आरम्भः-** ज्येष्ठ सुदी-3, रविवार, दिनांक 13-6-2021, समय-शाम 07.01 बजे
**समाप्तः-** ज्येष्ठ सुदी-4, सोमवार, दिनांक 14-6-2021, समय-शाम 08.37 बजे

## कर्मों का फल

यदि मनुष्य के हाथ-पैर और शरीर में धूल की मलिनता होती है तो उसके निवारण के लिये उसे जल से धो लेना उचित है। यदि कपड़ा मलिन हो जाए तो उसे साबुन लगाकर धोने से साफ हो जायेगा। किन्तु पापों के प्रभाव से यदि मति भ्रष्ट हो जाए तो उसे शुद्ध करने का उपाय प्रेम पूर्वक प्रभु के नाम का जाप करना ही है। प्रभु का नाम जप कर असंख्य पापी पापरहित हो, पुण्यवान हो गये। प्राणी के पाप-पुण्य उसके ही उद्यम का फल है जिसे उसे अपने आप ही भोगना पड़ता है।

## सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

**जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।**

**प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।**

**आगमोद्धारक का आगामी अंक जुलाई 2021 ''चार्तुमास विशेषांक'' होगा। आपकी रचनाएं भेजिए।**

## सादर आमंत्रण

**✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।**

**✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।**

**✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।**

**✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।**

**- सम्पादक**

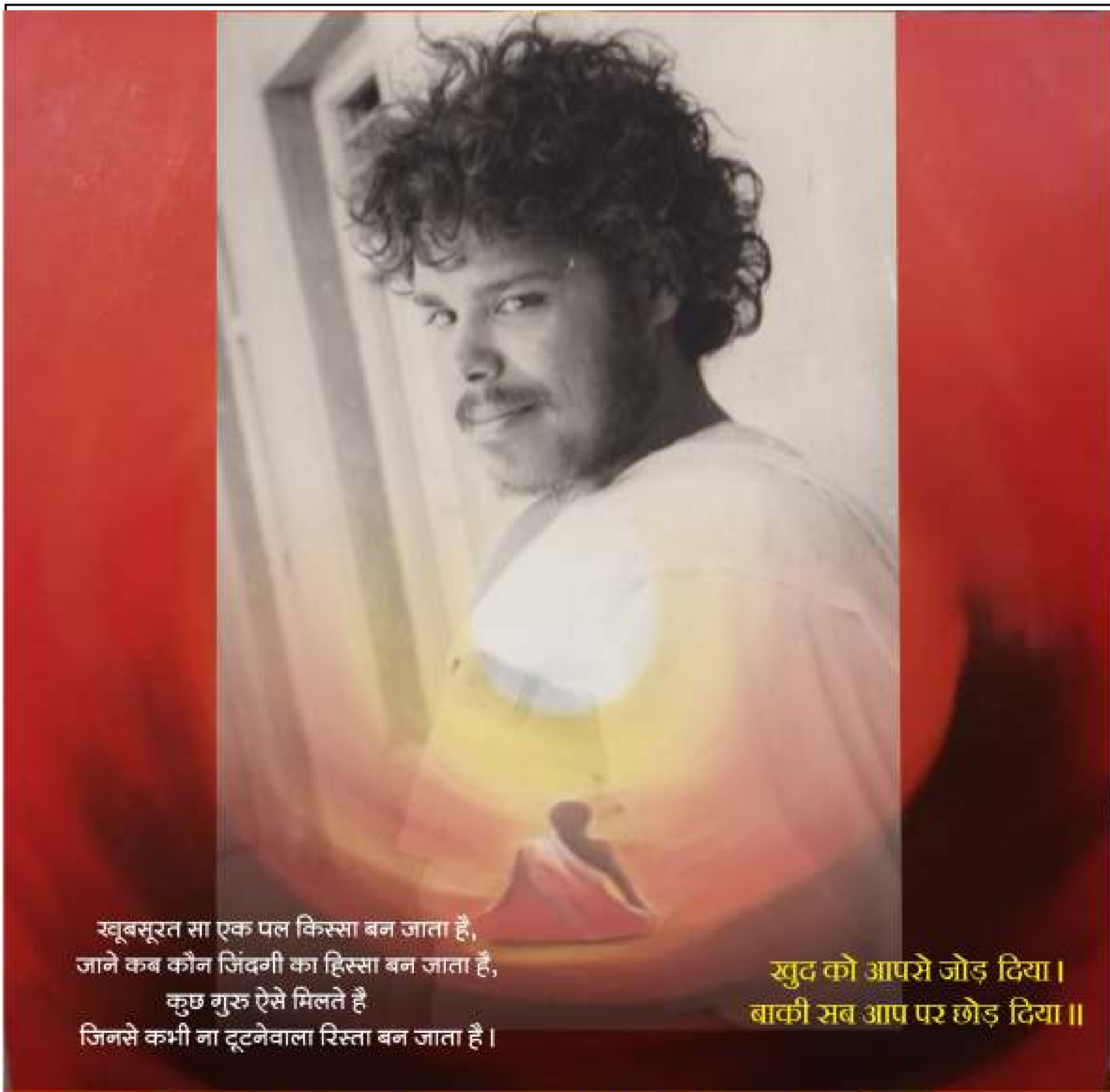


वर्ष-26 वैशाख-ज्येष्ठ जून 2021 अंक-6 प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/39/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एल.डी. 08/2021-2023

बुक पोस्ट

प्रति,
श्रीमान् ............................................
............................................
............................................

स्टाम्प टिकिट

प्राप्त न होने पर कृपया लौटावें-
डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एस.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स,
285, एम.जी. रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897